



PL52R
C9

P152R
C9

2752

Jivram Shastri
Dhatumanjari

2752

❀❀❀❀❀

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

[illegible]

RI JAGADGURU VISHWÁRADHYA
NANA SIMHASAN JNÂNAMANDIR
LIBRARY.

Jangamwadi Math, VARANASI,

Acc. No. ~~242~~.....

2752

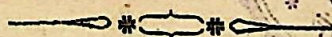
धातुमञ्जरी

प्राचीनैः संगृहीता

रैक (रायकवाल) लल्लुरामतनुजमुषा

जीवरामशास्त्रिणा

संशोधिता ।



इयं च

पण्डित ज्येष्ठाराम मुकुन्दजी शर्मणा

प्रकाशिता

स्था० कालिकादेवी रोड नं. ३५३ सवेरवाग, मुंबई

संवत् १९९१ सन् १८९९

मौल्य रु. १-०-०.

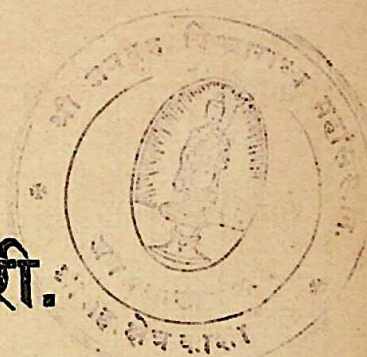
P152 R
C9

इदं पुस्तकं बडोदा
पत्तनस्थ नूतनविलासयन्त्रालये मुद्रितम्.

SRI JAGADGURU VISHWARADHWA
JNANA SIMHASANA JNANAMANDIR
LIBRARY

Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 2752

श्री. धातुमञ्जरी.



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अक	१	कुटिलायां गतौ	अकति	म
अक	१	लक्षणे	अङ्कतेवृषं	इ ङ
अक	१०	लक्षणे	अङ्कयति	क इ
अङ्क	१०	लक्षणे पदे च	अङ्कयति	क त
अक्ष	१	संघाते (त) व्याप्तौ	अक्षति धनं वैश्यः	ऊ
अक्ष	९	व्याप्तिसंहत्योः	अक्ष्णोति	न ऊ
अग	१	कुटिलायां गतौ	अगति सर्पः	म
अग	१	गतौ	अङ्कुति	इ
अगद	११	नीरोगत्वे	अगद्यति रोगिणां भिषक्	ट
अङ्क	१०	लक्षणे	अङ्कयति	क त
अघ	१०	पापकरणे	अघयति लुब्धः	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अघ {	१	गत्याक्षेपे (अथवा) गतिनिन्दारभजवेषु	अंघतेमृगः	इ-ङ
अच	१	पूजने	अञ्जति (वा) अचते	अ-इ
अच	१	गतिपूजनयोः	अञ्जति कृष्णम्	उ इ
अञ्ज	१०	व्यक्तायां वाचि	अञ्जयति	क
अञ्ज	१	स्लेष्टोक्तौ	अञ्जति	उ
अञ्ज	१	गतिपूजनयोः	अञ्जति (वा) अञ्जते	अ उ
अञ्ज	१०	विशेषणे	अञ्जयति	उ क
अछ	१	आयामे	अच्छति	इ
अज	१	गतौ (त) क्षेपे	अजति	अजः
अज	१०	भासि	अञ्जयति	क इ
अज	७	अक्षणकान्तिगतिषु	व्यनक्तिविद्यांसाधुः—अ- म्यनक्तितैलेनांगं.	ध उ जि
अट	१	गतौ	अटति	पर्यटनं
अट्ट	१	अतिक्रमे	अट्टते विप्रं यवनः	ङ
अट्ट	१०	अनादरे	अट्टयति	अट्टः
अठ	१	गतौ	अठति	
अठ	१	गतौ	अण्ठते	इ ङ
अड	९	व्यापने	अड्ढोति	न र
अड	१	उद्यमे	अडति धनाय	
अड्ड	१	अभियोगे	अड्डति ज्ञानं मुनिः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अण	१	शब्दे	अणति	
अण	४	प्राणने	अण्यते	य ड
अत	१	सातत्यगमने	अतति लोकं हरिः आत्मन् आत्मा	
अत	१	बन्धने	अन्तति दुष्टं राजा	इ
अद	२	भक्षणे	आत्ति (वाअदति १) मो- दकं कृष्णः	ल औ
अद	१	बन्धने	अन्दति दुष्टं राजा	इ
अन	४	प्राणने	अन्यते क्लेशेन भिक्षुः	य ड
अन	२	प्राणने	अनिति प्राणः	ल घ
अन्ध	१०	दृक्क्षये	अन्धयति-अन्धः धा-धं.	क त
अव	१	शब्दे	अंबते । शिशुः	ड इ
अम्बर	११	संभरणे	अंबयति यो पितं प्रियः	ट
अभ	१	शब्दे	अम्भते अम्भः	ड इ
अभ्र	१	गतौ	अभ्रति अभ्रं	
अम	१	गतिभजनशब्देषु.	अमति	
अम	१०	रोगे	अमयति	
अम्ब	१	गतौ	अम्बति	
अय	१	गतौ	अयते-अयस्	ड
अरर	११	आराकर्माणि	अरयति रथकारो रथाय	ट
अर्क	१०	स्तवने	अर्कयति अर्कः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अर्घ {	१	हिंसायां (अथवा) मूल्ये	अर्घति	अर्घः
अर्च	१०	पूजायां	अर्चयते (तथा) अर्चयति	क ड
अर्च	१	पूजायां	अर्चते (तथा) अर्चति	ड
अर्ज	१०	प्रयत्ने (त) सं- स्कारे	अर्जयति धनं उपार्जनं	क
अर्ज	१	अर्जने	अर्जति धनं उपार्जनं	
अर्थ	१०	याचने	अर्थयते याचकोऽर्थ- अर्थ- ना अर्थः	क त ड
अर्ह	१	हिंसायां	अर्हति (वा) अर्हते अ- र्हयति अर्हते	ज
अर्ह {	१	पीडागतियाचनेषु	रक्षःसहस्राणिचतुर्दशा- र्दीत् अर्हति तीर्थं यतिः श- रद्घनं नार्हति चातकोपि	
अर्ह	१०	हिंसायां	अर्हयति (वा) अर्हयते	क ज
अर्ब्ब	१	हिंसायां गतौ च	अर्ब्बति	
अर्ब्ब	१	हिंसायां	अर्ब्बति	
अर्ह	१	योग्यत्वपूजनयोः	अर्हति	
अर्ह	१०	पूजायां	अर्हयति—अर्हणा	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अल	१	भूषणपर्याप्तिवार- णेषु	अलति (वा, अलते) के- शं माल्येन अलति कंसाय कृष्णःअलतिचोरं राजा	ज
अव	१	पालने (त) प्री- णने	अवति	
अवधीर	१०	अवज्ञायां	अवधीरयति	क त
अश	९	व्याप्तौ (त) सं- हतौ	अश्नुते विश्वं हरिः	न ऊ ऊ
अश	९	भोजने	अश्नाति	ग
अंशः	१०	समाधाते	अंशयति द्रव्यं भ्रातृवर्गः अंश	क त
अष	१	दीप्तिगतिग्रहेषु	अषति	
अप्त	१	दीप्त्यादानयोः	वासुदेवं परित्यज्य यो- ऽन्यदेवमुपासति (वा) उपासते	ज
असू	११	उपतापे	असूयति	ट
अस्	११	उपतापे	अस्यति	ट
असू	११	उपतापे	असूयति (वा) असूयते	व ट
अस	२	भुवि	अस्ति हरिः	ल
अस	४	क्षेपणे	अस्यति शरं शूरः अस्त्रं न्यासः	य ऊ इ र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अंस	१०	समाधाते	(यथांशः प्रथमागतः)	क त
अह	१०	भासे	अंहयति	क इ
अह	१	गतौ	अंहते	ङ इ
आछ	१	आयाप्ते	आछति चरणं वामनः	इ
आंदोल	१०	आंदोलने	आंदोलयति	क त
आप	१	लंभने	आपति	लृ
आप	१०	लंभने	आपयति धनं जनः	क लृ
आप	९	व्याप्तौ	आप्नोति भुवनं विष्णुः	न लृ
आम	१०	रोगे	आमयति	क
आशास	२	इच्छायां	मोक्षमाशास्ते मुनिः	उ
आस	२	उपवेशने	आस्तेगृहे	ल ङ जि
इ	२	गतौ	एति पथिकः आय	ल
इ	२	अध्ययने	वेदमधीते शिशुः	ल ङ
इ	२	अधिउपसर्गे स्मरणे	अध्येति गोकुलं कृष्णः	ल
इ	१०	अधिउपसर्गे स्मृत्यां	अध्यापयति	क
इख	१	गतौ	एखति	
इख	१	गतौ	इंखति	इ
इग	१	गतौ	एगति	
इग	१	गतौ	इंगति	इ
इट	१	गतौ	एटति	
इद	१	परमैश्वर्ये	इन्दति इन्दः इन्दुः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
इध	७	दीप्तौ	इंधे वह्निरिंधनेन	न ड ई मि
इभ	१	संघाते	इंभयते	क ङ इ
इर	११	इर्ष्यायां	ईर्ष्यति (वा) ईर्ष्यते	ज ढ इ
इरज	११	इर्ष्यायां	इरज्यति	ट
इरस्	११	ईर्ष्यायां	इरस्यति	ट
इल	१०	प्रेरणे	प्रेलयति इला	क
इल	६	गतौ (त) क्षये	इलति पांथः एलिष्यति	श
		क्षेपे	इला एला	
इला	११	विलासे	इलायति	ट
इव	१	व्याप्तौ	इन्वति विश्वं विष्णुः	इ
इष	४	गतौ	इष्यति	
इष	६	वांछायां	हरिभक्तिमिच्छतिविप्रः	श
			इच्छा	
इष	९	आभिक्षण्ये	इष्णात्यन्नं शिशुः अन्वे-	ग
			षणं	
ई	४	गतौ	ईयते	ङ
ई	२	{ कान्ति गतिव्याप्ति	इति (इत्यादि)	ळ
		{ क्षेपप्रजनखादनेषु		
ईक्ष	१	दर्शने	{ न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्ष	
			{ ते निरीक्षणं निरीक्षि-	ङ
			{ प्यामि	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ईक्ष्य	१	ईर्ष्यायां	ईक्ष्याते	
ईख	१	गतौ	ईखति	इ
ईज	१	गतौ	ईजते	इ ङ
ईज	१	{ गतौ (तथा) कु- त्सायां	ईजति (वा) ईजते	ई अ
ईड	१०	स्तवने	ईडयति	क
ईड	२	स्तुतौ	ईष्टेहरिंविप्रः	ल
ईत	१	बन्धने	इन्तति	इ
ईर	२	गतौ कंपनेच	ईर्त्त	ल
ईर	१०	प्रेरणे क्षेपेच	ईरयति गजं यन्ता	क
ईर	१	प्रेरणे	ईरति	
ईर्ष्य	१	ईर्ष्यार्थे	ईर्ष्यति साधुं पापी ईर्षा	
ईश	२	ऐश्वर्ये	ईष्टेराजा ईशः ईश्वरः ऐ- श्वर्य	ल ङ
ईष	१	उञ्छे	ईषति	उ
ईष	१	गतिदर्शनहिंसा- दानेषु	ईषते पांथः	
ईह	१	चेष्टायां	समीहते धर्माय साधुः	ङ
उ	१	शब्दे	अवते	ङ
उक्ष	१	सेचने	उक्षति उक्षा (उक्षन्)	
उख	१	शोषणालम्ब्ययोः	ओखति हिमेन वृक्षः	ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उख	१	गतौ	ओखति उखा	
उख	१	गतौ	उंखति	इ
उच	४	समवाये	उच्यति बंधुना बंधुः ओक	य
उछ	६	उंछे	उंछति धान्यं	श इ
उछ	६	{ निवासे (अथवा) वर्जने बन्धने-समाप नेअतिक्रमे	उछति	श ई
उज्झ	६	त्यागे	उज्झति त्वचं सर्पः	श
उठ	१	उपघाते	ओठति	
उन्द	७	छेदने	उनत्ति गंगाजलेन गात्रं यतिःउदकः	ध ई
उद्ग	६	उत्सर्गे	उद्गति त्वचंसर्पः उद्गांच- कार उद्गः	
उघ्रस्	१०	उञ्छे	उघ्रासयति कणान्भिक्षुः	क
उब्ज	६	आर्जवे	उब्जति कुब्जां कृष्णः	श
उभ	६	पूरणे	उभति धनेनार्थिनं कर्णः उभयं	श
उंभ	६	पूरणे	उंभति	श प
उरी	६	उद्यमने	उरते	इ ई श
उरस्	११	बलार्थे	उरस्यति	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उर्णु	२	आच्छादने	उर्णोति (वा) उर्णुते	ल ड
उर्द	१	{ माने (तथा) क्री- डायां आस्वादे	उर्दतेस्वर्णं स्वर्णकारः	
उर्व	१	हिंसायां	उर्वति	इ
उष	१	दाहे (तथा) वधे	ओषति	
उषस्	११	प्रभातीभावे	उषस्यति	ट
उह	१	अर्दे	उंहति	इ
ऊठ	१	उपघाते	ऊठति	
ऊन	१०	परिहाणे	ऊनयति घृतं भोक्ता	क त
ऊय	१	{ तंतुसंताने (अथ- वा सेवने	ऊयते वस्त्रं तंतुवायः ऊतं	ड ई
ऊर्ज	१०	बलप्राणधारणयोः	ऊर्जयति धार्मिकः	क
ऊर्णु	२	आच्छादने	ऊर्णोति (तथा) ऊर्णुते	व ल
ऊष	१	रुजायां	गगनं मेघः ऊषति रोगो देहं ऊषः ऊषरः	
ऊह	१	वितर्के	{ ऊहते शास्त्रे बुधः समूहः अनुक्तमप्यूहति पंडितो जनः	ड
ऋ	१	प्रापणे	अरति यातिर्विष्णुं आरः	
ऋ	३	गतौ	इयस्ति	लि र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ऋ	५	हिंसायां	ऋणोति	न र
ऋक्ष	५	जिघांसायां	ऋक्ष्णोति	न र
ऋच	६	संवरणेनुत्यां	ऋचति हरिं बुधःऋक् (वा)ऋच्	श
ऋच्छ	६	{ गतीन्द्रियप्रलयमू- र्त्तिभावेषु	ऋच्छतिवृद्धःऋच्छतिशी तेनघृतं	श
ऋच्छ	१	गतौ	ऋच्छति	
ऋज	१	{ गतौ (अथवा) स्थैर्ये-उर्जने अर्जने	अर्जते	ङ
ऋज	१	अर्जे	ऋजते	इ ङ
ऋण	८	गतौ	ऋणोति (वा) ऋणुते ऋतं	द न उ
ऋत	१	{ स्पर्द्धनैश्वर्य्यघृणाग- तिषु	अर्त्तति	
ऋत	२	{ जुगुप्सायांकृपा- यांच	ऋतीयते दुर्बले धनी सौत्रः	ल
ऋध	५	वृद्धौ	ऋधोति धर्मेण विप्रः ऋ- द्धः धा धं	न उ
ऋध	४	वृद्धौ.	ऋध्यति अर्धिष्यति ऋ- द्धः धा-धं	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ऋफ	६	हिंसायां (अथवा) दानेच्छाघायां निंदा- यां युद्धे	ऋफति	श
ऋंफ	६	हिंसायां	ऋंफति	श
ऋष	१	आदानसंवरणयोः	अर्षति, वा) अर्षते ऋषभः	
ऋष.	६	गतौ	ऋषति	श ई
ऋ	९	गतौ	ऋणाति	ग मि
एज	१	कम्पे	एनति	ऋ
एज	१	दीप्तौ	एजते	ऋ ड
एठ	१	बाधने	एठते	ड
एध	१	वृद्धौ	एधते धर्मेण साधुः एधः ऐ- धस्	ड
एला	११	विलासे	एलायति	ट
एष	१	गतौ	एषते	ऋ ड
ओख	१	शोषणालर्मथयोः	ओखति	ऋ
ओज	१०	बलतेजसोः	ओजयति	क त
ओण	१	अपनयने	ओणाति धनं चौरः	
ओलड	१	उत्क्षेपे	ओलण्डति	इ
ओलड	१०	उत्क्षेपे	ओलण्डयति	क इ
कक	१	लौल्ये (अथवा) इच्छागर्वचापले	ककते काकः	ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कक	१	गतौ	कङ्कते	इ इ
कक्क	१	हसने	कक्कति	
कक्ख	१	हसने	कक्खति	ए
कक्क	१	हसने	कक्कति	
कक्ख	१	हसने	कक्खति	कखिः
कग	१	संवरणे	कगति	ए
कच	१	बन्धने	कचते केशं नारी कचः विकचः	
कच	१	रवे	कचति	
कच	१	दीप्तौ	कच्चते	इ इ
कट	१	गत्यां	कटति	
कट	१	गतौ	कटति	
कट	१	कृच्छ्रजीवने	कटति	
कट	१	वर्षावरणे	कटति कटेन गात्रं गो- रक्षकः कटः	ए
कट	१	गतौ	कटति	कण्टकं
कउ	१	तंकने	कण्ठति	
कठ	१	शोके	कण्ठते	इ इ
कठ	१	शोके	कण्ठति	इ
कठ	१०	शोके	कण्ठयति कण्ठः कण्ठं कण्ठा कण्ठी	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कड	१	मदे	कडति धनेन	
कड	१०	भेदे (तथा) रक्षणे	कण्डयति	क इ
कड	६	मदे (तथा) अदने	कडति धनेन मूर्खः	श
कड	१	मदे	कण्डते धनेन मूर्खः	ड इ
कड	१	तुषापकरणे	कण्डते तंदुलं स्त्री	ड इ
कड्ड	१	कार्कश्ये	कड्डति कृपणा	
कण्डू	११	गात्रविधर्षणे	कण्डूयति (वा) कण्डूयते गात्रं	व ट
कण	१	गतौ	कणति काण कणः	म
कण	१	शब्दे	कणति	ऋ
कण	१०	निमीलने	कणयति नेत्रं	क
कथ	१	श्लाघायां	कथते हरिकथां कविः	ड
कत्र	१०	शैथिल्ये	कत्रयति	क त
कथ	१	श्लाघायां	कथते हरिकथां कविः	ड
कथ	१०	वाक्यप्रबन्धे	कथयति काव्यं कथकः कथा	क त
कद	१	वैक्लव्ये	कदते	ड
कद	१	वैक्लव्ये	कन्दते	ड इ
कद	१	आह्वानरोदनयोः	कन्दति	इ
कन	१	हीनौ (त०) . प्री- तिगत्योः	कनति दीपः	इ वि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कप	१	चलने	कंपते	इ ङ
कव		वर्णे	(इतिकव	
कम	१	कान्तौ	कमते	कामः उ ङ
कम	१-१०	कान्तौ	कामयते	उ ङ
कम्ब	१	गतौ	कम्बति	
कर्घ	१	गत्यां	कर्घति	
कर्ज	१	व्यथने	कर्जति केशिनं कृष्णः	
कर्ण	१०	भेदे	कर्णयति	कर्णः क त
(आउप- सर्गे)		श्रवणे	आकर्णयति	
कर्त्त	१०	शैथिल्ये	कर्त्तयति	क त
कर्त्र	१०	शैथिल्ये	कर्त्रयति हृदयग्रन्थि	क त
कर्द		कुत्सिते शब्दे	ज्ञानी कर्दति काकः	
कर्ब	१		इतिकर्ब	
कर्ब	१	दर्पे-गतौच	कर्बति मूर्खः	
कल	१०	संख्याने (त०)रुतौ	कलते धनं धनी कालः	ङ
कल	१०	संख्याने-गतौच	कलयति	क त
कल	१	क्षेपे	कलयति	क ङ
कल्ल	१	अव्यक्ते शब्दे	कल्लतेखरः	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कव	१	वर्णे	कवतेकविःकाव्येन हरिः कवतेचित्रकारः	ऋ ङ
कश	१	हिंसायां	कशति (वा) कशते काशः कशाः	अ
कष	१	हिंसायां	कशति समूलकाशं कष्टः टा टं	
कष	१०	हिंसायां	कशयति कष्टः टा टं	क
कस	१	गतौ	कसति विकस्वरः	ज
कस	२	गतिशासनयोः	कंस्ते कंसं हरिः	ल ई ऋ
काक्ष	१	कांक्षायां	कांक्षति कांक्षा	इ
काच	१	दीप्तिबध्ननयोः	काञ्चते विभावसुः	इ ङ
काल	१०	कालोपदेशे	कालयति	क त
काश	१	दीप्तौ	काशते	ऋ ङ
काश	४	दीप्तौ	काश्यते	य उ ऋ
कास	१	दीप्तौ	प्रकासते	ऋ ङ
कास	१	शब्दकुत्सायां	कासतेरोगी कासः(वा) काशः	ऋ ङ
कि	३	ज्ञाने	चिकेति	लि र
किट	१	{ गतौ (त०) भय- भीषयोः	केटति किटं	लि र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कित	१	रोगापनयने	चिकित्सति रोगिणं वै- द्यः चिकित्सा	लि र श क क
कित	३	ज्ञाने-निवासेच	चिकेत्ति	
किल	६	शैत्यक्रीडनयोः	किलति देहं चन्दनेन- किलत केलिः	
किल	१०	क्षेपे	केलयति	
कीट	१०	बन्धने (त) वर्णे	कीटयति	ङ ल टु श ङ शि ग ए ङ ज
कील	१	बन्धे	कीलति कृष्णं माता की- लः—कीला	
कु	१	शब्दे	कुवते	
कु	२	शब्दे	कौति	
कु	६	आर्त्तस्वरे	कुवते	ज
कु	९	शब्दे	कुनाति	
कुक्	१	आदाने	कोकते	
कुच	१	{ रोधसंपर्ककौटिल्य विलेखनेषु	कोचति	
कुच	१	तारशब्दे	कोचति काञ्ची	श शि
कुच	१	संकोचे	संकोचति चन्द्रात्पद्मं— संकोच	
कुच	६	संकोचे	संकुचति धनी राजभ- यात्	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्ज	१	कौटिल्याल्पीभाव- योः	कुञ्जति खलः—कुञ्जति मनो योगी	उ
कुज	१	स्तेयकरणे	कोजति नवनीतं कृष्णः—	उ
कुज	१	अव्यक्तेशब्दे	कुञ्जति कुञ्जः (वा) नि- कुञ्जः	इ
कुट	१	वैकल्ये	कुण्टति	इ
कुट	६	कौटिल्ये	कुटति खलः कोटः	श शि
कुट	१०	प्रतापने छेदनेच	कोटयते	क ड
कुट्ट	१	प्रतापने	कुट्टति कुट्टयति	
कुट्ट	१०	छेदने (त०) कु- त्सायां	कुट्टयति कुट्टनी	क
कुटुम्ब	१०	धृत्यां पूरणे	कुटुम्बयते	क ड
कुठ	१	आलस्ये प्रतिघा- तेच	कुण्ठति कुण्ठः कुण्ठः ठा ठं	इ
कुड	६	बाल्ये (त०) अ- दने	कुडति ज्ञानी	श शि
कुड	१०	रक्षणे अनृतपरि- भाषणेवेष्टनेच.	कुण्डयति	क इ
कुड	१	कैवल्ये	कुण्डति कुण्डं कुण्डं कुण्डी	इ
कुड	१	दाहे	कुडते कुंडं कुंभकारः कुण्डं	इ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुण	१०	आमन्त्रणे	कुणयति	क त
कुण	६	शब्दोपकरणयोः	कुणति काकः	श
कुत्स	१०	अवक्षेपणे	कुत्सयते कुत्स्यं साधुः	क ङ
कुथ	४	पूतीभावे	कुथ्यति मृतकः	य
कुथ	१	हिंसासंक्लेशयोः	कुन्थति रावणं रामः	इ
कुद्र	१०	अनृतभाषणे	रावणशरेण रामो न कुन्थति	क इ १
कुन्थ	९	संक्लेशने (त.)	कुन्द्रयति	ग
कुथ	९	श्लिषि	कुन्थाति रोगी	
कुप	१-१०	स्तुतौ (अथवा) स्मृतौ	कुपति (वा) कुपयति	कि
कुप	४.	रोषे	कुप्यति (अथवा) कुप्यते कोपः	य इ र
कुप	१०	भाषार्थे ह्युतौ	कोपयति	क
कुब	१	छादने	कुम्बति तृणेन गृहं कुम्बा	इ
कुब	१०	छादने	कुम्बयति	क इ
कुम्भ	१०	छादने	कुम्भयति	इ क
कुमार	१०	क्रीडायां	कुमारयति गोकुले कृष्णः कुमारः	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुमाल	१०	कलौ	कुमालयति	क त
कुर	६	शब्दे	कुरति चुकोर	श
कुर्द	१	क्रीडायां	कुर्दते	ङ
कुल	१	बन्धुसंहतौ	कोलति कुलं	
कुश	४	श्लिपि	कुशयति	य इ र
कुश	१-१०	द्युतौ	कुंशति (वा) कुंशयति	क कि इ
कुष	९	निष्कर्षे	कृष्णाति स्वर्णं स्वर्ण- कारः कोषः	ग
कुषुभ	११	क्षेपे	कुषुभयति कन्दुकं विलासी	ट
कुस	४	श्लेषणे	कुस्यति कामिनीं कान्तः	य इ र
कुस	१०	{ भाषार्थे (अथवा) भासने	कुंसयति क इ	इ कि
कुह	१०	{ विस्मारणे विस्मा- पने	कुहयते कुहको मायया विश्वं	क त ङ
कू	६	{ शब्दे (तथा) आ- र्त्तस्वरे	कुवते काकः	श शि ङ
कूज	१	{ अव्यक्तेशब्दे (त०) हिक्कने	कूजति पक्षी	
कूट	१०	अप्रसादे परितापे च	कूटयते खलः	क ङ
कूट	१०	दाहे	कूटयति	क त
कूट	१०	दाहमात्रे	कूटयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कूड	६	घसने	कूडति घासं वृषः कूडः	श शि
कूण	१०	संकोचे	कूणयते नेत्रं रोगी कूणः	क त ड
कून	१०	संकोचे	कूनयते नेत्रं रोगी कूनी	क त ड
कूण				
कूप	१०	दौर्वल्ये	कूपयति	क त
कूर्द	१	क्रीडायां	कूर्दते	ड
कूल	१	आवरणे	कूलति धर्म साधुः कूलं	
कृ	५	हिंसायां	कृणोति (वा) कृणुते	न ज
			कृतं युगं	
कृ	८	करणे	करोति (वा) कुरुते	द ज डु
			कटकं कारुकः	
कृज	१	भर्जने	कृजयते धान्यं	इ ड
कृड	६	घनत्वे	कृडति	श
कृत	६	छेदने	कृन्तति वृक्षं	श प ई
कृत	७	वेष्टने	कृणत्ति तरुं कंटकेन मा-	ध ई
			लाकारः कृत्तिः	
कृप	१	दयायां	कृपते हरिर्भक्तं	ष म ड
कृप	१०	दौर्वल्ये	कृपयति	क त
कृप-कृ प कृ	१	अवकल्कने	कल्पति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृप-कृ प लृट्	१	सामर्थ्ये	कल्पते मोक्षाय	ङ ऊ व ल
कृप-कृ प लृट्	१०	अवकल्कने	कल्पयति कल्पना	क
कृव	९	कृतिहिंसयोः	कृणोति	न
कृवि	९	जिघांसायां	कृविणोति	या इ
कृश	४	तनूकरणे	कृश्यति देहं रोगः कृशः शा-शं	औ
कृष	१	आकर्षणे	कृषति	श अ उ
कृष	६	विलेखने	कृषति (वा) कृषते क्षेत्रं कृषकः	श
कृ	६	विक्षेपे	किरति कुमुमं वायुः सं- कीर्णः णा-णं	ग अ इ
कृ	९	हिंसायां	कृणाति कीर्णः णा णं	क
कृत	१०	संशब्दने	कीर्त्तयति परगुणं साधुः कीर्त्तिः	क त
केत	१०	आमन्त्रणे श्राव- णचे	केतयति श्राद्धाय मुनिं गृही-केतनं	क ल
केप	१	गत्यां कंपनेच	केपते	ऊ
केल	१	गतौ	केलति केलिः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
केला	११	विलासे	केलायति विलासी कामात्	ट
केव	१	सेवने	केवते	क ड
कै	१	शब्दे	कायति	
क्रथ	१	हिंसायां	क्रथति	
क्रथं	१०	प्रतिहर्षे	क्रथयति	क म
क्रथ	१०	हिंसायां	क्राथयति	क म
क्रद	१	वैकुण्ठे	क्रन्दते	ड इ
क्रद	१	आव्हानरोदनयोः	क्रन्दति अक्रन्दीदृश- ग्रीवः	इ
क्रन्द	१०	आप्रत्यये आक्रं- दसातत्यरोदने	आक्रन्दयति शोकार्तः	क
क्रम	१	पादविक्षेपे	क्रमति	उ
क्रम	४	पादविक्षेपे	क्राम्यति (वा) क्राम्यते वामनोमर्ही	य उ
क्रस	१	शब्दे	क्रसति	
क्री	९	द्रव्यविनिमये	क्रीणाति (वा) क्रीणीते तिलं यवैर्जनः क्रीतः ता- तं-क्रयः-क्रयविक्रयौ	ग ञ डु
क्रीड	१	विहारे	क्रीडति	क्र
वनूय	१	शब्दे उन्देच	वनूयते नरः	ड इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
क्रुञ्ज	१	कौटिल्याल्पी भा-	क्रुञ्चेति खलः क्रुञ्चति म-	
		वयोः	नो योगी	
क्रुड	६	निमज्जते	क्रुडते	ड श
क्रुध	४	रोषे	क्रुध्यति क्रोधः क्रुद्धः	य ल
			धा धं	
क्रुथ	९	श्लिषि-श्लिषि	क्रुशति	ग
क्रुश	१	आह्वाने	क्रोशति क्रोष्टा	जं औ
क्रु	६	गतौ	क्रुवते पान्थः	ड द
क्रुय	१	शब्दे (अथवा)	क्रुंयते वायुना वृक्षः	इ र
		दुर्गन्धार्दत्वयोः		ति
क्रथ	१०	हिंसायां	क्रथयति	क
क्रथ	१	हिंसायां	क्रथति	
कमर	१	हूर्छने	कमरति खलः	
कश	१	हृतिभासनयोः	कशयति	उ
कश	१०	भासने	कशति (वा) कशयति	इ नि
कू	९	शब्दे	कृणाति (वा) कृणीते	अ
कृथ	१०	हिंसायां	कृथयति	क
कृथ	१	हिंसायां	कृथति	म
कृद	१	वैकृत्ये	कृन्दते	नि ड
कृद	१	आव्हानरोदनयोः	कृन्दति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ह्लिद	४	आर्द्रीभावे	ह्लिद्यति पयसा घटः-ह्लि- न्नः-ना-नं ह्लेदः	य ऊ इ र
ह्लिद	१	परिवेदने	ह्लिन्दति (वा) ह्लिन्दते कामशोकेन रति :	इ अ नि
ह्लप ह्लिव	१०	व्यक्तायांवाचि	ह्लापयति अह्लपत् (इति ह्लिव)	क
ह्लम	४	ग्लानौ	ह्लाम्यति पान्थः ह्लान्तः ता-तं-ह्लन्तिः	य उ भ नि इ र
ह्लव	१	भये	ह्लवते	प म ड
ह्लिव(वा)	१	अधाष्ट्ये	शोकेन ह्लीवते नरः ह्लीवः ह्लीवं	ऋ ङ
ह्लिश	४	उपतापे	ह्लिश्यते पापी	य ङ उ
ह्लिश	९	विबाधने	ह्लिश्नाति धनिकं चोरः ह्लेशः	ग ऊ
ह्लु	६	गतौ	ह्लुवते पान्थः	ङ श
ह्लुश	१	बाधने (त.) वधे- अव्यक्तायांवाचि	ह्लेशते पापिनं रोगः ह्लेशः	
ह्लण	१	शब्दे	ह्लणति ह्लणः ह्लाणः	
ह्लथ	१	निष्पाके	ह्लथतिवैद्यः ह्लथं	ए ज
ह्लल	१	गतौ	ह्ललति	ऊ
ह्लज	१०	तंके कृच्छ्रजीवेन	ह्लज्जयति	क इ

धातुः	गणः	अर्थः	उदाहरणः	अनुबन्धः
क्षजं	१	दाने गतौ	क्षजते	इ ष म क्षि
क्षज	१	दानगत्योः	क्षजते	ष म ङ
क्षण	<	हिंसायां	क्षणोति (वा) क्षणुते वि- प्रं खेलः क्षतं क्षतजं	द व उद
क्षप	१०	कांतौ (अथवा) शाक्तौ (वा) क्षांतौ	क्षपयति चन्द्रः	क्षि क इ द
क्षप	१०	प्रेरणे	क्षपयति	क्षि
क्षम	१	सहने	क्षमतेऽपराधं क्षमा	क इ क्षि
क्षम	४	सहने	क्षाम्यति पुत्रापराधापि- ता-क्षमा	ङ जि ष
क्षर	१	संचलने	क्षरति नदी क्षारः	य उ इ क्षि
क्षल	१	चलने	क्षलति	ज क्षि
क्षल	१०	शौचे	क्षालयति गङ्गाजलेन गात्रं	ज क्षि
क्षि	१	क्षये (तथा) ऐश्वर्ये	क्षयति (वा) क्षयते	ज क्षि
क्षि	५	हिंसायां	क्षिणोति	न क्षि
क्षि	६	निवासे (त०) गतौ	क्षियति	श क्षि
क्षि	९	हिंसायां	क्षिणाति	ग ष क्षि
क्षिण	<	हिंसायां	क्षिणोति (वा) क्षिणुते	द व उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरणः	अनुबन्ध.
क्षिद	४	माचेन (तथा) स्नेहे	क्षिद्यति गां बन्धाद्गोपः	य जि आ
क्षिद(वा)	१	मोक्षे स्नेहे	क्षेदते	ऋ आ ङ जि
क्षिद	१	अव्यक्ते शब्दे	क्षेदति क्षेदः	जा जि
क्षिप	४	प्रेरणे	क्षिप्यति वामनं वीरः	य औ
क्षिप	६	प्रेरणे	क्षिपति (त०) क्षिपते	श ञ औ
क्षिप	—	—	क्षिप्तः ता-तं (इति क्षिब)	उ
क्षिप	१	निरसने	क्षीवति	य उ
क्षिप	४	निरसने	क्षीव्यति	
क्षिप	१	हिंसायां	क्षयति	
क्षिप	१	अव्यक्ते शब्दे (त)	क्षीजति पक्षी	
क्षिप	१	हिक्कने	क्षीवति	
क्षिप	१	मदे	क्षीवते धनेन क्षीवः वा-व	ऋ ङ
क्षिप	२	शब्दे	क्षौति	ल दु
क्षिप	७	संषेपणे	क्षुणत्ति (त०) क्षुण्ते ह-	ध ञ झ र औ
क्षिप			रिद्रां जनः-क्षोदः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुव
क्षुध	४	बुभुक्षायां	क्षुध्यति भिक्षुः क्षुध् क्षुधा	य ल
क्षुभ	१	संचलने	क्षुभितः—ता-तं	
क्षुभ	४	संचलने	क्षोभते क्षोभः	
क्षुभ	९	संचलने	क्षुभ्यति युद्धेन शूरः	
क्षुर	६	छेदने (त०) वि- लेखे खननेच	क्षोभः क्षुब्ध-धा-धं क्षुभ्नाति क्षुरति क्षुरः	
क्षेड	१०	भक्षणे	क्षेडयति	क
क्षेव	१	निरसने	क्षेवंति	
क्षै	१	क्षये	क्षायति	
क्षोट	१०	क्षेपे	क्षोटयति (वा) क्षोटयते	
क्षुण्	२	अपनयने	क्षुण्ते दोषं	ल
क्षुण्	२	तेजने	क्षणौति शास्त्रं	त
क्षमाय	१	विधूनने	क्षमायते वायुर्वृक्षं	ई
क्षमील	१	निमेषणे	क्षमीलति	
क्ष्विड	१	स्नेहमोक्षयोः	क्ष्वेडति	
क्ष्वेल	१	स्नेहमोक्षयोः चल- तेच	क्ष्वेलति	
खक्ख	१	हासे	खक्खति	
खच	१०	बन्धने	खचयति	क

अनुव.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
	६	भूतिपूत्योरुत्पत्तौ	खचति	श
	९	भूतप्रादुर्भावे	खच्चाति	ग
	१	मन्थने	खजति जलं वराहः	
	१	गतिवैकल्ये	खञ्जति खञ्ज खञ्जनः	इ
	१	कांक्षे	खटति धनं लुब्धः खट्वा	
	१०	वृत्तौ	खट्टयति	क
	१	भेदे	खण्डति	इ
	५	मन्थे	खण्डं खण्डं खण्डते घटं कृष्णः	इ ड
	१०	भेदे	खण्डयति खण्डः (वा)	क इ
	१०	भेदे	खाडयति	क
	१	हिंसायां (त०) स्थैर्ये	खदति रिपुं	
	१०	संवरणे	खादयति	क
	१	अवदारणे	वृषितो जान्हवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः (वा) खनते खनिः खानी (वा) खातिः खनित्रं	उ
	१	गतौ	खम्बति	
	१	गत्यां	खर्धति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनु.
खर्ज	१	मार्जने (त०) व्य- थायां	खर्जति गात्रं खर्जूरः	खूर्द
खर्द	१	दर्शने	खर्दति मूलकं बालः	
खर्व्व	१	गतौ	खर्व्वति खर्व्व बा-वं	खि
खर्व्व	१	दर्पे	खर्व्वति मूर्खः खर्व्वः वा-वं	ट
खल	१	चलने संचयेच	खलति खलः	
खव	९	भूतप्रादुर्भावे	खौनतिजनः	
खप	१	वधे	खपति	
खाद	१	भक्षणे	खादति	
खिद	४	दैन्ये	खिद्यते खेदः	य
खिद	६	परिघाते	खिदति साधुं दमी खेदः	श
खिद	७	दैन्ये	खित्ते भिक्षुः	ध
खु	१	शब्दे	खवते	
खुज	१	स्तेयकरणे	खोजति नवनीतं कृष्णः	
खुड	१	भेदे	खोडति	
खुड	१	भेदे	खुण्डति	
खुड	६	संवरणे	खुडति धनं धनिकः	
खुड	१	खञ्जे	खुण्डते	
खुड	१०	खण्डने	खुण्डति (वा) खुण्डयति	
खुर-क्षुर	६	छिदने	खुरति धान्यं कृषकः खुरः क्षुरः	

नृ.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खूर्द	१	क्रीडायां	खूर्दते	ड
	१०	भक्षणे	खेटयति मांसं आखेटः	क त
खि	१	उत्त्रासने	खेटः टा-टं.	
ट			खेटति केशी गोष्ठं आखे-	
	१०	भक्षणे	टकः खेट	क
	१	गतौ	खेडयति	उ
	१	सेवने	खेलति	क ड
	१	खेदने	खेवते	
	१	स्थैर्ये	खायति धननाशेन लोकः	
		खननहिं	खायति	
		सयोः		
	१	गत्याघाते	खोटति	क
	१०	क्षेपे भक्षणेच	खोटयति शरं शूरः	क त
	१	गति प्रतिघाते	खोडति खोडः—डा-डं	क
	१०	क्षेपे	खोडयति	क त
	१	गतिप्रतिघाते	खोरति	क
	१	गतिप्रतिघाते	खोलति	क
	२	प्रकथने	ख्याति गुणेन लोकः	ल
			ख्यातिः	
	१	हसने	गग्धति	
	१	शब्दे-मदेच	गजति	इ
			गजः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनु.
गज	१	स्वने	गञ्जति	व
गड	१	सेचने	(डलयोरैक्यात्) गलति	
गड	१	वदनैकदेशे	जलं गाडः गालः गडकः	
गण	१०	संख्याने	गण्डति गण्डः	
गद	१	व्यक्तायांवाचि	गणयति गणको ग्रहणम्	क
गद	१०	मेघशब्दे	गदति	क
गद्गद	११	वाक्स्खलने	गदयति घनः	क
गन्ध	१०	अर्दने	गदयति	क
गम्ब	१	गतौ	गन्धयते लुब्धो वदान्यं	क
गम	१	गतौ	गम्बति	
गर्घ	१	गत्यां	गच्छति	ल
गर्ज	१	शब्दे	गर्घति गर्धः	
गर्ज	१०	शब्दे अभिकां-	गर्जति	
		क्षायाम्	गर्जयति	
गर्ह	१	शब्दे	गर्हति सिंहः	
गर्ह	१०	शब्दे अभिकां-	गर्हयति सिंहः	
		क्षायाम्		
गर्ध	१०	अभिकांक्षायाम्	गर्धयति भक्ष्यं भिक्षुः	
गर्व	१	गतौ	गर्वति	
गर्व	१	दुर्पे	गर्वति मूर्खः गर्वः	

अनु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
व	१०	माने	धनैर्गर्वयते मूर्खः गर्वः	क त ड
	१०	विनिन्दने	गर्हयति	क
	१	विनिन्दने	गर्हति	
	१	कुत्सने	गर्हते पापं गर्हा	ड
क	१०	स्त्रावे	गलयते	क ड
	१	अदने (स्त्रावे)	गलति मूलकं गलति जलं	
क	१०	आमन्त्रणे	ग्रामयति	
क	१	कुत्सने	गल्हते गल्हः	क
क	१०	अन्वेषणे	गवेषयति हरिणं नरः ग- वेषणा	ड क त
ल	१०	गहने	गहयति गहनः ना-नं-ग- हनं	
	३	स्तुतौ जन्मनि	जिगाति देवान् जिगाति सुम्रयुः	लि र
	१	गतौ	गाते	ड
	१	प्रतिष्ठालिप्सयोः ग्रन्थे	गाधते धनं गाधिः गाधः	कं ड
ह	१	विलोडने	गाहते जलं वराहः	ड उ
पु	२	शब्दे	गवते	ड
	६	विष्टोत्सर्गे	गुवति	श शि औ
	१	कूजने	गोजति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनु.
गुज	६	शब्दे	गुजति	श
गुज	१	अव्यक्ते शब्दे	गुञ्जति पक्षी	श
गुठ	१०	वेष्टे	गुण्ठयते	म
गुड	६	रक्षायां	गुडति	क
गुड	१०	वेष्टने (त०)	गुण्डयति	ह
		रक्षणेचूर्णीकरणेच		
गुण	१०	आमन्त्रणे	गुणयति	क
गुद	१	क्रीडायां	गोदते शिशुः	ह
गुध	१	क्रीडे	गोधते	त
गुध	४	परिवेष्टने	गुध्यति	न
गुध	९	रोषे	गुध्नाति	न
गुप	१	गोपने	गोपते पापं जुगुप्सा	य
गुप	४	व्याकुलत्वे	गुप्यति लोकं कोपः	य
गुप	१	रक्षणे	गोपायति भुवं राजा	
गुप	१०	भाषार्थे (अथवा)	गोपयति	
		मासि		
गुफ	६	ग्रन्थे	गुफति माल्यं मालाकारः	
गुंफ	६	ग्रंथे	गुंफति माल्यं मालाकारः	
गुर	१	उद्यमे	गोरति माता बद्धुं हरिं	
गुर	६	उद्यमे	गुरते धनाय वैश्यः	श
गुर्द	१	निकेतने-क्रीडायां	गुर्दते	

अनु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श	१०	निकेतने-क्रीडायां	गुह्ययति	क
म	१	धाष्टर्ये	गरुभते धृष्टः	ट
क	१	संवरणे	गूहति (वा) गूहते	ऊ ज
ह	६	पुरषोत्सर्गे	गुवति रोगी गृहे	श शि औ
ह	४	हिंसायां-गतौच	गूर्यते रिपुं वशी	य ङ ई
क	१०	भक्षणे उद्यमे	गूरयते मूलकं पान्थः	क ङ
!	१-१०	निकेतने-क्रीडायां	गूहते (ङ) गूह्ययति	क
!	१	सेचने	गरति मेघो भूमिं आ- गारः	
न	१	ध्वनौ	गर्जति	
न	१	शब्दे	गृजति गृजनः गृ- जनं	इ
य	४	अभिकांक्षायां	गृध्यति गर्धिष्यति गृध्रः गृध्रुः	उ
!	१०	ग्रहणे	गृहयते गृहयालुः	क त ङ
!	६	निगरणे	गिरति मूलकं पथिकः गीर्णः, णा, णं	श
	९	शब्दे	गृणाति गुणंसाधुः	ग गि
	१०	विज्ञापे विज्ञाने	गरयते	क ङ
	१	गतिचालयोः	गेपते	ऋ ङ
	१	सेवने	गेवते	ङ ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनु.
गेष	१	अन्वेष्टायां	गेषते मुक्तिं मुनिः	कृ
गै	१	शब्दे	गायति	त
गोष्ट	१	संघाते	गोष्टेते धान्यं	व
गोम	१०	उपलेपने	गोमयति गोमयेन भूमिं	क
			यज्वा	
ग्रथ	१	कोटिल्ये-संदर्भे	ग्रथते	
ग्रथ	१	कौटिल्ये	ग्रंथते चित्तं खलः	द
ग्रन्थ	९	संदर्भे	ग्रथ्नाति ग्रन्थं कविः	
ग्रन्थ	१	संदर्भे	ग्रंथति	
ग्रन्थ	१०	संदर्भे-बन्धनेच	ग्रंथयति	
ग्रस	१	ग्रहणग्रासयोः	ग्रसति	
ग्रस	१	अदने	ग्रसते ग्रासं भिक्षुः	
ग्रस	१०	अदने-ग्रासे	ग्रासयतिचन्द्रं राहुः	
ग्रह	१-१०	आदाने	ग्रहति (वा) ग्राहयति	दि
ग्रह	९	उपादाने	गृह्णाति (वा) गृह्णीते	
			धर्मं धार्मिकः गृहीतः	
			ता ता तं.	
गुर्व	१	उद्यमने	गूर्वति फलार्थी फलाय	
ग्रुच	१	चौर्ये	ग्रौचति नवनीतं कृष्णः	
ग्लस	१	अदने	ग्लसते	
ग्लह	१-१०	आदाने	ग्लहति (वा) ग्लहयति	दि

अनु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
	१	चौर्ये	ग्लोचति नवनीतं कृष्णः	उ इर
	१	गतौ	ग्लोचति	उ इर
	१	गतौ	ग्लुञ्चति	उ इर
	१	दैन्ये-गतौ-चाले	ग्लेषते भिक्षुः	ऋ ङ
	१	सेवने कंपनेच	ग्लेवते	ऋ ङ
	१	अन्विच्छायां	ग्लेषते मुक्तिं मुनिः	ऋ ङ
	१	हर्षक्षये	ग्लायति ग्लानिः	
	१	हर्षक्षये	ग्लपयति	
	१	हसने	घग्घति	
	१	चेष्टायां	घटते घटकः घटः	ष म ङ
	१०	संघातेहिंसायांद्युतौ	घटयति कुपितजनं साधुः	क
	१०	भाषार्थे-द्युतौ	घण्टयति	क इ
	१	चलने	घट्टते घनः घट्टः	
	१०	चलने	घट्टयति तरुं पक्षी	क
	८	दीप्तौ	घणोति (वा) घणुते	द उ ज
	१	गतौ	घम्बति	
	१	गतौ	घर्बति	
	१	क्षरे	घंसते	इ ङ
	१	भक्षे	घसति	लृ औ
	१	क्षरणे	घंसते	इ ङ
	१	ग्रहणे	घिण्णते	ङ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनु.
घु	१	शब्दे	घवते	
घुट	१	परिवर्त्तने	घोटते प्रवासी	
घुट	६	प्रतिघाते	घुटति गजं घोटकः	श
घुट	६	व्याघाते-रक्षे	घुटति	र
घुण	१	भ्रमणे	घोणते तीर्थं मुनिः	
घुण	६	भ्रमणे	घुणाति भिक्षायै भिक्षुः	
			घुणः	
घुण	१	ग्रहणे	घुण्णते	
घुर	६	भोमार्त्तिशब्दे	घुराति भयेन शिशुः घोरः	
			रा-रं-घौरं	
घुर-घूर	४	हिंसाज्ञानयोः	घुर्यते	र
घुष	१	वधे	घोषति	
घुष	१०	वधे	घोषयति	व
घुष	१	शब्दे	साधुर्घोषति गोविंदं घोषः	
घुष	१०	शब्दे	घोषयति नीतिं जनेषु	व
			राजा घोषणा	
घुष	१	धूशे-कान्तिकर- णेच	घुंषते	
घूर्ण	१	भ्रमणे	निद्रया घूर्णाति क्षीवः	
घूर्ण	६	भ्रमणे	घूर्णाति भिक्षायै भिक्षुः	

अनु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
	३	क्षरणदीप्त्योः	जिघर्त्ति जलं जिघर्त्ति घृतं घरति	ल इ र
३	१०	क्षरणदीप्त्योः प्र- सह्यकरणेच	प्र-घरयति	क
	१	सेचने	घरति दग्धं पयसा	
	१	ग्रहणे	घृण्णते	इ ङ
	८	दीप्तौ	घृणोति (वा) घृणुते	द व उ
	१	संघर्षे	घर्षति काष्ठं मूर्खः	उ
	१	गतिचातुर्ये	घोरत्यश्वः	
	१	गन्धोपादाने	जिघ्रति पुष्पं अमरः	
	१	ध्वनौ	ङवते	ङ
	१	दीप्तौ प्रतिघात-	चकति (वा) चकते	अ म
		तृप्त्योः		
	१	दीप्तौ	चकते विद्यया विप्रःचाकः	ङ
	१०	व्यसने	चक्रयति	क
	२	दीप्तौ	चकास्ति.	ल ऋ लु
	२	व्यक्तायांवाचि	आचष्टे धर्मगुरुः	ल ङ
	५	वातने	चञ्चोति	न
	१	गत्यां	चञ्चति	उ
	१०	भेदे (त०) वधे	चाटयति	क
	१	भेदे	चटति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अ	ग
चड	१	कोपे	चण्डते चण्डे चण्डी		
चड	१०	कोपे	चण्डयते	व	
चण	१	शब्दे	चणति		
चण	१	हिंसागत्योः	चणति		१
चण	१	दाने	चणति चणकः		
चत	१	याचने	चतते (वा) चतति चा- तकः		१—
चद	१	याचने	चदते (वा) चदति		
चद	१	आल्हादने दी- सौ च	चन्दति—चन्द्रः—चचन्द— चन्द्रोज्ज्वलचारुचित्तौ वि- दर्भराजो मिलने मुरारेः		१ १ १
चन	१	हिंसायां-श्रद्धायांच	चनति		१
चन	१	शब्दे	चनति		१
चप	१	सान्त्वने	चपति शिष्यं		१
चप	१०	कलके	चपयति		१
चप	१०	गत्यां	चपति (वा) चपयति		१
चम	१	अदने	चमति (वा) आचमति		१
चम	१	अदने	आचामयति जलं पथिकं साधुः		१ १ १
चम	९	भक्षे	चम्नोति		१
चम्ब	१	गत्यां	चम्बति		१

अ	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क	१	गतौ	चयते	ङ
	१	गतौ (त०) अ- दने	चरति चारः	
	१०	असंशये	विचारयति धर्म पंडितः विचारणा	क
	१	गत्यां	चर्चति	
	१-१०	परिभाषणतर्जन- योः	चर्चते (वा) चर्चयते	ङ कि
	६	परिभाषणतर्ज- नयोः	चर्चति	श
	१०	अध्ययने	चर्चयते वेदं शिशुः च- र्चा.	क ङ
	१	गतौ	चर्चति	
	१	अदने	चर्चति (वा) चर्चयति— चर्चणं	कि
	१	कंपने	चलयति (वा) चालयति तरुं कपिः	म
कं	६	विलसने	चलति भर्त्रा नारी	श
	१०	भृत्यां	चलयति	क
	१	वधे	चषति	
	१	भक्षणे	चषति (वा) चषते चषकं	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अ.	ग.
चह	१	परिकल्कने	चहति तीर्थे लोकः		१-
चह	१०	परिकल्कने	चहयति कपटी		१
चाय	१	पूजानिशामनयोः	चाययति (वा) चायते धर्म		१
चि	१	हिंसायां	चयति	र	१
चि	१	चयने	चयति (वा) चयते		१
चि	९	चयने	चिनोति (वा) चिनुते धान्यं कृषकः		१
चि	१०	चयने	चययति		१
चिक्क	१	आर्त्तौ	चिक्कयति		१
चिट	१	प्रेष्ये	चेटति भृत्यं चेटः चेटी		१
चिट	१०	प्रेष्ये	चेटयति		१
चित	१	संज्ञाने	चेतति प्रलये हरिश्चेतति चिचेत रामस्तत्क्लेशं		१
चित	१०	स्मृत्यां	चिन्तयति चिन्ता		१
चित	१०	संवेदने	चेतयते		१
चित्र	१०	चित्रीकरणे	चित्रयति पटं चित्रकारः चित्रः त्रा-त्रं-चित्रं		१
चिल	६	वसने	चिलति चैलेन मुखं वधुः		१
चिल्ल	१	शैथिल्ये (त०) हावकृतौ	चिल्लति साधुर्दयया चिल्लः		१

अ.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
	१-१०	आमर्यणे मर्षणे	चीकति (वा) चीकयति	कि
	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	ऋ अ
	१	कथने	चीभते	ऋ ड
	१	संवृत्यादानयोः	चीयति (वा) चीयते	ऋ अ
	१०	भाषार्थे-दीप्तौ	चीवयति	क
	१	ग्रहसंवृत्योः	चीवते	ऋ ड
	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	ऋ ड
	१०	व्यसने	चुक्कयति	क
	१	अभिषवे	चुच्यति	ई
	६	छेदे	चुटति	श शि
	१०	छेदने-भेदनेच	चोटयति धान्यं	कं
	१०	छेदने	चुटयति केशं शिशुः	क इ
	१	अल्पीभावे	चोटति वेदः कलौ	
	१	अल्पीभावे	चुण्टति	इ
	१०	अल्पीभावे (अ- थवा) संहतौ	चुट्टयति शोकेन देहः	क
	१	अल्पीभावे	चुण्डति	इ
	१०	छेदने	चुण्डयति	क इ
	६	संवरणे	चुडति	श
	१	हावकरणे	चुड्ढति नटी	
	६	छेदे	चुणति शाकं भिक्षुः	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	गण.
चुत	१	आसेचने	चोतति	१
चुद	१	निशाने	चुन्दति (वा) चुन्दते	१
चुद	१०	संचोदने	चोदयति चोदना	१
चुप	१	मंदायां गतौ	चोपतिखलः	१
चुव		वक्रसंयोगे	चुंवति (वा) चुंवयति	१
चुर	१-१०	स्तेये	चोरति (वा) चोरयति	१
चुर	४	दाहे	चोरः	१
चुरण	११	चौर्ये	चूर्यते	१
चुल	१०	निमज्जने समुच्छ्रा- येच	चुरण्यति	१
चुल्ल	१	हावकरणे	चोलयति गंगायां मुनिः	१
चुलुम्प	१	लोपे	चोलः चोला	१
चूण	१०	संकोचे	चुल्लति प्रियेण नारी	१
चूर्ण	१०	पेषणे-संकोचेच	चुल्ली	१
चूष	१	पाने	चुलुम्पति	१
चृत	६	हिंसायां (त०) ग्रन्थे	चूणयति चूणः	१
चृत	१-१०	संदीपने	चूर्णयति	१
चृप	१०	संदीपने	चूषति स्तनंशिशुः	१
			चृतति चर्त	१
			चर्तति (वा) चर्तयति	१
			चर्पयति	१

गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुयन्ध.
१ १	चेष्टायां	चेष्टते पठितुं	चेष्टा ङ
१	गतौ	चेलति	चेलं ऊ
१	गतौ	च्यवते	ङ
१०	हाससहनयोः	च्यावयति	क
१	आसेचने	च्योताति वङ्गौ हविः, अ- च्युतः, च्योतः	इ र्
१०	हानौ-सहनेच	च्योसयति	
१	अपवारणे	छदति	
१०	अपवारणे	छादयति	क
१०	संवृत्तौ	छदयति	क त
१०	उर्जने	छदयति पुत्रं घृतेन पिता	क इ र् म
१०	संवरणे	छन्दति (वा) छन्दयति	कि इ
१०	गतौ	छंपयति	क इ
	अदने	छमति	उ
१०	वमने	छर्दयत्यन्नं रोगी	क
	द्वैधीकरणे	छिनत्ति (वा) छिन्ते तृण- शिष्यः छेदः	धञ्ज इ र औ
१	विभेदे	छिद्रयति कलशं जनः छिद्रं	क त
६	छेदे-संहतौ	छुटति	श शि
१०	छेदने-संहतौ	छोटयति	क
६	संवरणे	छुडति	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण
छुप	६	स्पर्श	छुपति
छुर	६	छेदे (त०) लोपे	छुरति
छृद	१	संदीपने	छर्दति
छृद	१०	संदीपने	छर्दयाति तेजो ऽर्जु हरिः
छृद	७	देवनद्यातिवमनेषु	छृणात्ति (वा) छृन्ते
छृप	१०	संदीपने	छर्पयति
छेद	१०	द्वैधकिरणे	छेदयति तरुं तक्षा
छो	४	छेदने	छयति धान्यं कृषाणः
छ्यु	४	गतौ	छ्युयते
जक्ष	१	दानगत्योः	जक्षते
जक्ष	२	भक्षहसनयोः	जक्षिति मूलकं
जज	१	युद्धे	जजति
जज	१	युद्धे	जंजति
जट	१	संहतौ	जटति
जन	३	जनने	जजन्ति बीजं जन-जन्मा
जन	४	प्रादुर्भावे	बीजादंकुरो जायते
जन	१०	जनने	जनयति विश्वं वि
जप	१	मानसे	जपति—जपः—जप
जप	१०	संघाते	जापयति

रण.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
	१	यमने	जभति	
	१	यमने	जम्भति	इ
	१	गात्रविनामे	जभते	इ
जुनस्य	१	गात्रविनामे	जंभते	इ ड
	१०	नाशने	जंभयति जंभं शक्रः	इ क
	१	अदने	जमति	क
	६	परिभाषणतर्ज्जनयोः	जर्च्चति	उ
गः	६	परिभाषणतर्ज्जनयोः	जर्छति	श
	६	परिभाषणतर्ज्जनयोः	जर्जति	श
	१०	सयोः		श
	१०	गः परिभाषणतर्ज्जनयोः	जर्झति	श
	१०	वः परिभाषणतर्ज्जनयोः (त०) रक्षे	जर्त्सति	
	११	अपवारणे	जलति	ज
	११	अपवारणे	जालयति विमार्गादात्मानं	क
	१०	व्यक्तायांवाचि	जालं	
	६	हिंसायां	जरूपति	
			जषति (वा) जषते	ब

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
जस	४	मोक्षणे	जस्यति वत्सं गोपः
जस	१०	हिंसायां (त .)	जासयति रिपुं राजा
		अनादरे	
जस	१०	रक्षणे	जंसयति
जस्	१०	ताडने	जासयति (वा) जस
जागृ	२	निद्राक्षये	जागर्त्ति मुनिः
जि	१	जये अभिभवेच	जयति कृष्णः
जिम	१	अदने	जेमति
जिरि	५	हिंसायां	जिरिणोति
जिव	१	प्रीणने	जिवाति
जिवि	५	जिघांसायां	जिविनोति
जिष	१	सेचने	जेषति
जिवि	१	प्राणधारणे	जीवति हरिकथया
			जीवः
जु	१	गतौ	जवते
जु	१	अंहसि	जवति
जुग	१	त्यागे	जुंगति
जुड	६	बन्धे	जुडति जनः सूत्रेण
			स्त्रं, जोडः, जोड
जुड	६	गतौ	जुडति
जुड	१०	प्रेरणे	जुण्डयति भृत्यं र

गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
१	भासने	जोतते विद्यया नरः	ऋ ङ
६	गतौ	जुनति	श
१०	पिषि	जोळयति	क
१-१०	परितर्कणे (त०)	जोषति (वा) जोषयति	कि
जसति	तृप्तौ	धूर्त्तचतुरः	
६	प्रीतिसेवनयोः	जुषते हरिभक्तः	श ङ ई जि
जयः	४ जीर्ण हिंसावयो-	जूष्यते वृद्धः	य ई
	हान्योः		
१	वधे	जूर्वति	ई
१	हिंसायां	जूषति (वा) जूषते	ञ
१	न्यक्कारे	जरति	
१	गात्रविनामे	जर्भते	ङ ई
१	गात्रविनामे	जृंभते (त०) जृंभति-	इ ङ
४	वयोहानौ	जृंभः-जृंभ जृंभं जृंभणं	
९	वयोहानौ	जरिष्यति-जीर्णः-णा-णं	य ष म इ र्
१-१०	वयोहानौ	जृणाति जरया जनः जी-	ग गि
	गतौ	र्णः-णा-णं	
	यत्ने	जरति (वा) जरयति	क कि
	क्षये	जेषते	ऋ ङ
		जेहते	ऋ ङ
		जायति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
जि	१	अभिभवे	जयति धर्म कलिः
जी	९	ज्याने	जिणाति
ज्ञा	९	अवबोधने	जानाति
ज्ञा	१०	मारणतोषणनिशा- मनेषु (त०) स्तु- तौनिशाने च	ज्ञपयति रिपुं राजा पयति मित्रं नरः ज्ञप- ति पांडित्यं सभायां
ज्ञा	१०	नियोजने	ज्ञापयति भृत्यं राजा
ज्ञप	१०	मारणतेषण नि- शामनेषु स्तुतौ च	ज्ञपयति
ज्या	९	जरायां	जिनाति
ज्यु	१	गत्यां	ज्यवते
ज्युत	१	भासने	ज्योतति
ज्युत	१	भासने	ज्योत्ते
ज्यो	१	नियमवृतादेशोपा- नीतिषु	ज्यवते
ज्वर	१	रोगे	ज्वरत्यजीर्णेन
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति वह्निः ज्वा-
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति (वा) ज्वा-
			यति चित्तं क्रोधः प्र-
झट	१	संधाते	लयति झटति केशः

गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
१	अदने	झमति	उ
६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्चति	श
६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्छति	श
१	परिभाषणतर्जनयोः	झर्झति झर्झरः	श
६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्झति	—
१	ग्रहे	पिधाने-झषति (वा)	ञ
१	हिंसायां	झषते	—
१	गतौ	झपाति झषः	—
१	हिंसायां	झवते	ड
४	वयोहानौ	झूषति	—
१०	बन्धे	झीर्ग्यति-झीर्णः-णा-णं	य ष
१	विच्छेदे	टण्कयति-टण्कः-विटण्कः	क इ
१	गत्यां	टलति	ज
१०	क्षेपे	टैकते	ऊ ड
१	गत्यां	टैपयति	क
१	गत्यां	टीकते	अह ड
१	गत्यां	टौकते	अह ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण
डल	१	विक्रवे	डलति
डप	१०	संहतौ	डपयते
डप	१०	संहतौ	डंपयते
डब	१०	क्षेपे	डंबयति
डिप	४	क्षेपे	डिप्यति
डिप	६	क्षेपे	डिपति शरं
डिप	१०	क्षेपे	डेपयति
डिप	१०	संहतौ	डेपयते
डिप	१०	संहतौ	डिंपयते
डिव	१०	क्षेपे	डिंबयति
डिभ	१०	संघाते	डिंभयते
डी	४	गतौ	डीयते पक्षी
डी	१	विहायसागतौ	डयते गगने हंसः, नं, संडीनं, उड्डीनं
डुब	१०	अदने	डुंबयति
डुभ	१०	संघाते	डुंभयते
णक्ष	१	गतौ	नक्षति
णख	१	गतौ	नखति
णख	१	गतौ	नखति
णट(इ ति)नट	१	नृत्ये	नखति प्रयागात् का नाटयति

गण.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
	१	नृत्ये (त.) हिंसायां	णटति	
	१	म्लिष्टौक्तौ	नदति	नद
	१०	भाषार्थे (चा०) भाषार्थे	नादयति	क
	९	हिंसायां	नभ्राति	ग
	१	हिंसायां	नभते	नाभिः ल ड
	४	हिंसायां	नभ्यति	य
(वा)	१	प्रह्वशब्दे	नमति, प्रणमति	गुरुं शि-
	१	रक्षणे (त०) गतौ	नयते	प्यः, प्रणामः
	१	"	(इति नर्दः)	ड
	१	बन्धे-गन्धे च	नलति	
	४	अदर्शने	नश्यति	कामः नाशः
	१	कौटिल्ये	नसते	खलः य ल उ
	४	बन्धने	नह्यति (वा) नह्यते	
	१	"	(इति नाथ)	य ज औ
	१	ऋ	(इति नाघ)	
	१	शब्दे	नासते	ऋ
	३	शौचे	नेनेक्ति (वा) नेनेक्ति	ऋ ड
			नासा	ज-लि, इर, ज, औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण
णिज	२	श्रुद्धौ	प्रणिक्ते जलेन ग
णिद	१	कुत्सायां (त.)	नेदति (वा) नेदते
		सान्निधौ	नं साधुः निद्यते
णिद	१	कुत्सने	निन्दति इति
णिल	६	गहने	निलति
णिव	१	सेके	निंवति
णिश	१	समाधौ	नेशतिमुनिः
णिष	१	सेके	नेषति
णिस	२	चुंवने	निस्ते हरिमुखं नन्
णी	१	प्राप्णे	कृष्णं मथुरां नयते
			नयत्यक्रूरः नयः
णील	१		नीति नायकः
णवि	१		(इतिनील)
णु	२	स्तुतौ	(इतिनीव)
णुद	६	प्रेरणे	नौति
			नुदति (वा) नुदते
णू.अ.)	६	स्तवने	नाय पुत्रं पिता
णु-			नुवति हरिं मुनिः
णेद-इ	१	कुत्सायां (त.)	नेदति (वा) नेदते
ति णिद		सान्निधौ	

गण.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गावं	१	गतौ	नेषते	ऋ ङं
इते पापि	१	सहनहामयोः	तकति	ड इ
ते निद	१	गतौ	तकते	इ
निश	१	कृच्छ्रजीवने	तंकति	ऊ
नन्दः	१	तनूकरणे त्वचनेच	तक्षति वृक्षं तक्षा	इ
ते (वा)	१	गतिकंपस्वलनेषु	तगति	उ
नाय	७	संकुची	तनक्ति	ध
तड	१	गतौ	तंचति	उ
तड	७	संकोचे	तनक्ति	ध
तड	१	उच्छ्राये	तटति	उ
तड	१०	आहतौ	तटयति	क
तड	१०	आघाते (त.)	ताडयति ताम्रं ताम्रकारः	क
तड	१	त्विषि	तण्डतेरिपुं	ड इ
तड	११	तडने	तंतस्यति	ट
तड	१	दुःखे	तन्दते गृहे नरः	इ
तड	१	करुयाणे	तनोति (वा) तनुते तन्त्रं	द न ऊ
तड	८	विस्तारे	तन्तुवायः वितानः	किं उ
तड	१-१०	श्रद्धोपतापयोः	तनति (वा) तानयतिज्ञा	
		(तथा) उपकृतौ	निवाक्यंजनः	
		श्रद्धाघातेशब्देच	यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
तप	१	संतापे	तपति ता
तप	४	ऐश्वर्ये	तप्यते सेनया राज
तंप	१-१०	दाहे	तपते (वा) तापयते
तंब	१	गतौ	तंबति
तम	४	ग्लानौ (त०)	ताम्यति दुराचारेण
		इच्छायां	
तय	१	गतिरक्षयोः	तयते
तरण	११	गतौ	तरण्यति
तत्र	१०	कुटुंबभरणे	तन्त्रयतेकुतन्त्रेणकुम
तर्क	१०	भाषार्थे दीप्तिर्क	तर्कयति
		योश्च	
तर्ज	१	तर्जने	तर्जति तं ततर्जानिलात
तर्ज	१०	तर्जने	तर्जयते
तर्द	१	हिंसायां	तर्दति तत
तर्ब्ब	१	गतौ	तर्ब्बति
तल	१-१०	प्रतिष्ठायां	तलति (वा) तालयति
			वालये राजा तलः तालु
तस	४	उत्क्षेपणे	तस्यति मल्लो मल्लं वि
			तस्तिः
तस	१-१०	अलंकारे	तंसति (वा) तंसयति उ
			तंसः अवतंसः

ग.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तापः	४	उपक्षये	तस्यति	उ य
जा	१	संताने पालने च	तायते धर्म साधुः	ऋ ङ
यते	१	गतौ	तेकते	ऋ ङ
ग विप्रः	५	जिघांसायां	तिक्कोति	न
	५	जिघांसायां (त.)	तिग्नोति	न
		स्कन्दनेच		
मातिः	६	घातने	तिघ्नोति	न
	९	निशाने क्षमायां च	तितिक्षते खलं साधुः	ङ
	१०	निशाने	तेजयति शूलं भट्टः ते- जना	क
शाल्मजः	१	क्षरणे (त.) द्युति	तेपते जलं घटात्	उ ऋ ङ
तर्द	४	आर्द्रभावे	तिम्यति तैलेन देहः	य
	६	स्नेहने	तिलति तैलेन गात्रं तिलः	श
ते दे-	१०	स्नेहने	तेलयति तैलेन देहं	क
गालुः	(वा)	१ गतौ	जनः तेलति	
वि-		११ अन्तर्द्धौ		
उ-	१	गतौ	तिरस्यति कुटिलो वार्त्ता छद्मना वीकते	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण
तीम	४	आर्द्रभावे	तीम्याति तैलेन दे
तीर	१०	समाप्तौ	तीरयति त
तीव	१	स्थौल्ये	तीवति
तु	२	गतिवृद्धिवृत्तिहिंसापूर्तेषु	तौति
तुज	१	हिंसायां	तोजति
तुज	१०	भ. पार्थे	तुंजयति
तुंज	१०	हिंसायां	तुंजयति
तुज	१०	हिंसाबलादाननिकेतनेषु	तोजयति
तुंज	१	हिंसाबलवेष्टनप्राणनेषु	तुंजति तुंगः
तुट	६	कलहकर्म्मणि	तुटति खलः पित्रा
तुड	१	तोडने	तोडति जरासंधं भ
तुड	६	तोडने	तुडति बन्धनं
तुड	१	तोडने(त.)वधे	तोडनं
तुड्	१	अनादरे	तुंडते तृणं
तुण	६	कौटिल्ये	तुड्ति
तुत्थ	१०	स्तृतौ	तुणति खलः तुत्थयति

रण.	तु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
देहः तीरं	द	६	व्यथने	तुदति (वा) तुदते विधुं तुदो विधुं तोत्रं	श ज औ
इ(त.)	१	चेष्टायां		तुन्दति सुखाय तुन्दं	इ
तुतो	१	वधे		तोपति	
तुप	१०	तर्दने		तुपयति	क इ
तुप	६	हिंसायां		तुपति	श प
तुप	६	हिंसायां (त०)		तुपति	श
तुप	१	क्लिशि			
तुप	१	वधे		तुपति	
तुफ	६	हिंसायां		तुफति	
तुफ	६	हिंसायां		तुफति	श
तुफ	६	तृप्तौ		तुफति	
तुव	१-१०	अर्दने अदर्शनेच		तुवति भोजने-विप्रः तुवति (वा) तुंवयति-	श कि इ
तुम	१	हिंसायां		तुंवी	
तुम	४	हिंसायां		तोभते	
तुम	९	हिंसायां		तुभयति	ल ड
तुर	३	त्वरणे		तुभ्राति	य
तुरण	११	त्वरायां		तुतोर्त्ति लुब्धो, धनाय तुरितं, तुरा, तुरा, तुरंगः तुरण्यति :	ग लि र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
तुर्व	१	हिंसायां	तुर्वति
तुल	१०	पूरणे	तोलयते
तुल	१-१०	उन्माने	तोलति (वा) तोलयति
ष	४	तुष्टौ	कांचनं जनः तुला तुष्यति तुष्टः, टा, टं, य
स	१	शब्दे	तुष्टिः
श	१	अर्दने	तोसति
ड	१	अनादरे, तोडनेच	तोहति
ग	१०	संकोचे	तूडति
ग	१०	पूरणे	तूणयति
	४	चरणे, हिंसायां	तूणयते, तूणः, तूणा,
	१	निष्कर्षे	तूणी, तूणीरः
	१	तुष्टौ	तूर्यते याचकः
	१	गतौ	तूलतिकनकं तूलिका
	<	अदने	तूषति कृष्णः
	७	हिंसादनयोः (त.)	तृक्षति तृक्षः ताक्ष्य
		अनादरे	तृणोति (वां) तृणुते तृ- णं वृषः
			तृणात्ति (वा) तृत्ते

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तृप	१-१०	प्रीणने (त.) सं- जीप्सेसंदीपे	तर्प्पति (वा) तर्प्पयति हविषा वह्निं विप्रः	कि
तृप	४	प्रीणने	तृप्यति पयसा बालः तृ- प्तिः तर्पणं	य जि उ
तृप	५	प्रीणने	तृप्नोति	न
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श प
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श
तृफ	६	तृप्तौ	तृफति भोजने विप्रः	श
तृप	४	पिपासायां	तृप्यति चातकः तृट् तृषा	य इर जि
तृह	७	हिंसायां	तृष्णः णा-णं-तृष्णा	श ऊ
तृह	१	वृद्धौ	तृणेढि रिपुं जनः	ध ऊ
तृह	१	हिंसायां	तृंहति	इ
तृ	१	तरणाभिभ—	तृहति	श ऊ
तृ	९	वप्लवनेषु	तरति गंगां धीवरः तर-	
तृ	९	हिंसायां	णिः तरणी तरिः तरी	
तेप	१	हिंसायां	तृणाति	
तेव	१	कम्पेक्षरणे	तृणाति (वा) तृणीते	अ ग
तोड	१	द्युत्यांच	तेपते	क ऊ
	१	देवने	तेवते	क ऊ
	१	अनादरे	तोडति	क ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
तौक	१	गतौ	तौकते
त्रक	१	गतौ	त्रंकते
त्रख	१	गतौ	त्रखति
त्रख	१	गतौ	त्रंखति
त्रग	१	गतौ	त्रंगति
त्रद	१	चेष्टायां	त्रंदति
त्रप	१	लज्जायां	त्रपते वधूः
त्रस	१	उद्वेगे	त्रसति
त्रस	४	उद्वेगे	त्रस्यति खलात्साधुः त्रास-
त्रस	१०	निवारणे(त.) ग्रेह- निषेधेद्युतौ	त्रासयति शत्रुं शूरः
त्रस	१-१०	भाषार्थे(वा)भासि	त्रंसति (वा) त्रंसयति
त्रुट	४	छेदने	त्रुटयति
त्रुट	६	छेदने	त्रुटति
त्रुट	१०	छेदने	त्रुटयते
त्रुप	१	वधे	त्रुपति
त्रुप	१	वधे	त्रुंपति
त्रुफ	१	हिंसायां	त्रोफति तस्करो घनाय
त्रै	१	पालने	पांथं
त्रौक	१	गतौ	त्रायते
			त्रौकते

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
त्वक्ष	१	तनूकरणे	त्वक्षति वृक्षं	
त्वक्ष	१	त्वचोग्रहे	त्वक्षति	
त्वग	१	गतिकर्म्ययोः	त्वंगति	इ
त्वच	६	संवरणे	त्वचति दोषं दानेन दा- ता, त्वचं, त्वक्, त्वचा	श
त्वंच	१	गतौ	त्वंचति	उ
त्यज	१	हानौ	त्यजति गृहं यतिः	औ
त्वर	१	सम्भ्रमे	त्यागः	
त्सर	१	छद्मगतौ	त्वरते भोजनाय त्वरा	जि ष म ड
त्विष	१	भासे	त्सरति खलः त्सरुः	
थुड	६	संवृत्तौ	त्वेषति (वा) त्वेषते	औ ज
थुर्व	१	हिंसायां	थुडति	श शि
दक्ष	१	हिंसायां	थुर्वति	ई
दक्ष	१	वृद्धौ(त.) स्यंदे	दक्षते	म ष ड
दघ	१	घातने	दक्षते धर्मेण	ड
दघ	९	घातने-पालनेच	दंघति	इ
दंड	१०	दंडनीपातने	दघ्नोति	न
दद	१	दाने(त.) धृतौ	दण्डयति दण्डयं राजा	क त
दध	१	धारणे(त.) दाने	दंडः	
			ददते	
			दधते	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
दध	१	पालने	दधति कृष्णं नन्दः
दभ	१०	नोदे	दभयति
दभ	१०	नोदे	दंभयति
दंभ	५	दंभे	दभ्नोति धूर्तः
दंभ	१०	संवाते	दंभयते
दम	४	उपशमे	दाम्यति मुनिः, दमः दान्तिः, दान्तः, ता तं
दय	१	गतौ दाने हिंसायां	दयते
दरिद्रा	२	दुर्गतौ	दरिद्राति दरिद्रः
दल	१०	विदारणे	दालयति
दल	१	भेदे-विशरणे	दलति दलं
दव	१	व्रजे	दंवति
दश	१०	भाषार्थे-त्विषि	दंशयति
दश	१०	दंशने(त.) दर्शे	दंशयते मूलं दंशः
दंश		दशने	दशति मूलं दंशः
दस	४	उत्क्षेपे	दस्यति
दस	१०	दंशने	दंसयते गात्रं
दस	१०	भासि	दंसयति
दस	१०	दंशने-दर्शनेच	दसयते श्रीकृष्णं भक्तः
दस	४	उपक्षये	दस्यति
दह	१	भस्मीकरणे	दहति वनं वह्निःदाहः

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दह दा	१० ३	दीप्तौ-दाहेच दाने	दंहयति ददाति गां विप्राय (अ- थवा) दत्ते, आ उपसर्गे आदत्तः	क इ लि ड डु
दा दाणइ- तिदा दान	२ १ १	लवने दाने	दाति दात्रेण धान्यं यच्छति धनं विप्राय	ल प
दाय दाश	१ १	अवखण्डने(अथवा) आर्ज्जवे दाने	दीदांसति (वा) दीदां- सते काष्ठं वर्द्धकि दायते	उ ड
दाश दाश दास	१ १ १०	दाने	दाशति (वा) दाशते वि- प्राय वस्त्रं दाशयते	ऋ ड ऋ व
दास दिप दिप दिप	१ १० १ १०	हिंसने दाने निघांसायां(त.)वधे संघाते संघाते नोदे	दाशनोति दासति (वा) दासते दासः दासोति रिपुं दिपयते दिपति (वा) दिपते दिभयति	क ऋ ड न र ऋ व न र क ड अ क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
दध	१	पालने	दधति कृष्णं नन्दः
दभ	१०	नोदे	दभयति
दभ	१०	नोदे	दंभयति
दंभ	५	दंभे	दभ्नोति धूर्तः
दंभ	१०	संघाते	दंभयते
दम	४	उपशमे	दाम्यति मुनिः, दान्तिः, दान्तः, तः
दय	१	गतौ दाने हिंसायां	दयते
दरिद्रा	२	दुर्गतौ	दरिद्राति दरिद्रः
दल	१०	विदारणे	दालयति
दल	१	भेदे-विशरणे	दलति दलं
दव	१	व्रजे	दंवति
दश	१०	भाषार्थे-त्विषि	दंशयति
दश	१०	दंशने(त.) दर्शे	दंशयते मूलं दंशः
दंश		दशने	दशति मूलं दंशः
दस	४	उत्क्षेपे	दस्यति
दस	१०	दंशने	दंसयते गात्रं
दस	१०	भासि	दंसयति
दस	१०	दंशने-दर्शने च	दसयते श्रीकृष्णं भक्तम्
दस	४	उपक्षये	दस्यति
दह	१	भस्मीकरणे	दहति वनं वह्निः दहति

गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
१० दाने	दातौ-दाहेच	दंहयति	क इ
३ दाने		ददाति गां विप्राय (अथवा) दत्ते, आ उपसर्गे आदत्तः	लि ड डु
२ लवने		दाति दात्रेण धान्यं	ल प
१ दाने		यच्छति धनं विप्राय	
१ अवखण्डने(अथवा) आर्जवे		दीदांसति (वा) दीदांसते काष्ठं वर्द्धकि	उ ड
१ दाने		दायते	
१ दाने		दाशति (वा) दाशते विप्राय वस्त्रं	ऋ ड ऋ व
१० दाने		दाशयते	
५ हिंसने		दाश्नोति	क ऋ ड
१ दाने		दासति (वा) दासते	न र
५ जिघांसायां(त.)वधे		दासः	ऋ अ
१० संघाते		दास्नोति रिपुं	
१ संघाते		दिपयते	न र
१० नोदे		दिपति (वा) दिपते	क ड
		दिभयति	अ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
दिभ	१०	संघाते	दिभयते
दिव	१०	अर्ह	देवयति
दिव	१	प्रीतौ	दिंवति
दिव	४	क्रीडाविजिगीषा- व्यवहारद्युतिमोदम- दस्वप्नकांतिगतिषु	दिव्यति—दिदेव
दिव	१०	पङ्क्तिजने	परिदेवयतेप्रातः—प
दिश	६	अतिसर्जने (अथ- वा) शौचे	दिशते
दिष	१०	मर्द्दने	देषयति (वा) देषति
दिह	२	उपचये	कामिन्याः देग्धि (वा) दिग्धे
दी	४	क्षये	धृतेन दीयते
दीक्ष	१	मौज्ये—उपनयने ब्रेतादेशेच	दीक्षते. कार्तिकपू- यां यतिः दीक्षते पिता—दीक्षते
दीधी	२	दीप्तिदेवनयोः	दीक्षा
दीप	४	दीप्तौ-क्षरणेच	दीधीते गगने भानु
दु	१	गतौ	दीप्यते दवति

हरण.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
	९	उपतपे-अनुतापेच	दुनोति चेतः कामेन— दवः—दावः—	न टु औ
दिदेव	१०	तत्क्रियायां	दुःखयति	क त
	११	तत्क्रियायां	दुःरुयति	ट
	१	हिंसायां	दूर्वति	इ
प्रातः—पक्ष	१०	उत्क्षेपे	दोलयति तृणं वायुः, दोला, दुलि, दुला	क
	४	वैकृत्ये	दुप्यतिदुष्टसंगत्या साधुः दोषः दोषण, दूषणं	य इर औ
वा) देशति	१	अर्दने	दोहति	इर
	२	प्रपूरणे	गां दोग्धि पयो गोपः	ल औ
ता) दिग्धे	४	परितापे	दुग्धं—दुदोह गां सहजाय	
	६	आदाने	दूयते परदुःखेन साधुः आद्रियते साधुरतिथिं	य ड ओ
कार्तिकपूर्णि	१-१	संदीपने	आदरः आदृतः ता तं	श ड
नेः दीक्षते	४	हर्षगर्वयोःमोहनेच	दर्पति (वा) दर्पयति	कि
क्षते	६	बाधने	दृप्यति	यजिऊइर
	१	बाधने	दृपति	श
गगने भानुः	१०	संघाते	दृपति (वा) दृपते	ब
	६	संक्षेपे	दृपयते	क ड
			दृपति रिपुं राज्ञः	श प

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
दंफ	६	संक्लेशे	दृफति रिपुं राजा
दृभ	६	ग्रंथे	दृभति माल्यं
दृभ	१-१०	भये संदर्भे	दर्भति (वा) दर्भयति
दृश	१	प्रेक्षणे	पश्यति
दृह	१	वृद्धौ	दर्हति
दृह	१	वृद्धौ	दृंहति
दृह	९	भये	दृणाति
दृह	१	भये	दरति
दृह	९	विदारणे	दृणाति
दृह	४	विदारणे	दृयति
दृह	५	हिंसायां	दृणोति
दृह	१	पालने	दानं दयते
दृह	१	क्षरणे	देषति
दृह	१	देवने—परिवेदनेच	देवते देवः स्वर्गे
दृह	१	शोधने	दायति जलेन देहं
दृह	४	अवखण्डने	शिरः शत्रोरवच्छति
दृह	२	अभिगमने	द्यौति रामो जरासंधं
द्युत	१	दीप्तौ	द्योतते
द्यु	१	न्यक्करणे	द्यायाति खलं साधुः
द्रम	१	गतौ	द्रमाति
द्रवस्	११	परितापे	द्रवस्यति

हरण.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
राजा	२	कुत्सायां (त०)	द्राति निद्राया निद्रालुः	
पं		पलायने		ई
) दर्भयति	१	घोरवासिते (त०)	द्राक्षति	
		कांक्षे		ऋ
	१	शोषणालमथर्योः	द्रास्वति हिमेन वृक्षः	ऋ ङ
	१	आयासे-सामर्थ्येच	द्राद्यते मोक्षे मुनिः श्र-	
			मायामशक्तिषु	
	१	विशरणे	द्राडते पुष्पं	ऋ ङ
	१	जागरे, निक्षेपेच	द्राहते	ऋ ङ
	१	गतौ	द्रवति लोहं द्रावः	
	१	अनुतापे	द्रवति	र ण
	१	मञ्जने	द्रोडति	
	६	मञ्जने	द्रुडति	
	६	गतौ, जैह्वे, वधे	द्रुणति हयः द्रोणेः	श शि
स्वर्गे	४	जिघांसायां	द्रुह्यति रिपुं राजा द्राहः	श
लेन देहं	९	हिंसायां-गतौ	द्रूणाति (वा) द्रूणीते	य ल ङ
घोरवद्यति	१	शब्दोत्साहयोः	द्रेकते युद्धे वीरः	ग ञ
यो जरासंधं	१	स्वप्ने	द्रायति रात्रौ लोकः,	ऋ ङ
वलं साधुः	१	स्थगने	निद्रा, निद्रालुः	
			द्वरति	

धातु.	मण.	अर्थ.	उदाहरण.
द्विष	१	अप्रीतौ	द्वेषति (वा) द्वेषते द्वेष
द्विष	२	अप्रीतौ	द्विषन्ति मंदाश्चरितं हात्मनां (त०) द्विष द्वेषः
धक्क	१०	नाशने	धक्कयति
धण	१	ध्वाने	धणति
धण	१	र वे	धणति
धन	२	धान्ये	दधन्ति शालिं धनं धान्यं
धर्ज	१	गतौ	धर्जति
धव	१	व्रजे	धंवति
धा	३	धारणपोषणयोः (त०) दाने	दधाति (वा) धत्ते
धाव	१	गतौ—श्रुद्धौ च	धावत्यश्वः धावति (वा) धावते कोष्ठेन दन्ताव
धि	५	प्रीणेन	धिनेति हव्येन हि ण्यरेतसं
धि	६	धारणे	धियति वेदं बालः
धिक्ष	१	संदीपने-जीवने-क्ले- शने च	धिक्षते वान्हिः काष्ठेन

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
धू	१०	कपेन	धावयति (वा) धावय ते धूनयति (यथा) वायुर्विधूनयति केसर- पूष्पंजातं.
धूक्ष	१	संदीपनेजीवने-क्ले- शनेच	धूक्षते वान्हिः काष्ठेन
धूप	१	संतापे	धूपायति
धूप	१०	भाषार्थे (त०) दीप्तौ	धूपयति
धूश	—	—	इति धूस (तथा) धू
धूप	१०	धूशे	(इतिधूस)
धूष	१०	संहतौ हिंसे	धूषति
धूस	१०	कान्तिकरणे	धूसयत्यंगं कुंकुमे जनः
धृ	१	धारणे	धरति (वा) धरते
धृ	१०	धृतौ	धुरं, धुर्यः धुरंधरः
धृ	६	अवस्थाने	धारयति
धृ	१	हूँने	ध्रियते यावदेकोपि रिपुं
धृ	१	सेचने	धरति.
धृ	१	अवध्वंसे	धरति मेघो भूमिं
धृज	१	गतौ	धरते धर्जति

अ. नं.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धृज	१	गतौ	धृजति	इ
(यथा) केसर	१-१०	प्रहसने-अमर्षेच	धर्षति (वा) धर्षयति	कि
धृष	१०	शक्तिवन्धे	धृष्टो धार्मिकं	क ड
काष्ठेन	९	प्रागरुम्ये	धर्षयते	न जि आ
धे	१	पाने	धृष्णोति सभायां देवद-	
क	१०	दर्शने	त्तः धृष्टः, टा टं:	ट
गोर	१	गतिचातुर्ये	धयति वत्सो धेनुं	क
था) धृ	१	शब्दाग्निसंयोगयोः	धेकयति कपर्द्दिनं शैवः	
प्राक्षत-	१	घोरवासिते (त०)	धोरत्यश्वः	
वाक्ष	१	कांक्षे	धमति शंखं कृष्णः-	
धै	१	चिंतायां	धमति लोहं लोहकारः	इ
रंधरः	१	गतौ	ध्माक्षति ध्माक्षः	
लोपि रिपुं	१	गतौ	ध्यायति हरिं यतिः	
मिं	१	गतौ	ध्यानं	
	१	ध्वाने	ध्रजति	
	१	उत्क्षेपे-उञ्छे	ध्रंजति	
	१०	उत्क्षेमे	ध्रणति (तथा) ध्व-	इ
			णाति	
			ध्रस्नाति	
			धासयति	ग ड
				क

सु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
क्ष		घोरवासिते (तं०)	ध्रांक्षति
	१	कांक्षे	
ख	१	शोषणालमर्थयोः	ध्राखति हिमेन वृक्षः
घ	१	शक्तौ	ध्राघते
ङ	१	विशरणे	ध्राङते पुष्पं
ज		गतौ	ध्रैजति
व	६	गतिस्त्रैर्ययोः	ध्रुवति
वू	६	गतिस्त्रैर्ये	ध्रुवति ध्रुवः
क	१	शब्दोत्साहयोः	ध्रैकते
घै	१	तृप्तौ	ध्रायति
ज	१	गतौ	ध्वजति ध्वजः
ज	१	गतौ	ध्वंजति
ण	१	ध्वाने	(इतिध्वन)
न	१	शब्दे	ध्वनति ध्वनिः ध्वनः
न	१०	शब्दे	ध्वनयति ध्वनः ध्वनिः
न	१०	शब्दे कंठे	ध्वनयति धनुर्द्धन्वी (वा)
			ध्वानयति (यथा) ध्वा-
स	१	गतौ चूर्णने भ्रं-	नयति वृक्षं वायुः
		शेच	ध्वंसते
वृ	११	वर्णे, कौटिल्येच	ध्वरति वशं अध्वरः

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ध्वाक्ष	१	घोरवासिते	ध्वांक्षति	इ
नक्क	१०	नाशने	नक्कयति	क
नख	१	सर्पणे	नखति	इ ओ ङ
नज	१	न्हिग्ये	नंजते	
नट	१	नृत्ये (त०) हिंसायां	नटति नटः	
नठ	१०	अवस्यंदने, भ्रंशे, दीप्तौ च	नाटयति हस्तं नटी	क
नड	१०	भ्रंशे	नाडयति	क
नंद	१	अव्यक्तेशब्दे	नदति नदी	
नद	१	समृद्धौ	नन्दति-ननन्द पारिप्लव-नेत्रया नृपः नन्देत चकुलं पुंसां	इ टु
नम्ब	१	गतौ	नम्बति	
नम	१०	नत्यां	नामयति (वा) नमयति	
नम	१	प्रव्हेशब्दे	नमति, प्रणमति गुरुं शिष्यः, नमस्कारः	
नय	१	गतौ	नयते	
नर्द	१	शब्दे	नर्दति ननर्दचासुरः सोपि	ङ
नर्व्व	१	गतौ	नर्व्वति	
नल	१०	अपवारणे	नालयति (वा) नलति	कि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.
नल	१०	दीप्तौ	नालयति
नह	४	बंधने	नह्यति (वा) नह्यते
नाथ	१	याञ्चोपतापैश्वर्या- सीःषु	नाथते (तथा) नाथति (यथा) नाथतिखलः साधुं नाथति याचकोवदा- न्यं नाथः
नाध	१	याञ्चौपतापैश्वर्या- शीःषु	नाधते
निक्ष	१	चुंबने	निक्षति मुखं
निद	१	कुत्सायां	निन्दति निन्दा
निष	१	संचने	नेषति
निष्क	१०	परिमाणे	निष्कयते निष्कः
नील	१	वर्णे	नीलति पट नीलः नीली
नीव	१	स्थौल्ये	नीवति
नुड	६	वधे	नुडति
नृत	४	गात्रविक्षेपे	नृत्यति नर्तकः
न	१	नये	नराति
क्ष	९	नये	नृणाति नरं राजा
पक्ष	१०	परिग्रहे	पक्षयति पक्षः

अनुबन्ध.	उदाहरण.	अर्थ.	गण.	धातु.
ज औ ष	पचति (वा) पचते पचा पाकः पचनं पक्कः का कं	पाके	१	पच
ड औ	पचते गुणं कविः	व्यक्तीकरणे	१	पच
इ ड	पंचते	व्यक्तीकरणे	१	पच
क इ	पञ्चयति पाञ्जिकां भिक्षुः	विस्तारे	१०	पच
क त	पटयति माल्यं माल्यकारः	अथे (त०) वेष्टने	१०	पट
क	पाटयति	भाषायां-त्विषि	१०	पट
	पटति	गतौ	१	पट
	पठति पाठं पाठकः	व्यक्तायांवाचि	१	पठ
क	पडयति	संहतौ	१०	पड
क इ	पण्डयति	संहतौ-नाशनेच	१०	पड
ड इ	पण्डते पण्डा पण्डितः	गतौ	१	पण
ड	पणते वाणिगापणे पणः	व्यवहारे (त०)	१	पण
क त	पणायते हरिं विप्रः	स्तुतौ	१०	पण
	पणयत्यापणे उपसर्गेप्र-	व्यवहारे	१०	पण
	पाणयति	गत्यां ऐश्वर्ये	१	पत
	पतति	ऐश्ये	४	पत
ल ज	पत्त्यते	गतौ (त०) ऐश्ये	१	पत
य ड	पतयति पतं गोगगने	गतौ	१	पय
क त	पथति			

गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनु.	धातु.
१०	गतौ	पंथयति	पांथः	पल
१०	प्रक्षेपे	पाथयति		पल्युल
१	स्थैर्ये	पदति		पल्यूल
४	गतौ	पद्यते	य इ	पश
१०	गतौ	पदयते	क त	पश
१	व्यवहारे (त०)	पनते वणिगापणे इति		
	स्तुतौ	पण पनायति हरिं विप्रः		पश
११	दुःखे	पंपस्यति गदेनार्त्तः	ट	
१	गतौ	पंथति		पष
१	गतौ	पयते	इ	
११	प्रसृतौ	पयस्यति	ट	पष
१०	हरितभावे	पर्णयति तरुपर्ण भेषः	क	पष
		पर्ण, पर्णः		
१	गतौ	पर्पति		
१	कुत्सितेशब्दे	पर्दते गर्दभः		पस
	व्यवहारे, स्तुतौच			पस
१	गतौ	पर्बति		पस
१	पूरणे	पर्बति		पा
१	स्नेहने	पर्षते पुत्रे पिता पर्षतू-स	अ	पा
		स्पर्षते		पार
१	गतौ	पलति (वा) पलति	अ	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पल	१०	रक्षणे	पालयति (वा) पलयति	क
पल्युल	१०	लूनिपूत्योः	पल्युलयति	क त
पल्यूल				
पश	९	बाधे-ग्रंथे च	पशति (वा) पशते	अ
पश	१०	बन्धे	पाशयति पाशेन पशुं गो- पः पाशः	क
पश	१०	बन्धवाधयोः- स्पर्शगत्योश्च	पाशयति पाशः	क त
पष	१	वाधनस्पर्शयोः	पषति (वा) पषते	अ
पष	१०	बन्धे-स्पर्शने ग्रंथे बन्धे-अनुपसर्गात्- गतौ	पपयति.	क
पष	१०	बन्धवाधयोः स्पर्शगत्योश्च	पषयति	क त
पस	१	वधग्रंथयोः	पसति (वा) पसते	अ
पस	१०	बन्धे	पसयति	क
पा	१०	नाशने	पंसयति	क इ
पा	१	पाने	पिबति	पांसुः पानं
पार	२	रक्षणे	पाति पुत्रं पिता	ल
	१०	समाप्तौ	पारयति राजसूयं धिरः पारणापारं	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	धातु.
पाल	१०	रक्षणे	पालयति	पिष
पि	६	गतौ	पियाति	पिष
पिच्च	१०	कुट्टने	पिच्चयति सोमं	पिस
			सोमपाः	पिस
पिछ	६	बाधे	पिच्चटं	
पिछ	१०	कुट्टने	पिछति	
पिज	१०	निकेतने	पिछयति	पिस
पिज	२	वर्णे-वर्णपूजयोः	पेजयति	पिस
पिज	१०	हिंसायां-भाषद्दार्थे-	पिंक्ते पिंजरः	पिस
		षट्पवलादाननिकेत-	पिंजयति	पी
		नेषु		पीड
-पिट	१	संहतौ (त०)	पेटति धान्यं	पील
		ध्वनौ	पेटकः	पीव
पिठ	१	हिंसायां (त०)	पेठति	पुच्छ
		क्लिशि		पुट
पिड	१	संघाते	पिण्डते	
पिड	१०	संघाते	पिण्डयति	पिण्डः
पिल	१०	क्षेपे	पिडयति	पिडः
पिव	१	सेचने	पेलयति	
पिश	६	अवयवे	पेवते	
पिष	७	संचूर्णे	पिंशाति	पेशी
			यवंपिनष्टिचेटी	पेषः

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पिष	१०	हिंसायां	पेषयति	क
पिष	१	गतौ	पेषति	
पिस	१	गत्यां	पेसति	ऋ
पिस	१०	निकेतने हिंसावल- दानेषु गत्यांच.	पेसयति	क
पिस	१०	भाषार्थे, त्विषिच	पिसयति	क इ
पिस	१-१०	त्विषि	पिसयति (वा) पिसति	किं इ
पिस	१०	नाशे	पिसयति	क इ
पी	४	पाने	पीयते पयः शिभुः	य ड
पीड	१०	अवगाहने (त०) वधे	पीडयति प्रजामवग्रहः पीडा	क ऋ
पील	१	प्रतिष्ठे	पीलति	
पीव	१	स्थौल्ये	पीलति बालः पीलुः	
पुच्छ	१	प्रमादे	पीवति पीवरः	
पुट	१०	भाषार्थे-चूर्णे मा सिचं	पुच्छति कृत्ये मूढः पुच्छं पोटयति	क
पुट	६	संश्लेषणे		
पुट	१०	संसर्गे	पुटति कामं रतिः पुपोट	श शि
पुट	१०	दीप्तौ	पुटयति संपुटे पुष्पं जनः	क त
पुट्ट	१०	अल्पी भावे तौ छये	पुटति (वा) पुटयति पुट्टयति शोकेन देहः	इ कि क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	धातु
पुड	६	उपक्षये	पुडति	पुंस
पुड	१	महँ-लण्डनेच	पुण्डति	पुस्त
पुण	६	शुभे कर्मणि	पुणति स्नानेन जनः पुण्यः पुण्या-पुयं निपुणः पा-प	पू
पुथ	१०	भाषार्थे, त्विषिच	पोथयति	पू
पुथ	४	हिंसायां	पुथयति रिपुं वातपोषः	पू
पुथ	१	हिंसायां संक्लेशेच	पुंथति	पूज्य
पुर	६	अग्रगमने	पुरति कौरवान् भीष्म	पूज
पुर्व	१	पूरणे	पुपोर	पूण
पुल	६	महत्वे	पूर्वति जलेन कलशं	पूय
पुल	१	महत्वे	पुलति	पूर
पुल	१०	संघाते उच्छिन्नौ	पोलति	पूर
पुष	१	पुष्टौ	पुलयति तृणं कृषाणः	पूर्व
पुष	४	पुष्टौ	पोषति देहं	पूर्व
पुष	९	पुष्टौ	पुष्यति	पूल
पुष	१०	धारणे	पुष्णाति देहं मूर्खः	पूष
पुष्प	४	विकसने	पोषयति कवचं कुमारः पुष्पयति कलिका प्रातः	पूज
पुस	४	विभागभ्रंशयोः	पुष्पं पुस्यति	पृ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुंस पुस्त पू	१० १० ९	मर्दे-अभिवर्द्धनेच आदरानादरयोः वन्ने (त०) पवने	पुंसयति पुस्तयति धनं पुस्तकं पुनाति (वा) पुनीते	क क ग ज गि
पू	१	पवने	पवते गंगा पवन	ङ
पू	४	पवने	पूयते	य ङ
पूज्य	१०	संघाते	पूषयति	क
पूज	१०	पूजायां	पूजयति गुरुं शिष्यः	क
पूण	१०	संघाते	पूजा	
पूय	१	विशरेण दुर्ग धेच	पूणयति	क
पूर	४	आप्यायने	पूयते मृतकः	इ ङ
पूर	१०	आप्यायने	पूर्यते जलेन तरुः	इ ङ
पूर्व	१०	निकेतने	पूरयति धनैर्याचकं कर्णः	क
पूर्व	१०	निकेतने	पूर्वयति	क
पूल	१	संघाते	पूर्वयतिगृही	क
पूष	१	वृद्धौ	पूलति तृणानि	क
पूज	२	वर्णे	प्रतिक्षणं पूषति यस्य	
पृ	९	प्रीतौ	विक्रमः	
			पृङ्गे	
			पृणोति साधुरतिथीन्	इ ङ ल न

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	धातु.
पृ	६	व्यायामे	धर्मे व्याप्रियते साधुः व्यापारः	पेव
पृ	१०	पूरणे (त०) पा- लेन	पारयति पयसा कलशं	पेस
पृ	३	पालनपूरणयोः	पिपत्तिं पुत्रं धनेन पिता	पै
पृच	१-१०	संयमने (त०) सं- पर्के	पर्चति (वा) पर्चयति	प्यै
पृच	२	संपर्के	संपृक्ते साधुभिः साधुः	प्याय
पृच	७	संपर्के	संपृणक्ति न केनापि यतिः	प्युप
पृज	२	संपर्के	पृक्ते	प्युष
प्रेष	१	गतौ	प्रेषते	प्रच्छ
पृड	६	सुखे	पृडति धर्मो लोकं	प्रथ
पृण	६	प्रीणने	पृणति हरिं भक्त्या बुधः पपर्णः	प्रथ
पृथे	१०	प्रक्षेपे	पृथयति	प्रस
पृष	१	सेके	पर्षति	प्रा
पृह	९	पालनपूरणयोः	पृणाति विश्वं जलेन शक्रः	प्री
पृह	३	पालनपूर्योः	पिपत्तिं	प्री
पृह	१०	पूतौ	पारयति	
पेण	१	पेषणगातिश्लेषेषु	पेणति	
पेल	१	गतौ	पेलति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	पेवते	ऋ ड
पेस	१	गतौ	पेसति	ऋ
पै	१	शोषणे	पायति हिमेन वृक्षः	
प्यै	१	वृद्धौ	प्यायते	ड
प्याय	१	वृद्धौ	प्यायते	इ औ ड
प्युष	४	भागे—दाहे	प्युष्यति	य इर्
प्युष	१०	उत्सृजे	प्युषयति	क
प्रच्छ	६	जिज्ञासायां	पृच्छति गुरुं शिष्यः	श औ
प्रथ	१	प्रख्याने	प्रथते विद्यया कविः प्रथा	म ष ड
प्रथ	१०	प्रक्षेपणे (त०)	प्राथयति	क
प्रस	१	ख्यातौ		
प्रा	१	विस्तारे, प्रसधु	प्रसते परगुणं साधुः	ड
प्री	२	पूरणे	प्राति जलेन घटं	ल
	९	तर्पणे—कान्तौच	प्रीणाति (वा) प्रीणीते	ग ड
प्री	४	प्रीतौ	पितरं पुत्रः प्रीतः ता.	
प्री	१०	तर्पणे	तं प्रीतिः	
			प्रीयते धर्मसाधुः प्रीतः,	य ड
			ता, तं, प्रीतिः	
			प्राययति (वा) प्रायय-	क ज
			ते देवतां हविषा यज्वा	
			प्रीणयति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	धातु.
प्री	१	तर्पणे	प्रयति (वा) प्रयते	फक
पु	१	गतौ	प्रवते	फण
पुष	१	दाहे	प्रोषति	फण
पुष	९	स्नेहनमोचनपूरणे-	पुष्णाति पुत्रं पिता-विपु-	
		दाहेच	षविपुष्	
प्रोथ	१	पर्याप्तौ	प्रोथति (वा) प्रोथते-	फर्व
			नार्जुनाय-कर्णः	
प्लक्ष	१	भक्षणे	प्लक्षति (वा) प्लक्षते	फल
			प्लक्षः	फल
प्लव	१	गतौ	प्लवते	फल
प्ली	९	गतौ	प्लीनाति	फल
प्लिह	१	गतौ	प्लेहते	फुल
पु	१	गतौ	प्लवते	फल
पुष	१	दाहे	प्लोषति	फल
पुष	४	दाहे	पुष्यति गात्रं ज्वरेण	वक
			पुष्टः, टा, टं, प्लोषः	वक
पुष	९	स्नेहनमोचनपूरणे-	पुष्णाति	वज
		षु दाहेच		
पुस	४	दाहविभागयोः	पुस्यति	वट
प्लेव	१	सेवने	प्लेवते	वट
प्सा	२	भक्षणे	प्साति	वण

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
फक्	१	नीचैर्गतौ	फक्कति खलः	ण
फण	१	निःस्नेहे	फणति	
फण	१	गतौ	फणाति (वा) फणयति सर्प्य सर्प्य वैद्यः फ्राणय- ति दुग्धं	
फर्व	१	पूरणे	फर्वति तमसा निशा ब्रह्मांडं	मिण
फल	१०	संघाते	फालयति	
फल	१	गतौ संघातेच	फलति	
फल	१	निष्पत्तौ	फलति धर्मः	क ज
फल	१	विशरणे	फलति	
फुल्ल	१	विकसने	फुल्लति कलिका फालः	
फेल	१	गतौ	फेलति फेला फुल्लं	जि आ
फूल	१	जीवने	फूलति	
वक	१	गतौ	वंकते	
वक	१	कौटिल्ये	वंकते चित्तं खलः वंकः	ऋ म
वज	१०	मार्गणसंस्कारे	वाजयतियोद्धा वाजः	
वट	१०	वंटने	वाजिनः	
वट	१०	पैल्ये	वंटयति धनं आता	इ इं इ
वण	१	शब्दे	वटति	
			वणाति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वद	१	स्थैर्ये	वदति	
वध	१	बन्धने, निद्रायांच	वधते बीभत्सते पापंसाधुः	ङ
वध	१०	संयमने	बीभत्सा	
बन	८	याचने	बाधयति न केशान्द्रौपदी	क
बन्ध	९	बन्धने	बनुते	द उ ङ
बन्ध	१०	बन्धने	बध्नाति कृष्णं माता	ग औ
बभ्र	१	गतौ	बन्धयति	क
बम्ब	१	गत्यां	बभ्रति	
बब्ब	१	गत्यां	बम्बति	
बर्ह	१	वधौ-दीप्तौच	बब्बति	
बर्ह	१	स्मृतिर्हिंसा दान-	बर्हति	
वर्ह	१	वाक्षु	बर्हते	ङ
बल	१	श्रेष्ठे	बर्हते	ङ
बल	१	दानवधनिरूपेषु	बलते	ङ
बल	१	धान्यावरोधे जी-	बलति	ज
वल	१०	वनेच		
वल	१०	भृतौ-प्राणनेच	बलयति बालपिता	क
वल्ह	१	निरूपणे	बलयते	क ङ
	१	श्रेष्ठे	बल्हते	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
बल्ह	१	स्मृतिहिंसा दान- वाक्षु	बल्हते	ड
बल्ह	१०	त्विषि(त०)भाषार्थे	बल्हयति	क
वस्त	१०	अनादृत्यादृत्योः अर्दनेच	वस्तयति	क
वह	१	वृद्धौ	वहते	ड इ
बाध	१	विलोडने	बाधते	ऋ ड
विद	१	अवयवे	विंदति	इ
विल	६-१०	भेदने-क्षेपत्रे	विलति (वा) वेलयति	श क
विस	४	क्षेपे	विस्यति	य इरू
बीज	१	गतौ	बीजते	ड
बुक्क	१-१०	भषणे	बुक्कति (वा) बुक्कयति श्चा बुक्कं	कि
बुक्क	१०	व्यसने	बुक्कयति	क
बुट	१-१०	हिंसे	बोटति (वा) बोटयति	कि
बुड	६	संवरणे (त०) उत्सर्गे	बुडति	श शि
बुद	१	निशामने	बोदति (त०) बोदते	इरू उ न
बुध	१	बोधने	बोधति (वा) बोधते शास्त्रं	इरू ज न
बुध	१	अवबोधने	बोधति शास्त्रं बालः प्र- बोधः	औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
बुध	४	अवगमने बुभु- क्षायांच	बुध्यते (अथवा) बु- ध्यति	य औ
बुन्द	१	निशामने	बुंदति (वा) बुंदते	इर् उ न
बुन्ध	१	निशामने	बुन्धति (वा) बुन्धते	इर् उ न
बुन्ध	१०	बन्धे	बुन्धयति	क
बुल	१०	मज्जने	बोलयति	क
बृह	६	उद्यमे	बृहति वैश्यः बृहती बर्हिः (इति वृ)	श उ
व्युस	४	हानौ	व्युस्यति	य इर्
व्रण	१	शब्दे	व्रणति	—
ब्रू	२	व्यक्तायां वाचि	ब्रवीति (वा) ब्रूते	ल न
ब्रूस	१०	हिंसायां	ब्रूसयति व्याघ्रश्चौरं	क
भक्ष	१	भक्षणे	भक्षति (वा) भक्षते	न
भक्ष	१०	अदने	भक्षयति	क
भज	१	सेवायां	भजति (वा) भजते वि- ष्णुं बुधः भागः, भक्ति	न औ
भज	१०	विश्राणने पाकेच	भाजयति मंत्रिणे राज्यं राजा	क
भज	१०	भाषार्थे-भासि	भंजयति	क इ
भञ्ज	७	आमर्दने	भनक्ति पादपं दन्ती भंगः	ध ओ औ
भट	१	परिभाषणे	भटति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भट	१	भृतौ	भटति भृत्यं	भटः
भट	१०	प्रतारणे	भंटयति बालं भंटकः	क इ
भड	१	परिहासे	भंडते	इ ड
भड	१०	शिवे	भंडयति	क इ
भण	१	शब्दे	भणति	ऋ
भद	१	मुत्प्रीत्योः शुभे क-	भन्दते	इ ड
		ल्याणे सुखे च		
भद	१०	शुभे	भंदयति	क इ
भर्भ	१	हिंसायां	भर्भति	
भर्व	१	हिंसायां	भर्वति	
भर्त्स	१०	तर्जने	भर्त्सयते	क ड
भल	१०	निरूपे—आभंडने च	भलयते	क ड
भल	१	परिभाषणे—हिंसा-	भलते	भालं ड
		यां—दाने च		
भल्ल	१	परिभाषणे—हिंसा-	भल्लते	भल्लः ड
		यां—दाने च		
भष	१	भर्त्सने	भषति श्वा भषकः	
भस	३	भर्त्सनदीप्त्योः	वभस्ति दुर्बलं दुष्टः	लि र
भा	२	दीप्तौ	भाति सूर्यः	भानुः ल ष त
भाज	१०	पृथक्कर्मणि	भाजयति धनं आता वि-	क
			भागः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भाम	१	क्रोधे	भामते मूर्खः	भामिनी ङ
भाम	१०	क्रोधे	भामयति	क क त
भाष	१	व्यक्तायांवाचि	भाषते	भाषा ऋ ङ
भास	१	दीप्तौ	भासते विद्यया विप्रः	ऋ ङ
भिक्ष	१	याज्ञायां	भिक्षतेऽन्नं भिक्षुः भिक्षा	ङ
भिद	७	विदारणे	भिक्षुः भिनात्ति (वा) भिन्ते द-धञ् इर् औ	
भिल	१०	भेदने	धिभाङं कृष्णः, भेदः	
भिषज्	११	चिकित्सायां	भेलयति	क
भिष्णज्	११	उपसेवायां	भिषज्यति भिषक्	ट
भी	३	भये	भिष्णज्यति	ट
भीम	१	गतौ-शब्देच	विभेति पापात् भयः	लि
भुज	६	कौटिल्ये	भीमति	ऋ
भुज	७	पालनाभ्यवहारयोः	भुजति भुजं	श ओ औ
भुङ	१	भरणे	भुनात्ति भक्तं हरिः भुङ्क्ते	ध ज औ
भू	१	सत्तायां	पोलु फलं कृष्णः भोगः	
भू	१-१०	प्राप्तौ	भुङ्गते कपटं	इ ङ
			गमःस्थिरो भवति	
			भवते (वा) भावयते	कि ङ
			मोक्षं ज्ञानी	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भू	१०	अवकल्कने शुद्धिम्	भावयति वेदार्थं वैदिकः	क
भूष	१-१०	श्रणयोः अलंकारे	भावना भूषति (वा.) भूषयति भूषणं	कि
भृ	१	भरणे	भरति (वा) भरते भि- क्षुरुदरं	अ टु डु
भृ	३	धारणपोषणयोः	विभृते धरां वासुकिः (त०) विभर्ति	लि डु टु ज
भृज	१	भर्जने	भर्जते	ङ ई
भृड	६	निमज्जने	भृडति गंगायां यात्रिकः	श
भृश	१०	दीप्तौ	भृशति (वा) भृशयति	इ कि
भृश	४	अधःपतने	भृश्यति वभर्श	य इर उ
भृ	९	भर्त्सने भृतौ भृजि	भृणाति कुपुत्रं पिता	ग गि
भेष	१	भये	भेषति (वा) भेषते पा- पात्साधुः	ऋ अ
भ्यस	१	भये	भ्यसते	ङ
भ्रक्ष	१	अदने	भ्रक्षति	
भ्रण	१	शब्दे	भ्रणति	
भ्रम	१	चलेन	भ्रमति तीर्थं मुनिः	ज ण उ
भ्रम	४	अनवस्थाने	भ्राम्यति लुब्धः भ्रमः भ्रान्तः ता-तं भ्रान्तिः	य म ज ण उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अंश	१	अवसंसने	अंशते अष्टः—ष्टा—ष्टं	उ ङ ल
अंश	४	अघःपतने	अंश्यति वृक्षात्पत्रं बभ्रंश	उ इरू उ
अस्ज	६	पाके	भृज्जाति (वा) भृज्जते	श ञ औ
			भृष्टं	
अंस	१	अवसंसने	अंसते	ङ
आज	१	दीप्तौ	आजते	ङ
आज	१	दीप्तौ	आजते	आजथुः ङ ण ऋ टु
आश	१	दीप्तौ	आशते	ऋ ण टु ङ
आस	—	—	(इतिआश)	—
अ्री	९	भरणे (त.) भये	अ्रीणाति नारी भर्ता	ग मि
भ्रुड	६	संवृतिसंहत्योः	भ्रुडनि	श शि
भ्रुण इ-	१०	आशायां (त.)	भ्रुणयते पुत्रं बंध्या	क ङ
ति भ्रूण		विशंकायां		
भ्रेज	१	दीप्तौ	भ्रेजते	ऋ ङ
भ्रेष	१	चले भये	भ्रेषति (वा) भ्रेषते	ऋ ञ
भृक्ष	१	अदने	भृक्षति	—
भृश	१	दीप्तौ	भृशते	ऋ ण टु ङ
भृस	—	—	(इतिभृश)	—
भृष	१	गतौ	भृषति	ऋ
मक	१	मंडने	मंकते स्तनं कुंकुमेन	ङ इ
मक	१	गतौ	मंकते	ङ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मक्क	१	गतौ	मक्कते	ङ
मक्ष	१	संघाते	मक्षति जलेनान्नं मक्षिका	
मख	१	गतौ	मखति	
मख	१	गतौ	मंखति	इ
मग	१	सर्पणे, गतौच	मङ्गति	इ
मगध	११	परिवेष्टने नीचदा	मगध्यति नीचः	ट
		स्येच		
मघ	१	भूषे	मंघति	इ
मघ	१	कैतवे गतौ आ-	मंघते कितवौ द्यूतेन	ङ इ
		क्षेपेच		
मच	१	कलकने	मचते मूर्खः	ङ
मच	१	धारणे उच्छ्रायधृ-	मच्चते माल्यं कंठे मभ्रः	इ ङ
		त्यर्चोभाःसु		
मञ्ज	१	गत्यां	मभ्रति	
मञ्ज	१०	मृजाध्वनयोः	मभ्रयति	
मठ	१	निवासि, मदेच	मठति मठः	
मठ	१	गोके	मंठते	इ ङ
मड	१०	सृष्टे	मंढयति (वा) मंढति	कि ग इ
			मड्ढति	
मड	१	वेष्टने (त०) वि-	मंढते	इ ङ
		भागे		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मड	१-१०	भूषायां, हर्षेच	मंडति (वा) मंडयति मंडनं	कि इ
मण	१	शब्दे	मणति	
मंतु	११	अपराधे रोषेच	मंतूयति	ट
मंतु	११	अपराधे रोषेच	मंतूयते	ज ट
मथ	१	विलोडने	मथति	ए ज
मथ	१	कुंथे	मंथति	इ
मद	१	स्तुतिमोदमदस्वप्न कान्तिगतिषु जा- ज्येच	मन्दते मुनिर्माधवं मन्दः दाः दं.	इ ङ
मद	१०	तृप्तियोगे	मनो मदयते द्रव्यं	क ङ
मद	४	हर्षे	माद्यति धनेन भिक्षुः मदः मत्तः ता तं	य, म, अ, ई, इ
मद	१०	हर्षग्लुपनयोः	मदयति मनो मित्रागमः	क
मन	८	बोधने	मदयति रिपुं बली	
मन	४	ज्ञाने	मनुते मुनिः	द ङ उ
मन	१०	स्तंभे	धर्मं न मन्यते मूढः	य ङ औ
मन्थ	१	विलोडने (त०)	मातयते सेनां दुर्गः	क ङ
मन्थ	९	कुन्थे विलोडने	मन्थति रथं ममन्थ स- हयं मश्नाति	ग

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मम्ब	१	गत्यां	मम्बति	
मय	१	गतौ	मयति	
मर्ध	१	गत्यां	मर्धति	ङ
मर्च	१०	शब्दे	मर्चयति	
मर्व्व	१	गत्यां हिंसायां च	मर्व्वति	क
मर्व्व	१	पूरणे (त०) गतौ	मर्व्वति	
मंत्र	१०	गुप्तभाषणे	मंत्रयेते मंत्रिणा राजा	क ई ङ
मभ्र	१	गतौ	मभ्रति	
मल	१	धारणे	मलते माल्यं—मलः	
मल	१०	धारणे	मलयति	क त
मल्ल	१	धारणे	मल्लते मल्लः	
मव	१	बन्धने	मवति रज्ज्वा पाटच्चरं	
मव्य	१	बन्धने	मव्यति चौरं राजा	
मश	१	शब्दे (त०) कोपे	मशति मशकः	
मष	१	हिंसायां	मषति	
मष्क, मस्क	१	गतौ	मष्कते (वा) मस्कते	ङ
मस	४	परिमाणे (त०) परिणामे	मस्यति स्वर्णं स्वर्णकारः मसूरः मासः—माषः—माषकः	य इर् ई
मस्ज	६	शुद्धौ (वा) स्नाने	मज्जन्ति मुनयः सर्वे	श टु ओ औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मह	१	पूजायां	महति	
मह	१०	त्विषि	मंहयति	क इ
मह	१	वृद्धौ	मंहते	इ ङ
मह	१०	पूजायां	महयति	क त
मा	२	माने	माति दंडेन भूमि—	ल
			प्रमाणं	
मा	३	माने शब्दे च	धर्म मिमीते मुनिः	लि ङ
मा	४	माने	मायते	य ङ
माक्ष	१	कांक्षायां	मांक्षति	इ
माड	१	माने	माडति (वा) माडते-	ऋ अ
			स्वर्णे—माडः	
माथ	१	कुंथे	मांथति	इ
मान	१	पूजायां जिज्ञासा-	मीमांसते शास्त्रं बुधः—	
		यां च	मीमांसा	
मान	१०	पूजायां	मानयति	क
मान	१	पूजायां	मानति	
मार्ग	१०	संस्कारसर्पयोः	मार्गयति	क
मार्ग	१-१०	अन्वेषणे	मार्गति (वा) मार्गयति	कि
माज्ज	१०	शब्दे (तथा)	माज्जयति—माज्जार्ः	क
		मृजायां		
माह	१	माने	माहति (वा) माहते	ऋ उ अ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मि	९	प्रक्षेपणे	मिनुति (वा) मिनुतेतृण- वायुः	न अ ङु
मिञ्	६	वाधे, उत्क्लेशे च	मिच्छति	श
मिज	१०	दीप्तौ	मिजति (वा) मिजयति	इ कि
मिथ	१	वधे, मेधायां च	मेथति	ऋ ज
मिद्	१०	स्नेहने	मिदति (वा) मिदयति.	इ कि
मिद्	१	गर्वे	गुपने मेदति	
मिद्	४	स्नेहने	मेद्यति, मेदं, मेदः मेदस्	य लृ
मिद्	१	स्नेहने	मेदते पुत्रे पिता	आ नि ङ
मिद्	१०	स्नेहने	मेदयति	क
मिद्	१	मेधाहिंसयोः	मेदते (वा) मेदति वेदं वालः	ऋ अ
मिध	१	मेधाहिंसयोः	मेधति (वा) मेधते	अ ऋ
मिश्र	१०	संपर्के.	मिश्रयति घृतेनान्नं जनः	क त
मिल	६	श्लेषणं	मिलति (वा) मिलते साधुं साधुः मेलकः	श अ
मिव	१	सेके	मिवाति	इ
मिश	१	शब्दे	मेशति	
मिष	१	सेचने	मेषति	उ
मिष	६	स्पर्द्धायां	मिषति कृष्णं शिशुपालः	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मिह	१	सेचने	मेहति मेहः—प्रमेहः— मेहनः	औ
मी	१-१०	गतौ मत्यां च	मयति (वा) माययति	कि
मी	४	हिंसायां	मीयते मीनः	य ङ टु
मी	९	हिंसायां	मीनाति (व) मीनीते रिपुं	ग ज
मीम	१	गतौ	मीमति	ऋ
मील	१	निमेषणे	निमीलति भिया नेत्र	ऋ
मीव	१	स्थौल्ये	मीवति	
मुच	१०	प्रमोचने मोदने च	मोचयति कंचुकं सर्पः	क
मुच	९	मोचने	मुञ्चति (वा) त्वामुञ्चते देहं	श प ज ल औ
मुज	१	कलकने	विरक्तः	
मुज	१	मोचते		ङ
मुञ्ज	१	कलकने	मुञ्चते	इ ङ
मुञ्ज	१	गत्यां	मुञ्चति	
मुञ्ज	१०	मृजाञ्जनयोः	मोजयति	क
मुञ्ज	१	शब्दे—मृजा	मुञ्जति	मुञ्जः क इ
मुञ्ज	१	ञ्जनयोः		
मुञ्ज	१	मर्द्दने	मोदति तरुं गजः	
मुञ्ज	१	मर्द्दे	मुंढति	इ
मुञ्ज	१	आक्षेपप्रमर्दनयोः	मुदति कालीयस्य दुर्षं	श शि
			कुण्ठः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मुट	१-१०	संचूर्णने	मोटति (वा) मोटयति- धानां शिलायां	कि
मुठ	१	पलायने	मुठते	इ ड
मुड	१	मुंडने	मुंडते मुंडं जलेन नापितः	इ ड
मुड	१	खंडने	मुंडति मुंडं मुंडी	इ
मुड	१	मग्ने	मुडते	इ ड
मुड	१०	मर्द्दने	मोडयति	क
मुण	६	प्रतिज्ञाने	मुणति नियमं मौनी	श
मुथ	१	कुंथे	मुंथति	इ
मुद	१	हर्षे	मोदते यशसा कविः-	जि ड
			आमोदः	
मुद	१०	संसर्गे	मोदयति गुडेन धान्यं	क
			नारी, मोदकः	
मुर	६	संबेष्टने	मुरति कंटकेन वार्टी कृ-	श
			षकः. मुरः मुरा	
मुछि	१	मोहसमुच्छ्राययोः	मूछति मुमूछं सख्यं रा-	आ
			मस्य	
मुर्व	१	बन्धने	मूर्वति	इ
मुष	१	वधे	मोषति	
मुष	४	स्तेये-छिदि	मुष्यति	य इर्
मुष	९	स्तेये	मुष्णाति धनं चोरः	ग

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मुष, मूष	१	स्तेये	मोषति-यो मूषति परद्रव्यं	
मुस	४	खंडने	मुस्यति शंकुलया क्रमुकं	य
मुस्त	१०	संघाते	मुस्तयति मुस्ता	क
मुह	४	वैचित्ये	मूढो मुह्यति मोहेन	य उ ल जि
मू	१	बंधने	मवते चौरं राजा	ङ
मूत्र	१०	प्रस्रवणे	मूत्रयति बालस्तल्पे-मूत्रं	क त
मूल, मुल	१०	रोहणे	मूलयति जलेन वृक्षं मा-	उ क
			लाकारः-मूलं	
मूल	१	प्रतिष्ठायां संघाते च	मूलति (वा) मूलते	ज
मृ	६	प्राणत्यागे	यशः कृष्णस्य मूलं	
मृग	४	अन्वेषणे	म्रियते पापेन जन्तुः	श ङ
मृग	१०	अन्वेषणे	मृगयति धनं भिक्षुः	य
			मृगयते मृगं व्याधः मृ-	क त ङ
मृज	१	शब्दे	गया	
मृज	१-१०	शौचालंकारयोः	मर्जति	
			मार्जति (वा) मार्जयति	कि ऊ ष
			चंदनेन ललाटं नारी,	
			मार्जयति जलेनात्मानं	
मृज	२	शुद्धौ	मुनिः	
मृड	६	मुखे	मार्ष्टिज्ञानेनात्मानं	ल उ ष
			मृडति धर्मो लोकं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मृड	९	सुखे	मृड्णाति गिरा शुक्रः	ग
मृण	६	हिंसायां	मृणाति रिपुं मृणालं	श
मृद	९	क्षोदे	मृदनाति नलिनीं गजः, विमर्द्दः	ग
मृध	१	उंदे	मर्द्धते (वा) मर्द्धति मृधं	
मृश	६	आमर्शने	मृशति गुरुवचनं साधुः— परामर्शः	श औ
मृष	१	सेचने	मर्षति	उ
मृष	१	सहने	मर्षते दोषं हरिः	ङ
मृष	१-१०	तितिक्षायां	मर्षते (वा) मर्षयेते	कि ङ
मृष	४	क्षमायां	मृष्यति (वा) मृष्यते	य ञ
मृष	१०	क्षांतौ, सहने च	मर्षयति	क त
मृ	९	वधे	मृणाति	ग गि
मे	१	प्रतिदाने	मयते—तिलैर्धान्यं—विनि- मयः नैमेयः निमया वै-	ङ
			मयः विमयः	
मेट	१	उन्मादे	मेटति धनेन नीचः	
मेड	१	उन्मादे	मेडति	ऋ
मेथ	१	संगे मेधायां वधे च	मेथति	ऋ ज
मेद	१	मेधाहिंसयोः	मेदति (वा) मेदते मेदः	ऋ ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मुट	१	उन्मादे	मुटति धनेन नीचः	क
मुड	१	उन्मादे	मुडति	क
मुव	१	सेवने	मुवते	क क
मु	१	कान्तिसंक्षये	मुपयति, उपमुपयति, प्रमुपयति	
मै	१	गात्रविनामे	मुयति पुष्पवातेन मुनिः	
यक्ष	१०	पूजायां	यक्षयते	क क
यज	१	देवपूजासंगतिकरः णदानेषु	यजति हरिं—यजतिताप- सं साधुः पशुना शिवं यजते	ए औ ज
यत	१	प्रयत्ने	यततेमूकायनरः	इ क
यत	१०	निकारोपस्कारयोः	यातयतिशत्रुं वली—यात- यति स्नानेन देहं यतिः	क
यत्न	१	मैथुने	यत्नति	
यम	१	मैथुने	यमति	औ
यम	१	उपरमे	यच्छतिपापात्साधुः	औ उ
यम	१	परिवेषणेवेष्टने	यामयत्यन्नं विप्रायसाधुः— यमयति विमार्गात्प्रजां- राजा	क
यत्र	१०	संकोचने	यंत्रयति यंत्रेण खलं रा- जा—यंत्रं	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुयन्त
यस	४	प्रयत्ने	यस्यति धनाय नरः-प्र- यासः	य उँ इ
या	२	प्रापणे, गतौ च	याति	ल
याच	१	याज्ञायां	याचति (वा) याचते धनं याचकः	क टु डु
यु	२	मिश्रणामिश्रणयोः	यौति घृतेनान्नं यौति ख- लेभ्यः साधुः-यवः-यावः	ल
यु	९	बंधे	युनाति (वा) युनीते	ग अ
यु	१०	जुगुप्सायां	यावयते वृद्धं युवतिः- यौति	क ङ
युग	१	वर्जने	युंगति	इ
युछ	१	प्रसादे	युछति	
युज	१-१०	संयमने	योजति (वा) योजय ति हले वृषं गोपः	कि
युज	७	योगे	युनक्ति (वा) युंक्ते यो- गयोगी योगः	ध अ इर औ
युज	४	समाधौ	युज्यते गुहायां योगी	य ङ औ
युज	१०	निन्दे	योजयते	क ङ
युत	१	भासने	योतते	क ङ
युध	४	संप्रहारे	युध्यत व्योधः—युद्धं	य ङ औ
युप	४	व्याकुलत्वे	युप्यति	य इर

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
युष	१	हिंसायां	युषयते	क ङ
यष	१	प्रयत्ने	यषते	क ङ
यौट, यौ-	१	संबन्धे	यौटति (वा) यौटति	क
यौड			रुक्मणीं कृष्णः	
क	१०	आस्वादने (त था) आपने	राकयति मोदकं बालः	क
रस	१	पालने	रक्षति, रक्षा	जि
रख	१	गत्यां	रखति	
रख	१	गत्यां	रंखति	इ
राख	१	शोषणा उमर्त्ययोः	राखति हिमेन वृक्षः	क
रग	१०	स्वादे आसौ च	रगयति	क
रग	१	शंकायां	रगति साधुः—खलेभ्यः	म ए
रग	१	गतौ	रंगति	इ
रघ	१०	भासि	रंघयति	क इ
रघ	१	गतौ	रंघते रघुः	ङ इ
रघ	१०	आस्वादने	राघयतिलेह्यं करेण कुमारः	क
रच	१०	प्रतियत्ने, कृत्यां	रचयति	क त
रज	१	रागे	रजति (वा) रजतेयु- वायुवतौ (यथा) रज- कः-रागः-रक्तः-तातं	म औ ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुव
रज	४	रागे	रज्यति (वा) रज्यते- वस्त्रं रंगकारः	य न औ
रट	१	वाचि	रटतिकाकः	
रट	१०	परिभाषणे	रटयति	क
रठ	१	भाषणे	रठति	
रण	१	गतौ	रणति	म
रण	१	शब्दे	रणति	
रद	१	विलेखने	रदतिभूवनंवराहः	रदन
रध	४	हिंसायां (त०) पाकेसंराद्धौ च	रध्यति पाशंडी वैदिकं- विराधः	य ल उ
रप	१	व्यक्तायांवाचि	रपति	
रफ	१	गत्यां (त.) वधे	रफति	
रफ	१	गत्यां (त.) वधे	रम्फति	
रव	१	शब्दे	रंवते	इ इ
रव	१	गतौ	रंवति	इ इ
रभ	१	राभस्य	रभते ब्रजेकृष्णः सुरभिः (आउपसर्गे) आरभते-	औ इ
रभ	१	शब्दे	पठितुं	
रभ	१	क्रीडायां	रंभते रमते	इ इ उ इ ज औ

शत.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स	१०	क्रीडायां	रमयति (विउपसर्गे) विरामयति	
य	१	गतौ	रयते	रयः इ
र	१	गतिवधयोः	रर्कति	
व	१	व्रजे	रंवति	इ
स	१	शब्दे	रसति	
स	१०	आस्वादनेस्नेहने च	रसयति रसनयाद्राक्षार- सिकः	क त
र	१	त्यागे	रहतिगृहं विरक्तः, वि- रहः, रहरहम्	
र	१०	त्यागे	रहयति गेहं विरागी	क त
र	१	गतौ	रंहयतिवायुः, रंहः, रं- हम्, रंहसा	इ
र	१०	गतौ-त्वषि च	रंहयति	क त
रा	२	दाने (त.)	राति धनं विप्राय	ल
रा		आदाने		
रा	१	सामर्थ्ये	राघतेयुध्वायवीरः	ऋ अ
रा	१	दीप्तौ	राजते (वा) राजति राजा	ऋ अ
रा	४	संसिद्धौ	राध्याति ज्ञानेन यतिः	य औ
रा	६	संसिद्धौ	राध्नाति योगेन मुनिः	न औ

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध
राश	४	शब्दे	राश्यते पक्षी	य ङ क
रास	१	शब्दे	रासते	क ङ
रि	५	हिंसायां	रिणोति मलिम्लुचः पाथं	न
रि	६	गतौ	रियति	श
रिम	१	गतौ	रिंगति रिंगणं	इ
रिच	१-१०	वियोजनसंपर्चन- योः	रेचति (वा) रंचयति राज्यं रिपोः रेचयति ह- रितक्यारोगी	कि
रिच	७	विरेचने	रिणाक्ति (वा) रिक्ते- रोगी-विरेकः	ध अ इ र् औ
रिज	१	ऋज्यर्थे	रेजते	ङ
रिफ	६	कत्थनयुद्धनिंदा- हिंसादानेषु	रिफति रिपुंशूरः—रेफः— फा-फं	श
रिम्फ	६	वधे	रिम्फति	श प
रिव	१	व्रजे	रिवति	इ
रिश	६	हिंसायां	रिशति	श औ
रिष	१	हिंसायां	रेषति	ग
रिष	९	विप्रयोगे	रिष्णाति संन्यासी संबं- धिभ्यः—	श
रिह	६	कत्थनयुद्धनिंदा- हिंसादानेषु	रिहति दुर्जनः साधुं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
री	४	स्त्रवणे	रीयते जलं घटात्	य ड औ
री	६	रेषणे वधे गर्तौ च	रीणाति	ग मि
री	२	प्रजनने	रेति नारी	ल
रु	२	राद्रे	रौति	ल ढ
रु	१	राधे, वधे, गत्यां च	रवते चौरायराजा—रवः रविः	ड
रुक्ष (ना)	१०	वारुण्ये	रुक्षयति दृष्टः रुक्षः—क्षा- क्षं	क त
रुक्ष	१	क्षुतौ प्रीतिप्रका- शयोः	रोचते गोरोचना	ल ड
रुज	६	रोगे, संगे, संगे च	रुजति रोगेन हस्तः	श ओ औ
रुज	१०	हिंसि	रोजयति	क
रुल	१	प्रतिघाते (न)	रोलते	ल ड
रुल	१०	क्षुतौ च	रोलयति	क
रुल, रुलच	१	स्नेहे	रोलति स्नं	इ
रुल	१	उपघाते	रोलति अलिपेर्म	
रुल	१	प्रतिघाते	रोलते	ल ड
रुल	१	सत्यात्म्यास्नेह- मिति	रोलति	इ
रुल	२	अशुचिमेवमे	रोलति	ल ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रुद रुघ	१ ४	चेष्टायां अभिलाषे	रुंदति सुखाय (अनुउपसर्गे) अनुरुध्य- ते कृष्णं गाप्यः (यथा) अनुरुध्यति	इ य ङ औ
रुघ रुप रुश रुश रुप रुप रुप रुह	७ ४ ६ १० १ ४ १० १	आवरणे (त) रुन्धे व्याकुलत्वे हिंसायां दीप्तौ हिंसायां रोषे प्रतिघाते च रोषे जन्मप्रादुर्भावयोः	रुणधि गोपो गां गोष्टे रुप्यति रुषति रुंशयति (वा) रुंशति रोषति रुप्यति रोषः रोषयति रोषः रोहतिमृतिकाया घटः रो- हति विष्णुर्देवक्यां	[र, औ ध, ज, नि, इ य इ र श औ इ कि य इ रू नि क नि ज आ
रूप	१०	रूपक्रियायां	रूपयति गात्रं विलासीनी- रूपं, निरूपणं	क त
रुष	१	भूषायां	रुषतिशरीरमलंकरणेन- मुग्धा प्रियार्थं	.
रेक रेखा	१ ११	शंकायां श्लाघासादनयोः	रेकते रेखायति याचकः स्वार्थ- धनिनं	ऋ ङ ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रेज	१	दीप्तौ	रेजते	
रेट	१	परिभाषणे, याचनेच	रेटति (वा) रेटते	क ड
रेष	१	शब्दे, गमनेच	रेषते	क ड
रेभ	१	शब्दे	रेभते	क ड
रेव	१	प्लुवेगतौच	रेवते रेवा रेवती	क ड
रेष १	१	अव्यक्ते शब्दे	रेषते रेषा	क ड
१	१	शब्दे	रायति	क ड
रोड	१	अनादरे उन्मादेच	रोडति खलः साधुं	
रौट	१	अनादरे	रौटति	क
रौड	१	अनादरे	रौडति	क
लक	१०	आस्वादने (त.) आपने	लकयति	क
लक्ष	१-१०	दर्शनांकनयोः	लक्षयति (वा) लक्षय- ते-लक्षणं	क इ
लक्ष	१०	आलोचने	लक्षयते	क ड
लख	१		लखति	
लख	१		लंखति	इ
लग	१	संगे	लगाति धर्मे विप्रः लग्नं	म ए
लग	१०	स्वादापने	लगयति	क
लग	१	गतिखंजयोः	लंगति	इ
लघ	१	गतौ अभुग्त्योः	लघते	इ ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लघ	१	शोषणे—गतौ	लंघति मर्यादां लंघति पापी	इ
लघ	१०	भाषार्थे—त्विषि	लंघयति	क इ
लछ	१	लक्षणे	लछति चक्रेण गृहं	
लज	१०	अन्तर्द्धौ	लजयति	क
लज	१०	भानिकेतनहिंसाव- लदानेषु	लंजयति	क इ
लज	१०	प्रकाशने	लजयति विद्यां विप्रः लजा	क त
लज	१	भर्त्सने	लजति	
लज	१	भर्त्सने	लंजति	इ
लज	६	ब्रीडे	लजति (व) लजते वधूः	श ज इ ओ
लंज	१०	भासने	लंजयति	क त
लट	१	बाल्ये बाल्योक्तौ	लटति स्वार्थे लोकः	
लड	१	विलासे	लडति	
लड	१	जिह्वोन्मथने	लडयति रसनां परद्रव्ये चोरः	म
लड	१०	उपसेवायं	लडयति शिशुं माता	क
लड	१०	वीप्सायां	लडयते	क इ
लड	१-१०	भाषणे भासनेच	लंडति (वा) लंडयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लड	१-१०	उत्क्षेपे	लंडति (वा) लंडयति.	कि इ औ
लड	१०	आक्षेपे	लडयति	क त
लप	१	व्यक्तायांवाचि	लपति विलापः प्रलाप आलापः अनुलापः वि- प्रलापः संलापः सुप्रलापः अपलापः	क
लव	१	अवलम्बने अवलम्ब- ने शब्दे च	लवते शखायां	इ ङ
लभ	१	शब्दे	लभते	इ ङ
लभ	१	प्राप्तौ	लभते भिक्षां लाभः सु- लभः भा भं लभंति पुन- रुत्थानं	ङ ष डु औ
ल्य	१	गतौ	ल्यते	ङ
ल्व	१	गतौ	ल्वति शकटेन गोकु- लात् मथुरांनंदः	
लल	१०	ईप्सायां	लालयते सुतं बाला	क ङ
लश	१०		(इतिलस)	
लष	१	कान्तौ	लषति (वा) लपते धर्म- साधुः	अ
लष	४	कान्तौ	लष्यति (वा) लष्यते	य अ
लष	१०		(इतिलस)	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
लस	१	श्लेषणविलसयोः	लषति विलसति विलासः	
लस	१०	शिल्पयोगे	लासयति नटो बालां	क
लज्ज	६	व्रीडे	लज्जते वधुः लज्जा लज्जि- त—ता—तं	श ड इ ओ
ला	२	दाने आदानेच	लाति	ल
लाख	१	शोषणालमर्थयोः	लाखति हिमेन वृक्षः	कृ
लाघ	१	सामर्थ्ये	लाघते	कृ ड
लाछ	१	लक्षणे	लांछति	इ
लाज	१	भर्त्सने भर्गेच	लांजते	इ ड
लाज	१	भर्त्सने भर्गेच	लाजति	
लाट	११	जीवने	लाट्यति जीवजातमंधसा	ट
लाड	१०	आक्षेपे	लाडयति	क त
लाभ	१०	प्रेरणे	लाभयति लाभाय सूतं वैश्यः लाभः	क त
लिख	१	गतौ	लेखाति	
लिख	६	लेखने	लिखति लेखको ग्रंथं ले- खनं लिखनं लेखा लेखनी	श
लिग	१	गतौ	लिंगति	इ
लिग	१	चित्रीकरणे	लिंगयति पटं रंगकारः	क इ
लिट	११	अल्पकुत्सनयोः	लित्यति पितरिपुत्रः	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लिप	६	उपदेहे	लिपति (वा) लिपते देहं चंदनेन जनः	श प न भि औ
लिश	६	गतौ	लिशति	श औ
लिश	४	अरूपीभावे	लिश्यते देहो रोगेन, ले- शः, लिष्टः, टा टं	य ङ औ
लिह	२	आस्वादने	लेढि (त.) लीढे गुडं वालः	ल न औ
ली	१-१०	द्रवीकरणे	लयति (वा) लाययति- बन्हिनाघृतं होता	कि
ली	४	श्लेषणे	लीयते लज्जया भूमिनारी	य ङ
ली	९	श्लेषणे	लीनाति पतिनारी	ग गि
लीड	१	उन्मादने	लीडति	ऋ
लुंच	१	अपनयने	लुंचति	
लुज	१०	भानिकेतनहिंसाव- लदानेषु	लुंजयति	क इं
लुट	१	विलोडने	लोटति भूमौ	
लुट	४	विलाडेने	लुट्यनि रावणः पुत्रशो- केन	य ल ऋ
लुट	१	प्रतिघाते	लोटते विरहेण भूमौ रामः	ङ ल
लुट	६	संश्लेषणे	लुटति	श शि
लुट	१०	भाषार्थे- भासार्थेच	लोटयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
लुट	१	स्तेये	लुंठति धनं	इ
लुंठ	१-१०	स्तेये (त०) अ- वज्ञायांच	लुंठति (वा) लुंठयति	कि
लुठ	१	उपघाते	लोठति कलिर्धर्मं	लृ ङ
लुठ	१	प्रतिघाते	लोठते विरहेण भूमौ रामः	श शि
लुठ	६	लोठे	लुठति	क
लुठ	१०	चौर्ये	लोठयति	इ
लुठ	१	आलस्ये (त.) गत्यालस्यस्तेयस्त्रो- टेषु	लुंठति	
लुङ	१	मन्थने	लोडति	श शि
लुङ	६	संवृतौ, श्लिषे	लुङति	क
लुण्ड, लुड	१०	चौर्ये	लण्डयति	इ
लुथ	१	हिंसासंक्रेशयोः	लुन्थति रावणं रामः रा वणशरेण रामो न लुन्थति	य ई र
लुप	४	व्याकुलत्वे	लुप्यति	
लुप	६	छेदने	लुपति (वा) लुपते का- ष्ठं वर्द्धकिः लोपः लुप्तः	श प अ ऋ ल औ
लुव	१-१०	अर्दने-अदर्शने	ता तं लुंवति (वा) लुंवयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लुभ	४	गाध्यै	लुभ्यति पुत्रवंध्या लो-	य
लुभ	६	विमोहने	मः लुब्धः घा धं	श
लुप, लृष	१०	हिंसायां (त०)	लुभति मूढं मायिकः	क
लुप, लृष	१	स्तेये	लोषयति	ड
लुह	१	स्तेये, भूषायांच	लोषते	औ
लू	९	गाध्यै	लोहति	ग नि न
लृंच	१	छेदने	लुनाति (वा) लुनीते	ट
लेख	११	अपनयने	लृंचति	ट
लेखा	११	विलासेस्खलनेच	लेख्याति धूर्तो मनसि	ट
लेट	११	विलासे स्खलनेच	लेखायति द्विजोऽतिभो-	ट
लेप	१	धौर्त्ये—पूर्वभावेस्व-	जने	ट
लेला	११	नेच—	लेटयति कामुकः प्रिय-	ड
लोक	१	गमने शङ्केच	याक्षपायां	ट
लोक	११	दीप्तौ	लेपते	ऋ ड
लोच	१	दर्शने	लेलायति	क ड ऋ
लोच	१०	भाषार्थे दीप्तौच	लोकते	ऋ ड
लोच	१	दर्शने	लोकयते	क ऋ
लोच	१०	भाषार्थे त्विषि	लोचते	क ऋ
लोट	१	उन्मादे	लोचयति	ऋ
			लोटाति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लोट	११	धौत्ये-पूर्वभावे	लोट्यति धूर्त्तः	ट
लोष्ट	१	संघाते	लोष्टते धान्यं लोष्टः	ठ
लौड	१	उन्मादने	लौडति	झ
ल्यी	९	श्लेषणे	ल्यीनाति	ग गि
ल्वी	९	गत्यां	ल्वीनाति	ग गि
वक्	१	कौटिल्ये	वंकते वंकः	इ इ
वक्क	१	गतौ	वक्कते	ङ
वक्ष	१	रोषे (त०) सं- हतौ.	वक्षनि शिभु वक्षः	
वख	१	गतौ	वखति	
वख	१	गतौ	वंखति	इ
वग	१	गतौ-खंजेच	वंगति	इ
वघ	१	गतौ-गत्याक्षेपेच	वंघते	इ इ
वच	१	वाचि	वचति	औ
वच	२	परिभाषणे	वक्ति	ल औ
वच	१०	संदेशने	वाचयति पत्रं कृष्णाय	क
वच	१	एकचर्यायां	रुक्मिणीवाचिकः	
वंच	१	गत्यां	वंचते	इ इ
वंच	१०	प्रलंभने वंचनेच	वंचति	उ
वज	१	गतौ	वंचयते वंचना	क
			वजति	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वट	१	परिभाषणे	वटति	म
वट	१	वेष्टने	वटति कंटकने वार्टी	
वट	१०	ग्रंथे	वटयति माल्यं मालाकारः वेष्टनं वाटयति	क त
वट	१०	विभाजने	वटयति भूमिं ग्रामिकः	क त
वट	१-१०	विभाजने	वंटति (वा.) वंटय- ति धनं	क इ
वंट	१०	भागे	वंटयति	क त
वठ, वठ	१	स्थौल्ये	वठति	
वठ	१	एकचर्यायां	वठते	इ ङ
वड	१०	विभागे	वडयति	क इ
वड	१	वेष्टने (त.) वि- भागे	वडते कंटकैर्वार्टी	इ ङ
वण	१	शब्दे	वणति	ऋ
वद	१	व्यक्तायांवाचि	वदति संवत्	ऐ
वद	१-१०	भाषणे संदेशव- चने	वदते (वा) वादयते	कि ङ
वद	१	स्थैर्ये	वदति मेरुः	
वद	१	अभिवादनस्तुत्योः	वन्दते हरिं वन्दना	इ ङ
वध	१	हिंसायां	वधति	
वन	१	हिंसायां	वनति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वन	१	संभक्तौ (त.)	वनति	
वन	१-१०	शब्दे उपकृतौ श्रद्धा वाते शब्दे उपधा- तेच	वनति (वा) वनयति	कि
वन	१	व्यापृतौ	वनयति—परिउपसर्गे प- रिवानयति	म उ
वन	<	याचने	वनुते भिक्षुः	द ड उ
वप	१	बीजतंतुसंताने (तथा) मुण्डे	वपति बीजं सत्क्षेत्रे पटं- वपते तन्तुवायः उत्तः ता तं	दु ऐ औ अ
वम	१	उद्गिरणे	वमति शोणितं	दु उ ज
वय	१	गतौ	वयते	ड
वर	१०	इप्सायां	वरयति वरं स्वयं वरा वराः	क त
वरण	११	गतौ	वरण्याति	ट
वर्ध	१	गत्यां	वर्धति	
वर्च्च	१	दीप्तौ	वर्च्चते	ड
वर्च्च	१०	छेदनपूरणयोः	वर्च्चयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वर्ण	१०	वर्णक्रिया विस्तार- गुणवर्णने वचने प्रे- रणेच	वर्णयति वर्णः	क त
वद्ध	१०	पूर्तिछेदोः	वद्धयाति	
वर्ह-वर्ह	१-१०	भाषार्थे त्विषि	वर्हति (वा) वर्हयति	क
वर्ह-वर्ह	१	श्रैष्ठ्ये	वर्हते	कि
वर्ह-वर्ह	१०	हिंसायां (त.)	वर्हयति वर्ह	क
		दीप्तौ		
वभ्र	१	गतौ	वभ्राति	
वल	१	संवरणे	वलते धनं	क
वल्ल	१	संवरणे	वल्लते वालिः वल्लभः	क
वलभ	१	भोजने	वलभते	क
वल्क	१०	भाषणे	वल्कयति वल्कः वल्कः	क
वला, वला	१	व्रजे	वल्गाति	क त
वल्गु	११	पूजामाधुर्ययोः	वल्गूयति द्विजोऽतिवै- भवेन	ट
वल्गुल				
वल्गूल	१०	लूनिपूत्योः	वल्गुलयाति	
वल्ह, वल्ह	१	त्विषि	वल्हयति	क
वल्ह, वल्ह	१	श्रैष्ठ्ये	वल्हते	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वश	२	कान्तौ	वष्टि वशः तस्य वशे	ल
वष	१	हिंसायां	वशा	
वष्क(वा)	१	गतौ	वषति	
वस्क	१	गतौ	वस्कते	ङ
वस	१०	स्नेहनछेदनहन- नेषु	वासयति पुत्रं पिता वा- सयति वृक्षं तक्षा वास- यति चोरं राजा	क
वस	१	निवासे	निवसति (वा) वसते	ऐ ज औ
वस	१०	निवासे	चित्ते हरिः, निवासः	
वस	२	आच्छादने	वसयति	क त
वस	४	स्तंभे	वस्ते मुखं हस्तेन वस्त्रं	ल ङ
वस्त	१	अर्दने	वस्यति मनो मुनिः	य उ इ र
वह	१	प्रापणे	वस्तयते	क ह
			वहति मानं शकटमुवा- ह वृषः वहते प्रवाहः प्र- वहः	ऐ व औ
वह,वह	१	वृद्धौ	वंहते	
वह	१०	द्युतौ	वंहयति	इ ङ
वा	१०	मुखासगतिसेवासु	वापयति	क इ
				क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वा	२	गतिगंधनयोः गमनहिसयोः	वातिवायुः	ल
वाक्ष	१	कांक्षायां	वांक्षति	वांक्षा इ
वाछ	१	इच्छायां	वाछति	वांछा इ
वाड	१	आप्लावे प्रीतौ च	वाडते गंगायां मुनिः च- क्रवालं	ऋ ड
वात	१०	सुखसेवनयोः गतौ	वातयति व्यजनेन पतिं पतिव्रता	क त
वाध, वाध	१	विलोडने	वाधते साधुं खलः वाधा	ऋ ड
वाश	४	शङ्के	वाश्यते	य ऋ ड
वास	१०	उपसेवायां	वासयति गृहं धूपः	क त
वाह	१	प्रयत्ने	वाहते	ऋ ड
विच	७	पृथग्भावे	विनक्ति (वा) विक्ते धनं ध भ्राता विवेकः	लिञ् इर् औ
विछ	६	गतौ	विछति	श
विछ	१०	भाषार्थे, त्विषिच	विछयति	क
विज	३	पृथग्भावे	विवेक्ति देहादात्मानं वि- वेकने	लिञ् इर् औ
विज	६	भयचलनयोः	उद्विजते खलात्साधुः, वे- गः, उद्वेगः	श ड ई औ
विज	७	भयचलनयोः	विनक्ति लोकः	ध ई ओ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विट	१	शब्दे (त.) आक्रोशे	वेटति	
विट	१०	क्षित्यां	विंटयति	क इ
विड, विड	१	आक्रोशे	वेडति विडालः	
वित्त	१०	त्यागे	वित्तयति	वित्तं क त
विथ	१	याचने	वेथते धनिनं भिक्षुः	ऋ ङ
विद	२	ज्ञाने	वेत्ति विष्णुं बुधः	वेदः ल
विद	७	विचारणे	विन्ते ब्रह्मविवेकी	ध ङ औ
विद	४	सत्तायां	विद्यते	य ङ ओ
विद	६	लाभे	विंदति (वा) विंदते पु- प्यंदाता	श, प, ज, ल, औ
विद	१०	वेदनाख्यानविवा- सेषु	वेदयते दुःखं भिक्षुः	क ङ
विध	६	विधाने	विधति विश्वं वेधाः विधिः	श
विप	१०	क्षेपे	वेपयति	क
विल	६	भेदने (त.) स्तुतौ	विलति तरुं हस्ती विलं (इति बिलः)	श
विश	६	प्रवेशे	विशति	विवेश श औ
विष	१	सेचने	वेषति	वेषः उ
विष	३	व्याप्तौ	वेवेष्टि (वा) वेविष्टे	लि इर औ
विष	९	विप्रयोगे	विश्वं विष्णुः विष्णाति	ज ल ग औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विष्क	१०	हिंसायां	विष्कयति	कं
विस	४	प्रेरणे	विस्स्यति विसं विशं	य उ
वी	२	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजननत्वादनेषु	विषं वेति	ल
बीज	१०	व्यजने	बीजयति	क त
बीभ	१	कथने कथनं- श्लाघा	बीभते	ऋ ङ
वीर	१०	विक्रांतौ	वीरयति वीरः	क त ङ
वुग	१	त्यागे	वुंगति खलं साधुः	इ
वुट, वुट	१-१०	हिंसे	वाटति (वा) वोटयति	कि
वुस, वुस	४	उत्सर्गे	वुस्यति कंचुकं सर्पः वुसं	य
वृ	५	वरणे	वृणोति (वा) वृणुते व- रंकन्या	न अ
वृ	९	वरणे	वृणाति	ग
वृ	९	संभक्तौ	वृणीते विष्णुं विवेकी	ग ङ
वृ	१	आवरणे	वरति (वा) वरते	अ
वृ	१०	आवरणे	वारयति	क
वृक	१	आदाने	वर्कते वृकः	ङ
वृक्ष	१	वरणे संघाते च	वृक्षते कन्या वरं वृक्षः	ङ
वृच	७	वृत्तौ	वृणक्ति	घ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ड डू
वृज	७	वर्जने (त.) वृत्तौ	वृणाक्ति खलं शिष्टः	ध ई
वृड	९	मुखे	वृङ्णाति	ग
वृण	६	प्रीणने	वृणाति	श
वृण	८	भक्षे	वृणोति (वा) वृणुते	द अ उ
वृत्	१	वर्त्तने	वर्त्तते वात्ता	व उ ड ल
वृत्	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्यते	य ड उ
वृत्	१०	भाषार्थे-त्विषि	वर्त्तयति	क उ
वृष	१०	भाषार्थे-दीप्तौ	वर्द्धयति	क
वृष	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मेण	य ड व ल
वृष	१	सेचने (त०) प्र- जनैश्चर्ययोः	वर्षति वृषः	उ
वृष	१०	शक्तिबंधने सेचने- प्रजने ऐश्येच	वर्षयते सर्पं मंत्री	क ड
वृह	१-१०	भाषार्थे-द्युतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृंहति वृंहितं	इ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वैश्यः	श ऊ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	इ
वृह	१	ध्वनद्धर्च्योः	वर्हति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणति	ग ज
वे	१	तंतु संताने	वयति (वा) वयते वन्नं तंतु- वायः	ए अ
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशाम- नेषु	वेणाति (वा) वेणते	ऋ अ
वेथ	१	याचने	वेथते वेथितः वेथः	ऋ इ
वेद्	११	चौत्तर्ये, स्वप्ने च	वेद्यति ज्ञानी विषयेषु	ऋ
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानि- शामनवादित्रग्रहण चलनेषु	वनति तपस्यत्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेन वृक्षः	ऋ टु ङ
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणकः-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेल्ल	१	गतौ	वेल्लति	
वेह्ल	१	चाले	वेह्लति	ङ
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीते	लु ङ र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	ङ
वेस	१	गतौ	वेसति	इ र
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवर्त
वै	१	शोषणे	वायति	औ
व्यच	६	व्याजीकरणे (त.) सम्भवे	व्यचति साधुं धूर्तः	श वि
व्यथ	१	दुःखभयचलने	व्यथते पापात्साधुः व्यथा	ष म र
व्यध	४	ताडने	विध्यति व्याधो मृगं	य औ
व्यप	१०	क्षये	व्यपयति	क
व्यय	१	गतौ	व्ययति (वा) व्ययते	व
व्यय	१०	क्षेपे	व्याययति	क
व्यय	१०	वित्तसमुत्सर्गे	व्ययति धनं व्ययशीलः	क त
व्युष	१०	उत्सर्गे	व्योषयति रोगवानौषधं	क
व्युस	४	हानौ-दाहेच	व्युस्यति	य ई
व्युस	४	विभागे	व्युस्यति	य
व्ये	१	संवरणे	संव्ययति (वा) संव्ययते	अ
व्रज	१	गतौ	स्तनं वस्त्रेण नारी	
व्रज	१०	संकृतौगतौल्यागेच	व्रजति व्रजः	क
व्रण, व्रण	१	शब्दे	व्रणयति	
व्रण, व्रण	१०	गात्रविचूर्णने	व्रणति	क त
व्रश्च	६	छेदने	व्रणयति भीष्मं शरैरर्जु-	
व्रि	४	वरणे	नः, व्रणः, व्रण वृश्चति मूलं पापी व्रीयते वरं नारी	श ओ ऊ ऊ ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
व्री	९	वरणे	व्रीणाति रणं शूरः	ग गि
व्रीड	४	लज्जायां (त०) क्षिपि	व्रीड्यति वधूः व्रीडा	य नि
व्रीस	१-१०	वधे	व्रीसति (वा) व्रीसयति	कि
वृड	६	संवृत्ति संहति मा- र्जनेषु	वृडति	श शि
वृड	६	क्षिमज्जने	वृडति	श
वृस	१-१०	वधे	वृसति (वा वृसयति	कि
व्री	९	धारणे—गत्यां-वृत्यां	व्रीणाति भुवं शेषः (त०)	ग गि
वृक्ष	१०	दृशि	वृक्षयति	क त
शक	४	क्षमायां	शक्यति (वा) शक्यते	य न
शक	९	शक्तौ	शिष्यापराधं गुरुः शक्नोति कंसं जेतुं कृष्णः	न इर लृ
शक	१	त्रासशंकयोः	शंकति	इ ड
शघ	१	हिंसायां	शर्घति शर्घः	
शच	१	व्यक्तायांवाचि	शचते कविः	ड
शच	१	गतौ	शंचते	इ ड
शट	१	रुजाविशरण गत्य-	शटति	
शट	१०	वसादनेषु श्लाघे	शटयते	क ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शठ	१	कैतवे (त०) वधे	शठति शठः	
		क्लेशे च		
शठ	१०	श्लाघायां	शठयते	क इ
शठ	१०	संस्कारगत्योः आ- लस्ये-गतौ असं- स्कृतसंस्कृते	शठयति	क
शठ	१०	सम्यग्भाषणे दु- र्वाचि	शठयाति शठेन धर्मं	क त
शड	१	रुजायां (त०) संघे	शंङ्गते शंङः	इ ङ
शण	१	दाने	शणति	म
शद	१	आ उपसर्गे (आ) गतौ	आशदति	औ
शद	१	शातने	शीयते वृक्षात् पत्रं	लृ ज औ
शंख	१	कथने (त०) हिं- सायां स्तुतौ	शंसाति स्वकुलं साधुः	उ
शप	१	आक्रोशे	शपति (वा) शपते दु- र्वासाः शक्राय शपः	ज
शप	४	आक्रोशे	शप्यति (वा) शप्यते	य ज औ
शंव	१	गतौ	पापिनं साधुः शंवति	

धातु.	गण.	अर्थ.	अनुबन्ध.	
शंव	१०	संबंधे	शंवति श्वनंयति; शंवः श्वबुः, श्वबुः, श्वबुः शं- बुका, श्वबुका	क
शब्द	१०	शब्दकृतौ (अथ- वा) उपसर्ग आ- विष्कारे	शब्दयति अशब्दयति प्रियशिष्योयगूढमयगुरुः	क
शम	१	अदर्शने (त०) दर्शने	शमयति जलधरो जलै- स्तापं निशामयति रूपं वेश्या	
शम	४	उपशमे	शाम्यति मुनिः	यउभइरू
शम	१०	आलोचने	शामयति कार्यं मंत्री	क रु
शर्ध	१०	अभिक्रांक्षायां	शर्धयति	क
शर्व, श- र्व	१	हिंसायां—गतौ	शर्वति	
शर्व	१	हिंसायां	शर्वति	
शल	१	चलने (त०) स्तृनौ	शलते पथिकः	रु
शल	१	वेगे	शलति	
शल	१०	श्लाघे	शलयति	क रु
शलम	१	कत्थने	शलभते	रु
शव	१	गतौ (त०) वि- कारे	शवति शवः शवं	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शश	१	प्लुतगतौ	शशति	शशः
शष	१	वधे	शषति	
शस	१	हिंसायां	शसति कं.सं हरिः	उ
शस	२	स्वप्ने	शसति	ल लु
शंस	१	आउपसर्गे इच्छा- यां	आशंसते मोक्षं मुनिः	इ ङ
शंस	१	स्तुतौ दुर्गतावपि	शंसति	उ
शस्त	२	स्वप्ने	शंस्ति	ल लु इ
शाख	१	व्याप्तौ	शाखति शाखा गगनं	ऋ
शाड	१	श्लाघायां	शाडते गुणिनं जनः	ऋ ङ
शान	१	तेजने	शीशांसति (वा) शीशां- सते शूलं	अ
शार	१०	दौर्बल्ये	शारयति	क त
शाल	१	कत्थने	शालते	ऋ ङ
शास	२	आउपसर्गे आशि- षि	आशास्ते	ल ऋ ङ
शास	१	आउपसर्गे आशि- षि	आशास्ते	उ ङ
शास	२	अनुशिष्टौ	शास्ति	शासनं ल लु उ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शि	६	निशाने	शिनोति (वा) शिनुते शूलं	न अ
शिक्ष	१	विद्योपादाने	शिक्षते शिक्षा	ङ
शिख	१	गतौ	शिखति	
शिल	१	गतौ	शिखति	इ
शिघ	१	आघ्राणे	शिघति कुसुमं कृष्णः शिघानं	इ
शिज	२	अव्यक्ते शब्दे	शिकतेरसना शिजितं	ळ
शिज	१-१०	अव्यक्ते शब्दे	शिजते (वा) शिजयते	कि ङ
शिट	१	अनादरे	शेटति साधुं भंडः	ऋ
शिल	६	उच्छे	शिलति ध्यानं विप्रः	श
शिष	१	हिंसायां	शेषति शेषः	
शिष	१०	परिशेषीकरणे	शेषयाति धनं पुत्रायपिता शेषं	क
शिष	७	विशेषणे	विशिनष्टि गुणैर्विष्णुं	धमिल्ल औ
शी	२	स्वप्ने	शेते सुखं शयालुः (अथ वा) मंडले शयामि	ळ ङ नि
शीक	१-१०	आमर्षणे स्पर्शे-से- के-दीप्तौ	शीकति (वा) शीकयति	कि
शीक	१	सेचने-स्पर्शे	शीकते मेघो भूमिं	ऋ ङ
शीम	१	कत्थने	शीमते	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
शील	१	समाधौ	शीलति	सुशीलः जि
शील	१०	उपधारणे— अ- भ्यासे—अतिशयने	शीलयति शीलं	नीलनिचोलं क त
शुक	१	गतौ—स्पर्श	शोकति	
शुच	१	प्रतिधाते	शोचति शोचना शोकः	
शुच	१	शोके	शोचति शोकः शुचिः	
शुच	४	पूतिभावे—विशरणे	शुच्यति (वा) शुच्यते	य न इरू
शुच्य	१	ह्लेदे	तपसा विप्रः	
शुच्य	१	अभिपवे	शुच्यति	ई
शुठ	१	शोषेण	शुठति	शुंठी इ
शुठ	१०	शोषणे	शुठयति शुंठी जनः शुंठी	क इ
शुठ	१	खोटने प्रतिधाते च	शोठति	
शुठ	१	खोटने	शुंठति	इ
शुठ	१०	आलस्ये	शोठयति	क
शुठ	१०	संस्कारगत्याः	शुठयति	क इ
शुध	४	शौचे	नरः शुद्धयति सत्संगात्	य ल औ
शुंध	१	शुद्धौ	योगः शुंधति सत्त्वेन शुश्वः	
शुंध	१-१०	शुद्धौ	शुंधेत (वा) शुंधयते	कि क
शुन	६	गतौ	शुनति शुनकः	श
शुभ	१	भासने	शोभाति न शोभाति स-	
			भासयते	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शुभ	१	दीप्तौ	शोभते शोभा	ल ङ
शुभ	६	शोभायां	शुभति विद्यया विप्रः	श
शुभ	६	दीप्तौ	शुभति	श प
शुभ	६	शोभायां	शुभते	श
शुभ	१	भासने	शुभति	
शुल्क	१०	भाषणे-संघाते-स- जने-वर्जने-अनि- स्पर्शने	शुल्कयति	क
शुल्ब	१०	माने-सर्गेच	शुल्बयति	क
शुल्ब	१०	सर्जने	शुल्बयति विश्वं विधाता शुल्बं	क
शुष	४	शोषणे	शुष्यन्ति सस्या नविनां बुवाहं शोषः (त०) शुष्कः का कं	य औ ल
शूर	१०	विक्रांतौ	शूरयते शूरः	क त ङ
शूर्	४	स्तम्भे हिंसायांच	शूर्यते	य ङ ई
शूर्प	१०	माने	शूर्पयति शूर्पेण धान्यं नारी शूर्पणखा	क
शूल	१	रुजायां	शूलति चोरं शूलं	
शूष	१	प्रसवे	शूषति	
शूष	१	शब्दकुत्सायां	शूढतेखरः	उ ल ङ व

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शृष	१	उंदे	शर्द्धति (वा) शर्द्धते जेलन शिरः	उ व
शृष	१०	प्रहसने	शर्धयति मूर्खं बुधः	क उ
शृ	९	हिंसायां	शृणाति शीर्णः—णा—णं	ग मि
शेल	१	गतौ	शैलति शैलुः	ऊ
शेव	१	सेवने	शेवते	ऋ
शै	१	गतौ पाके च	शायते	
शो	४	निशाने	श्यति शितः—ता—तं	य
शो	४	तनूकरणे	श्यति काष्ठं वर्द्धकिः	य
शोण	१	वर्णगत्योः	शोणति पद्मं शोणः	ऋ
शौट	१	गर्वे	शोणितं	
शौड	१	गर्वे	शौटति मूर्खः	ऋ
श्रुत	१	क्षरणे	शौडति	ऋ
श्रुत	१	क्षरणे	श्रोतति	इर
श्मील	१	निमेषणे	श्चोतति जलं श्चोतः	इर
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति नेत्रं	
श्यै	१	गतौ	श्यीलति	
श्रक	१	गतौ	श्रक्यते	उ
श्रग	१	व्रजे	श्रंकते	इ ऋ
श्रण	१	दाने	श्रंगति	इ
			श्रणति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	दाने	श्राणयति गां राजा— विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	बंधने-मोक्षे-वधे	श्रथति (वा) श्रथयति. कुमुदैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	बंध	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्विल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रातिहर्षमोक्षयत्न- योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शौथिल्ये	श्रथते नीर्वी	इ ङ
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रातिहर्षयोः, संदर्भे	श्रथ्नातिमुमुक्षुं हरिःश्रथा ति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	खेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः—ता-तं— श्रान्तिः	य भ उ नि इ र्
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	ल
श्रा	१	पाके	श्राति—श्रपयति यवागूं- मिक्षुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शाकं	ल म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते	ग ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्राम श्रि	१० १	आमंत्रणे सेवने	श्रामयति विश्रामः श्रयति (वा) श्रयते विष्णुं बुधः श्रयणं श्रायः आश्रयः	क त अ
श्रिष श्री श्री श्री	१ १ ९ १०	दाहे तर्पणे पत्रि तर्पणे	श्रेषति श्रयति (वा) श्रयते श्रीणाति (वा) श्रीणीते श्राययति (वा) श्रायय- ते देवतां हविषा यज्वा श्रवत्यामघटाज्जलं	उ अ ग अ क अ
श्रु श्रु श्रै श्रै श्रोण श्रुक श्रुग श्रुय श्रुथ श्रास्त्र श्राघ श्रिष	१ ९ १ १ १ १ १ १ १० १ १ १ १	श्रवणे श्रवणे-गतौ पाके स्वादे संधाते गतौ व्रजे हिंसायां दौर्बल्ये व्याप्तौ कल्पने दाहे	श्रवणोति श्रायति दुग्धं श्रायति श्रोणाति श्रोणी श्रोणिः श्रंकते श्रंगति श्रुथति श्रुथयति श्रास्त्रति श्राघतेगुणिनं गुणी श्राघा श्रेषति	न म ऋ इ ङ इ क त ऋ ऋ ङ उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्लिष	४	आलिङ्गने	श्लिष्यति सीता रामं	य लृ ङि औ
श्लिष	१०	श्लेषणे	श्लेषः श्लेषयति	क
श्लोक	१	संघाते, सर्जने, व- र्जने	श्लोकते कविः श्लोकः	क ङ
श्लोण	१	संघाते	श्लोणति	कृ
श्वक	१	गतौ	श्वंकते	इ ङ
श्वग	१	व्रजे	श्वंगति	इ
श्वञ्च	१	गत्यां	श्वचते	ङ
श्वच	१	गत्यां	श्वंचते	इ ङ
श्वज	१	गतौ	श्वजते	ङ
श्वज	१	गतौ	श्वंजते	इ ङ
श्वठ	१०	गतौ-असंस्कृतसं- स्कृते	श्वठयति	क
श्वठ	१०	गतौ असंस्कृत- संस्कृते	श्वंठयति	क इ
श्वठ	१०	सम्भ्यभाषणे दु- र्वाचि	श्वठयति	क त
श्वञ्च	१०	बिले, गतौ, तंके	श्वञ्चयति	क
श्वर्त्त	१०	गत्यां	श्वर्त्तयति	क
श्वल, श्वल्ल	१	वेगे	श्वलति (वा) श्वलति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्वल्क	१०	भाषे	श्वल्कयति	क
श्वस	२	प्राणने	श्वसिति-विश्वासः-श्व- सनं	ल लु घ
श्वि	१	गतिवृध्योः	श्वयाति धर्मेण राजा	टुं औ ऐ इ
श्वित	१	वर्णे	श्वेततेगेहं-श्वेतः-ता-तं	लृ आ ङ
श्विद	१	शौकल्ये	श्विन्दते ज्ञानेन जनः	इ ङ
ज्वग	१	संवरणे	सगति	म ए
षघ	९	हिंसायां	सघ्नोति	न
षच	१	समवाये	सचति साधुः	
षच	१	सेचने	सेचते जलेन भूमिं	ङ
षच	१	गतौ	सचति	
षंज	१	संगे	सजति तरुण्यां तरुणः	औ जि
षट	१	अवयवे	आसक्तः-तः-तं. सटति	
षट्	१०	निकेतनहिंसाङ्ग- लदानेषु	सटयति	क
षण	१	सम्भक्तौ	सनति	
षण	८	दाने	सनोति (वा) सनुते- विप्राय गां	द न उ
षद	१-१०	गतौ-आ उपसर्गे	आसादति (वा) आ- सादयति	कि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पद	१-६	विशरणगत्य वसाद	सीदति विरहेण पांथः	श लृ ज औ
		नेषु	विषादः	
पघ	५	जिघांसायां	सधोति	न
पन	१	संभक्तौ	सन्नति	
पन	८	दाने	संनोति (वा) सनुते	द ज उ
पप	१	संबन्धे	सपति	
पंत्र	१	सर्पणे	संबति	
पम	१	वैक्लव्ये	समति	
पम	१०	वैक्लव्ये आलोच-	समयति	क त
		ने च		
पर्ज	१	अर्जने	सर्जति	सर्जः
पर्घ	१	गत्यां	सर्घति	
पर्व	१	सर्पणे हिंसायां च	सर्वति	
पल	१	गतौ	सलति	सलिलं
पस	२	स्वप्ने	सस्ति सिंधौ हरिः	ल लृ र
पस्ज	१	गतौ	सज्जति (वा) सज्जते	ज उ
पस्त	२	स्वप्ने	सांस्तिति	ल लृ इर
पह	१-१०	मर्षणे	सहति (वा) साहयति	कि
			स एवायं नागः	
पह	१	मर्षणे	पापं न सहते राजा	ज ङ
पह	४	मर्षणे, चक्षुर्थे	सह्यति	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
षाध			(इति साध)	
षान्त्व	१०	सामयोगे	सान्त्वयति	क
षि	९	बंधने	सिनोति (वा) सिनुते कृ	न अ
षि	९	बंधने	प्यं यशोदा विषयः सिनाति (वा) सिनीते चौरं	ग अ
षिच	६	क्षरणे	राजा सिंचति (वा) सिंचते	श प औ अ
षिट	१	अनादरे	सेटति साधुं भंडः	
षिध	१	गत्यां	सेधाति मथुरां कृष्णः	उ
षिध	१	शास्त्रे मांगल्ये च	सेधाति शिष्यं गुरुः सिद्धो-	ऊ
षिध	४	संराद्धौ	यं मुनिः	
षिभ	१	दीप्तौ हिंसने	सिध्यति मुनिर्योगेन	य उ औ
षिल	६	उच्छे	सिंभाति	उ
षिव	४	तंतुसंताने	सिलति	श
षु	९	अभिषवे मन्यने च	सीव्यति कथां योगी-	य उ
षु	१	प्रसवे गतौ	सीवनं सुनोति (वा) सुनुते सोम-	न अ
			लतां विप्रः	
			प्रसवति पुत्रं नरि-प्र-	
			सवः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पु	२	प्रसवे, ऐश्वर्य्ये	प्रसौति पुत्रं प्रसवः प्र- सुतिः	ल
पुष्ट	१०	तौच्छे, अनादरे	मुष्टयति	क
पुंभ	१	दीप्तौ हिंसने	मुंभति	
पुर	६	भैस्ययोः	मुरति	श
पुह	४	तृप्तौ, शक्तौच	मुह्यति	य ल
पू	२	प्राणि गर्भविमो- चने	प्रमुते देवकी कृष्णं	ल ड औ
पू	४	प्रसवे	सूयते सुखं धर्मः	य ड ओ
पू	६	क्षेपे	मुवति	श
पूद	१	क्षणने निरासे	सूदते चोरं राजा सूदः	
पूद	१०	आश्रुतिहत्योः नि- रासेच	सूदयति	क
पूर	४	स्तेपे—हिंसे	सूर्य्यते	य ड इ
पूक्ष	१	अनादरे	सूक्षति	
पूक्ष्य (वा)	१	इष्यार्थे	सूक्ष्यति (वा) सूक्ष्यति	
पूष	१	प्रसवे	सूषति पुत्रं साध्वी	
पेक	१	सर्पणे	सेकते	ड क
पेल	१	चाष्टगत्योः	पिलति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
षेव	१	सेवने	नीचं समृद्धमपि सेवति (वा) सेवते नीचः	ऋ ऋञ
षे	१	क्षये	सायति	
षो	४	अन्तकरणे	स्याति कालो लोकं	य
ष्टक	१	प्रतिघाते	स्तकति	म
ष्टग	१-१०	संवरणे	स्तगति (वा) स्तगयति	ए मि
ष्टन	१	शब्दे	स्तनति	मि
ष्टम	१	प्रतिबन्धे	स्तंभते पापात्पुत्रंपिता	इ ङ
ष्टम	१	वैक्लव्ये	स्तंभः	
ष्टम	१०	वैक्लव्ये	स्तमति	
ष्टल	१	स्थितौ	स्तमयति	क त
ष्टक्ष	१	गतौ	स्थलति	ज
ष्टह	६	वधे	स्तृक्षति	
ष्टह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
ष्टिघ	५	आस्कंदने	स्तृहति	श ऊ
ष्टिप	१	क्षरणे	स्तिघ्रुते पथिकं वृष्टिः	न ङ
ष्टिम	४	आद्री भावे	स्तेपते जलं घटात्	ङ ऋ
ष्टीव	१	निरसने	स्तिम्यति तैलेन देहः	य
ष्टीम	४	आद्री भावे	ष्टीवति	उ
			स्तीम्यति तैलेन देहः	य

धातु.	संख.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ष्टु	२	स्तुतौ	स्तौवि (वा) स्तुते स्वः स्तुतिः	न ल
ष्टुच	१	प्रसदे	स्तोचते ज्ञानेन मनः	ङ
ष्टुप	१०	उच्छ्राये	स्तोपयति	क
ष्टुभ	१	स्तोभे	स्तोभते नीचो विद्यया स्तोभते वृद्धशीतम्	
ष्टूप	४	उच्छ्राये	स्तूपयति	य इर्
ष्टेप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ङ ऋ
ष्टेव	१	निरसने	ष्टेवति	
ष्टै	१	वेष्टे	स्तायति	
ष्टैच	१	वेष्टणे	स्त्यायति	
ष्टैच	१	शब्दसंघाते	ष्ट्यायति लोकः	
ष्टग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
ष्टस	४	निवासे	स्थयति	य लृ मि उ
ष्टा	१	गतिनिवृत्तौ	तिष्ठतिविरलेमुनिः— स्थानं	भि
ष्टिव	१	निरसने	ष्टेवति	
ष्टिव	४	निरसने	ष्टीव्यति भुक्तमन्नं बालकः	य उ
ष्टीव	१	निरसने	ष्टीवति	
ष्णस	४	निरसने	स्नस्यति	उ य
ष्णा	२	शौचे	स्नाति गंगायां स्नानं	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ष्णिह	४	प्रीतौ	स्निह्यति शिष्ये गुरुः स्नेहः	य
ष्णिह	१०	स्नेहने	स्नेहयति	क
ष्णु	२	प्रस्रवणे	स्त्राति जलं घटात्	ल
ष्णुस	४	भक्षे, निवासेच	स्तुस्यति	उ य
ष्णुह	४	उद्गारे	स्तुह्यति	य उ ल
ष्मि	१	ईषद्धसने	स्मयते स्मयः स्मितं	ङ
ष्मि	१०	अनादरे	स्मययते	ङ
ष्वक्क	१	सर्पणे	स्वक्कते	ङ
ष्वञ्ज	१	परिष्वंगे	स्वजते पुत्रं पिता परि- ष्वजति पांचाली मध्यमं पांडुनंदनं	औ नि ङ
ष्वद	१०	स्वादे छेदे	स्वदयति	
ष्वद	१	आस्वादे प्रीतौलि- हेच	स्वदते	ङ
ष्वप	२	शये	स्वपति सिंधौ हरिः स्वापः स्वप्न.	ल, लु, नि, घ औ
ष्वर्त्त	१०	गत्यातंकयोः	स्वर्त्तयति	क
ष्विद	१	मोचने, मोहे स्नेहे	स्वेदते पापं तपसा जनः	ङ नि आ ल
ष्विद	४	गात्रप्ररक्षणे	स्विद्यति (वा) स्विद्यते वर्मणः प्रस्वेदः स्वेदः	य न ल आ औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
संकेत	१०	आमंत्रणे	संकेतयति रतये कामिनी	क
प्रग	१	संवरणे	संगति	म ए
संग्राम	१०	युद्धे	संग्रामयते—संग्रामः	क त ड
सव	५	हिंसायां	सघ्नोति	न
संज	१	सर्पणे	संजति	
सट	१०	प्रकाशने	सटयति	क त
सट्ट	१०	हिंसायां	सट्टयति	क
सठ, स्यठ	१०	—	(इति शठ—श्वठ	
सत्र	१०	सन्तानक्रियायां—	सत्रयते पथिकेभ्यो धार्मि-	क त ड
		संबन्धे—सन्ततौ	कः, सत्री, सत्रं	
सप	१	संबन्धे	सपति	
संवर	११	संभरणे—लज्जायां च	संबर्ह्यति गुरुदर्शनाद्बधूः	ट
सभाज	१०	प्रीतिसेवायां दर्श-	सभाजयति गुरुं शिष्यः स-	क त
		ने च	भाजना	
संभूयस्	११	प्रभूतभावे	संभूयस्यति पयोवारिणा	ट
सम्ब	१	सर्पणे	सम्ब्रति	
सम्ब	१०	सम्बन्धे	सम्ब्रयति	क
सर्ज	१	अर्जने	सर्जति	
सर्व	१	सर्पणे	सर्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सह	४	शक्तौ	सह्यति भूवहने वासुकिः (इतिषह)	य
साट	१०	प्रकाशने	साटयति	क त
सांत्व	१०	सामप्रयोगे	सांत्वयति शोकाकुल- ज्ञानी	क त
साध	४	संसिद्धौ	साध्यति ज्ञानेन यतिः सिद्धः	य उ
साध	५	संसिद्धौ	साधोति योगेन मुनिः	न औ
साम	१०	सांत्वने, प्रयाणे	सामयति बालं पयसापिता सामः	क त क
साम्ब	१०	सम्बन्धे	साम्बयति	क
सार	१०	दौर्वल्ये	सारयति	क त
सिच	६	क्षरणे	सिंचति (वा) सिंचते जलेन गेहं विलासी-सेकः- अभिषेकः	श पं न औ
सिभ	१	हिंसायां	सेभति कुमन्त्री राजानं	उ
सीक	१	सेके गत्यां	सीकते	ङ ऋ
सीक	१-१०	आमर्षे	सीकति (वा) सीकय- यति	कि
सु	१	गतौ ऐश्वर्ये प्रसवे	सवति	न न
सु	५	संधाक्लेदपीडामंथेषु	सुनोति (वा) सुनुते	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सुख	१०	तत्क्रियायां	सुखयति	क त
सुख	११	तत्क्रियायां	सुखयति धनी संसारे	ट
सुदृ	१०	अनादरे	सुदृयति	क
सुम्भ	१	द्युतौ हिंसायां	सुम्भति	
सुर	६	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	सुरति राजा सुरः असुरः (इतिपू)	श
सू				
सूक्ष	१	अनादरे आदरेच	सूक्षति	
सूच	१०	पैशून्ये	सूचयति परदोषं खलः सूचकः	क त
सूत्र	१०	अवमोचने वेष्टनेच	सूत्रयति सूत्रणे कलशं पूरोधाः सूत्रं	क त
सूर	४	हिंसास्तंभनयोः	सूर्यते रवित्रिंश योगी	ङ य
सूर्य्य	१	अनादरे ईर्ष्याया	सूर्य्यति	
सूष	१	प्रसवे	सूषति	
सृ	१	गतौ	सरति तीर्थं मुनिः	
सृ	३	गतौ	ससर्त्ति	लि र
सृ	१०	स्तृतौ	सरयति	क
सृज	६	विसर्गे	सृजति विश्वंवेधा	श औ
सृज	४	विसर्गे—उत्पादने	संसृज्यते पिता पुत्रं सृ- ज्यते विश्वंविधाता सृष्टिः	
सृप	१	गतौ	सर्पति सर्पः	ल औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सृभ	१	हिसे	सर्भति	उ
सेक	१	गतौ	सेकते	ङ ऋ
सेल	१	चालगत्योः	संलति	ऋ
सेव	१	सेवने	सेवते सेवा	ऋ ङ
सै	१	क्षित्यां	सायति	
स्कद	१	उत्प्लुत्यगमने, आ- पवेउद्धृतै	स्कन्दते वानरः शाखां	इ ङ
स्कंद	१	शोषणे गतौ	स्कंदति हिमेन तरुः	इर् औ
स्कभ	१	प्रतिबंधे	स्कम्भते	इ ङ
स्कु	९	आवरणे	स्कुनातिकर्ण—बाणरै- ज्जुनः	ग ञ ङ
स्कुद	१	आप्रवणे	स्कुंदते शाखा मृगोवृक्षा- दक्षांतरं	इ कि
स्खद	१	स्खदने विदारे	स्खदते मूलकं पांथः	ङ म ष
स्खल	१	चथचलयोः	स्खलति	मि
स्तक	१	प्रतिधाते	स्तकति	म
स्तन	१	शब्दे	स्तनति	मि
स्तन	१०	मेघशब्दे	स्तनयति घनः	क त
स्तभ	१	स्तम्भे	स्तम्भते	इ ङ
स्तूप	१०	समुच्छ्रये	स्तूपयति गोधूमं—वैश्यः स्तूपः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्तूप	४	समुच्छ्राये	स्तूप्यति धान्यं—स्तूपः	य इ
स्तृ	९	आच्छादने (त.) प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्तृणोति (वा) स्तृणु- तेया ससा देहं विस्तृतः—ता—तं	न अ
स्तृ	९	आच्छादने	स्तृणानि (वा) स्तृणी- ते गगनं मेघः स्तीर्णः णा—णं	ग अ गि
स्तृक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
स्तृह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
स्तृ	९	छादने—वधेच	स्तृणाति	ग गि
स्तृ	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
स्तेन	१०	चौर्ये	स्तेनयति धनं स्तेनः	क त
स्तेप	१०	क्षेपे	स्तेपयति	क
स्त्यै	१	शब्दसंघाते	स्त्यायति लोकः	
स्तोम	१०	श्लाघायां	स्तोमयति स्तोमः	क त
स्थग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
स्थल	१	संचयं—स्थाने	स्थलति धर्मं मुनिः स्थल स्थली	ज
स्थूल	१०	परिवृंहणे	स्थूलयति स्थूलः ला लं	क त ङ
स्निह	१०		(इति णिह)	क
स्पद	१	किञ्चिच्चलने	स्पंदतिवाबेन	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्पर्द्ध	१	परपराभवेच्छायां संघर्षे	स्पर्द्धते कर्णोर्जुनं स्पर्द्धा	ङ
स्पर्श	१०	ग्रहणे-लेषे	स्पर्शयते	क ङ
स्पर्श	१	बाधने ग्रंथेच	स्पर्शति (वा) स्पर्शते	अ
स्पृ	९	प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्पृणोति	म
स्पृश	६	संस्पर्शे	स्पृशति पुत्रं पिता	श ओ
स्पृह	१०	ईप्सायां	स्पृहयति गंगायै मुनिः	क त
स्फट	१	भेदे	स्पृहा	
स्फट	१०	भेदे	स्फटति	इ
स्फर	६	स्फुर्त्तौ चले	स्फाटयति	क
स्फल	६	स्फुर्त्तौ-चाले.	स्फरति	
स्फाय	१	वृद्धौ	स्फलति	श
			स्फायते स्फायः स्फा- ति (वा) स्फायति	ई अ
स्फिट	१०	वृत्त्यां-अनादरेहिंसे	स्फीतः स्फीतवान् स्फेटयति	
स्फुट	१	विकसने	स्फोटते (वा) स्फोटति कुसुमं	अ

गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
१०	हिंसायां	स्फिडयति नकुलः सर्प वने	क
६	विकशने	स्फुटति पुष्पं स्फुट टा टं	श शि
१	विसरणे	स्फोटति पुष्पं	इरू
१०	विसरणे	स्फोटयति	क त
१०	भेदे	स्फोटयति	क
१०	परिहासे	स्फुटयति भगिनी पतिं-	क इ
		इयालः	क
१०	अनादरे	स्फुडयति	इ
१	विकशने	स्फुटयति	
	विशरणेच		श
६	संवृत्तौ	स्फुडति	इ कि
१०	परिहासे अनृतभा-	स्फुडति (वा) स्फुड-	
	षणेच	यति	श शि
६	स्फुरणे-संचलनेच	स्फुरतिनेत्रं	आ
१	विस्मृतौ	स्फूर्जति विष्णुं भोगी	टु औ आ
१	वज्रनिर्घोषे	स्फूर्जति वज्रः	श शि
६	स्फुर्त्तौ चये चले	स्फुलति	ड
१	ईषद्धासे	स्मयते स्मयः स्मितं	क
१०	अनादरे	स्मययति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्धः
स्मिट	१०	अनादरै स्नेहे	स्मेटयति	क
स्मील	१	निमेषणे	स्मीलति	
स्मृ	१	आध्याने	स्मरति सपितृगृहं	
स्मृ	१	चिंतायां	स्मरति अपस्मारः	म
स्पद	१	किञ्चिच्चलने	स्पन्दते लोचनं	इ ड
स्पन्द	१	स्त्रवणे	स्पन्दते जलं कलशात्	उ व ड लृ
स्यम	६	ध्वनने	स्यमति	ष ण उ
स्यभ	१०	वितर्के	स्यामयति (वा) स्याम- यते विप्रः	क अ
स्यम	१०	ध्वाने	स्यमयति	क त
स्यल	१०	वितर्के	स्यालयति	क
स्रक	१	गत्यां	स्रंकते	क इ
स्रंह	१	विश्वासे	स्रंहते	ड उ लृ औ
स्रंभ	१	विश्वासे	स्रंभते मित्रेनरः	ड उ लृ
स्रंभ	१	प्रमादे	स्रंभते विद्यायै मूर्खः	ड उ
स्रंस	१	प्रमादे	स्रंसते स्वार्थे लोकः	ड उ
स्रंस	१	अवस्रंसने	स्रंसते वृक्षात्पत्रं स्रस्तः ता तं	उ ड लृ
स्त्रिभ	१	हिंसे	स्त्रिभति	उ
स्त्रिम्भ	१	हिंसे	स्त्रिम्भति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्त्रिव	४	गतिशोषणयोः	स्त्रीव्यति रविः पयः स्त्री- व्यतियात्रायै गंगा सि- ष्णासुः	उ य
सु	१	श्रुतौ—गतौ	स्त्रवति	ऋ ङ
स्त्रेक	१	गतौ	स्त्रेकते	
स्त्रै	१	पाके	स्त्रायति दुग्धं	
स्त्रिट	१	स्त्रेहे	स्त्रेटति	इ
स्त्रग	१	मर्पणे	स्त्रंगति	ङ औ ज
स्त्रंज	१	आर्लिगने	स्त्रंजते	ङ
स्त्रद	१	आस्वादने	स्त्रदते	क
स्त्रद	१०	आस्वादने	(आ उपसर्गे) आस्वाद- यति पयोयतिः	ण
स्त्रन	१	शब्दे	स्त्रनति	क त
स्त्रन	१०	शब्दे	स्त्रनयति	मि
स्त्रन	१	शब्दे	स्त्रनयति (वा) स्त्रान- यति भेरीं नटः	
स्त्रन	१	अवतंसने	स्त्रनयति केशं कुंकुमेने नारी	क
स्त्रव	१०	आक्षेपे	स्त्रवयत्यर्जुनं कर्णः	क त
स्त्रर	१०	आक्षेपे	स्त्ररयति	क त
स्त्रर्द	१	आस्वादने	स्त्रर्दते गुडं बालः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्वर्त्त	१०	गतौ आतके	स्वर्त्तयते	क
स्वस्क	१	गत्यां	स्वस्कते	ङ
स्वाद	१	आस्वादे	स्वादते स्वादु	
स्वृ	१	शब्दोपतापयोः	स्वरति	
स्वृ	९	हिंसने	स्वृणाति (वा) स्वृणीते	ग गि न
स्वेक	१	गत्यां	स्वेकते	ङ ऋ
हट	१	त्वाष्वि	हटतिचंद्रः हाटकं	
हट	१	बलात्कारे (वा) कीलवन्धे, पुतौ	हटतिराजा	
हद	१	पुरीषोत्सर्गे	हदतेरोगी	ङ
हन	२	हिंसागत्यो	हन्ति हनति अहनत् जघान कंसंकिलवासुदेवः	ङ
हम्म	१	गतौ	हम्मति	
हय	१	गतौ क्लमे	हयति हयः हायनं	
हय्य	१	क्लमे-गतौ	हय्यति	
हल	१	विलेखे	हलति	
हस	१	हसने	हसति हसः हासः हास्यं	ए
हा	३	गतौ	जिहीते	लि ङ ओ
हा	३	त्यागे	जहाति गेहं यतिः	लि क ओ
हि	९	गतौ वर्द्धने	हिनोति	न
हिक्क	१	अव्यक्तेशब्दे	हिक्कति (वा) हिक्कते	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हिक	१०	हिंसायां	हिक्रयते	हिका क ङ
हिड	१	अनादरे—गतौ	हिडते	ऋ ङ इ
हिद	१	आक्रोशे	हेदति चोर भयान्नरः	
हिद	९	भूतप्रादुर्भावे	हेदणाति	ग
हिल	६	हावकरणे	हिलति	श
हिल्लोल	१०	दोलने	हिल्लोलयति	क त
हिव	१	प्रीतौ	हिवति	इ
हिस	१-१०	हिंसायां	हिंसति (वा) हिंसयति	कि इ
हिस	७	हिंसायां	हिनस्तिरिपुं हिंसा	ध इ
हु	३	दानादनयोः प्रीण- नेच	जुहोति पायसं विष्णवे जटाधरः सन्जुहुधीहपा- वकं जुहोति सवर्प्र- लयाग्निः	लि
हुङ	१	संघाते, वर्णेच	हुङते	इ ङ
हुङ	६	संघाते मग्ने	हुङति घान्यं	श शि
हुङ	१	गतौ	होडति	ऋ
हुल	१	गतौ छदि	होलति	ज
हुल्ल	१	कौटिल्ये	हूर्लति मलः	आ
हुल्ल	१	गतौ	हुडते	ऋ ङ
हु	१	हरणे	हरति (वा) हरते गंधं वायुः	व

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हृ	३	प्रसह्यकरणे	जहर्त्ति परनारीं दुष्टः	लि र
हृष	१	अलीके	हर्षति खलः साधुं	उ मि
हृष	४	तुष्टौ	हृष्यति हृष्टः टा टं हृष्टिः	य उ मि इ
हेट	१	बाधायां	हेटति	
हेठ	१	बाधायां	हेठतेरिपुं बली हेठः	ङ ऋ
हेड	१	वेष्टने	हेडति	म
हेड	१	अनादरे, गतौ	हेडते	ऋ ङ
हेप	१	गतौ	हेपते	ऋ ङ
हेष	१	अव्यक्तेशब्दे	हेषते हयः हेषा	ङ
होड	१	अनादरे, गतौ	होडते	ऋ ङ
हौड	१	गतौ	हौडते	ऋ ङ
न्हु	२	अपनयने	न्हुतेदुर्जनं मुजनः	ल ङ
ह्यल	१	चलने	ह्यलति	म
न्हग	१	संवरणे	न्हगति	म ऐ
न्हणी	११	रोषे लज्जायांच	न्हणीयतेकलहांतरिताप- रासक्ताय	ङ ट
न्हप	१	गतौ (अथवा) हय शब्दे	न्हपते न्हपति	ऋ ङ
न्हस	१	शब्दे	न्हसति	
न्हाद	१	अव्यक्तेशब्दे	न्हादतेमेघः	ङ
न्ही	३	लज्जायां	जिन्हितियवनसेवयाद्विजः	लि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ह्रीछ	१	लज्जायां	ह्रीछति	
हुड	१	गतौ	हुडते	ऋ ङ
हूड	१	गतौ	हूडते	ऋ ङ
हौड	१	गतौ	हौडते	ऋ ङ
लहग	१	संवरणे	लहगति	म ए
लहप	१०	व्यक्तायांवाचि	लहपयति संस्कृतं मनीषी	क
लहस	१	शब्दे	लहसति	
लहाद	१	सुखे स्वने	लहादते पिता पुत्रेण आ-	ङ
			लहादः	
हल	१	चलने	हलति	ह्लयति म
हल	१	कौटिल्ये संवरणेच	हलति खलः	
हल	१	स्पर्द्धायां-वाचि	हलति (वा) ह्लयते चाणू-	ज ए
			रः कृष्णं आह्वयते पुत्रं	
			पिता आह्वानं	
		सौत्राः	(सूत्राणि)	
उड	१	संहतौ	ओडति	
उड	१	आघाते	उडति	
उर	१	गतौ	ओरति	
उल	१	दाहे	ओलति	
ऋश	१	गतिस्मृत्योः	अर्शति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कज	१	रुहे	कंजति	इ
कप	१	चलने	कपति	
कर्क	१	हासे	कर्कति	
कुठ	१	छिदि	कोठति	
कुत	१	आस्तृतौ	कोतति	इ
क्षद	१	शुभे—शोभे	क्षन्दति	
क्षद	१	संवृतौ	क्षदति	
क्षुप	१	स्वादे	क्षोपति	
चक	१	भ्रांतौ	चंकति	इ
डिम	१	हिंसे	डेमति	
तद्र	१	सादे—मोहे	तंद्रति	
तल	१	गतौ	तलति	
धम	१	ध्वाने	धमति	इ
नट	१	साधे	नटति	
नड	१	घाते	नडति	
नूप	१	हिसने	नूषति	
पज	१	रोधे	पंजति	इ
पीय	१	प्रीणने	पीयति	
पुत्त	१	गतौ	पुत्तति	
भिष	१	रुग्जये	भेषति	
मज	१	ध्वनौ	मंजति	इ
			भिषजः भेषजं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मट	१	सादे	मटति	
मुष	१	भजने	योषति योषित्	
रिफ	१	कुत्सने	रेफति रेफः फा फं	र
रश	१	स्वने	रशति	
लत	१	घाते	लतति	
लुल	१	विमर्द्धे	लोलति	
वट	१	स्तेये	वटति	
वड	१	आरोहणे	वडति	
विभ	१	रवे	वेभते	
शल	१	गतौ	शलति	
शिक	१	सेचने	सेकति सिकता	
गतशात	१०	मुखे	सातयति शातयति	
मुद	१	शोभे	मुन्दति सुन्दरः रा, रं	इ
स्कंभ	१-२	रोधने	स्कन्धोति (वा) स्क- भ्राति	न ग उ
कुंभ	१-२	रोधने	स्कुन्धोति (वा) स्कु- भ्राति	न ग उ
स्तंभ	१-२	रोधने	स्तन्धोति (वा) स्तभ्राति	न ग उ
स्तुभ	१-२	रोधने	स्तुन्धोति (वा) स्तु- भ्राति	न ग उ

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
अ	अइतिअकारउच्चारणार्थः	२	१	२	१
आ	आकारेत्त्वंप्रफुल्लितइत्यादौ आदितश्चेति इडभावार्थम्	३	२	३	२
इ	इदित्त्वं नंदतीत्यादौ इदितोनुम् धा- तोरितिनुमर्थम्	२	१	२	१
इर	इरित्त्वं अच्युतत् अच्योतीत् इत्या- दौ इरितोवेति झेरडूविकल्पार्थम्	२	१	२	१
ई	ईदित्त्वं उन्नउत्तः इत्यादौ श्वीदितो- निष्ठायां इतिइण् निषेधार्थम्	३	२	३	२
उ	उदित्त्वं शमित्वा शांत्वा इत्यादौ उ- दितोवा इतिइड् विकल्पार्थम्	३	८	३	९
ऊ	ऊदित्त्वं स्वरति सूति सूयति धृञ्- दितोवा इति सेद्धा सेधिता इत्यादौ इडूविकल्पार्थम्	२	१	२	१
ऋ	ऋदित्त्वं अलुलोकत् इत्यादौ नाग्लो- पिशास्वृदितामिति ऋह्रस्वनिषेधार्थम्	२	१०	२	२७
ॠ	ॠइतिण्यंते ऋह्रस्व विकल्प सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
लृ	लृदित्त्वं अगमत् असदत् इत्यादौ पुषादिद्युताल्लृदितः परस्मैपदेषु इति लृरडार्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
लृङ्	लृङिति द्युतादि गण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	२
ए	एदित्वं अपथीत् अमथीत् इत्यादौ ह्यन्तक्षणश्चसजागृणिश्च्येदितां इति वृद्धचभावार्थ	२	१	२	१
ऐ	ऐकारो भ्वादिगणे यजादित्वात्संप्रसारण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	१
ओ	ओदित्वं पीन इत्यादौ ओदितश्चेति-निष्ठानत्वार्थम्	३	२	३	२
औ	औकार आर्द्धधातुकेऽणनिषेधसूचनार्थः	२	१	२	१
क	क इति अन्तिमस्य चुरादिगणस्य संकेतः	२	१०	२	२६
कि	कि इति प्रथमदशमगणयोः प्रयोगविकल्पसूचनार्थः संकेतः	२	१०	२	२६
क्ष	क्ष इति जक्षादिगणसंकेतः	२	२	२	४
ग	ग इति ऋयादि गण सूचकः संकेतः	२	९	२	२३
गि	गि इति नवम गण मध्येष्वादि गणसूचकः संकेतः	२	९	२	२३
घ	घ इति अदादिगणांतःपातिरुदादि गणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
ङ	ङित्वमनुदात्तङित्वात्माने पदार्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

सुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ज	ज इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपाति- ज्वलादिगणसूचकः संकेतः	२	१	०	०
ञ	ञित्त्वं ऊर्णेति ऊर्णते इत्यादौस्वरित- मितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले इत्युभ- यपदार्थम्	२	१	२	१
ञि	ञीत्त्वं इद्ध इत्यादौ जीतःक्त इति वर्तमानेक्त प्रत्ययार्थम्	३	२	३	२
ट	ट इति षोडशप्रकरणरूपक कङ्क्षा- दिगणसूचनार्थः संकेतः	२	१६	०	०
टु	ट्वित्त्वं वेपथु रित्यादौ द्वितोऽथुच् इति अथुच् प्रत्ययार्थम्	३	८	३	६
ड	ड्वित्त्वं पक्त्रिममित्यादौड्वितः क्त्रिरि- ति प्रत्ययार्थं केचित् त्रिमक् इति वदन्ति	३	८	३	६
ण	ण इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपाति- फणादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	१
त	त इति अंते अकारलोपाभाव सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
द	द इतितनादिसंज्ञकअष्टमगण सूचकः संकेतः	२	८	२	१९

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ध	ध इति रुधादिसंज्ञकसप्तमगण सूचकः संकेतः	२	७	२	१६
न	न इति स्वादिसंज्ञकपंचमगणसूचकः संकेतः	२	९	२	१३
व	व इतितुदादिसंज्ञकषष्ठगणांतःपातिमुच्चादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
म	म इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगणांतःपातिशमादिगणसूचकः संकेतः	२	४	२	१०
न	न इति म्वादि संज्ञकप्रथमगणांतःपातिवटादिगणसूचकः संकेतः	२	१	२	२
नि	नि इति वटादिगणस्थत्वे विकल्पसूचकः संकेतः	२	१	०	०
य	य इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगण सूचकः संकेतः	२	४	२	१०
र	र इति श्रुति मात्रस्थ धातुसूचकः संकेतः	२	२	०	०
ल	ल इति अदादिसंज्ञकद्वितीयगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
लि	लि इति ळादिगणसूचकः संकेतः	२	३	२	७
लृ	लृ इति अदादिसंज्ञकद्वितीय गणांतःपातिस्वपादिगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

त. प्र.	अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत	
			वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
१६	व	व इति भ्वादिसंज्ञक प्रथम गणांतः पातिवृतादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	२
१३	श	श इति तुदादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
२०	शि	शि इति तुदादिसंज्ञक षष्ठ गणांत पातिकुटादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२१
१०	प	षित्वं जरा त्रपा इत्यादौ स्त्रधिकारे षिद्धिदादिभ्योऽङ् इति अङ् प्रत्य- यार्थम्	३	८	३	८

अत्र (ङ) कारोऽथवा (ज) कारोऽनुबन्धो नागच्छेत्तत्र परस्मैपदं विज्ञेयं
 अत्रगणसूचकोऽक्षरो नागच्छेत्तत्र भ्वादिगणो विज्ञेयः ये वकारवत्सु
 नागच्छेत्तत्र विज्ञेयाः ये षकारवत्सु न ज्ञायन्ते ते
 सकारवत्सु विज्ञेयाः

एतद्धातुमञ्जर्याख्यग्रन्थस्यान्ते सौत्रधातवोविज्ञेयाः

गणसंकेतार्थसूचना.

१ भ्वादि.	२ अदादि	७ रुधादि.	८ तनादि.
१ जुहोत्यादि	४ दिवादि.	९ क्रयादि.	१० चुरादि.
१ स्वादि.	६ तुदादि.	११ कङ्धादि.	

शुद्धिपत्रम्.

—*३७३*—

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	८	अङ्कति	अङ्गति
२	२	गतिनिन्दारभजवेषु	गतिनिन्दारंभजवेषु
२	२	अञ्चति	अञ्चति
॥	४	अञ्ज	अञ्च
॥	१७	अड	अह
॥	॥	अङ्गनोति	अन्होति
३	११	धा	न्या
॥	१४	अम्भते	अम्भते
४	६	याचकोऽर्थ	याचकोऽर्थ
॥	७	अर्द	अर्द
॥	८	अर्दति (वा) अर्दते	अर्दति(वा)अर्दते
॥	९	अर्दयति अर्दते	अर्दयति अर्दते
॥	॥	अर्द	अर्द
॥	११	अर्दति	अर्दति
॥	१२	नार्दति	नार्दति
॥	९	अर्द	अर्द

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१०	अब्बं	अर्व
"	११	अर्व	अर्व
"	१३	अर्दयति (वा) अर्द- यते	अर्दयति(वा)अर्दयते
"	१४	अर्व्वति	अर्वति
"	१५	अर्व्वति	अर्वति
५	२	केशं	केशान्
"	६	अंशः	अंश
"	९	अंश	अंशः
"	१०	दीप्तिगतिग्रहेषु	दीप्तिगतिग्रहेषु
६	१०	इच्छायां	इच्छायां
"	१४	अधिउपसर्गे	अधिउपसर्गे
७	१	इध	इन्ध
"	३	इर्ष्यायां	ईर्ष्यायां
"	४	इरज	इरज्
७	४	इर्ष्यायां	ईर्ष्यायां
८	७	इन्तति	ईन्तति
९	४	१	१
"	"	उछे	उच्छे
"	"	उछति	उच्छति
"	५	निवासे	विवासे

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	"	उछति	उच्छति
"	९	उदकः	उदकं
१०	१	आछादने	आच्छादने
"	२	उर्दते स्वर्णं	ऊर्दतेस्वर्णं
"	६	उंहति	ओहति
"	१३	आछादने	आच्छादने
११	२	ऋक्षणोति	ऋक्षिगोति
"	३	ऋच	ऋच
"	"	ऋचति	ऋक् चति ऋक्
"	४	ऋछ	ऋच्छ
"	७	ऋच्छति	ऋच्छति
"	८	उर्जने	उपार्जने
"	९	भ्रजे	मर्जने
"	"	ऋञ्जते	ऋञ्जते
"	१६	धा धं	द्वा द्वं
"	१८	धा धं	द्वा द्वं
१२	४	ऋषिः	ऋषिः
"	१४	शोषणालमर्थयोः	शोषणालमर्थयोः
१३	७	केशं	केशान्
१४	९	काण	काणः
१९	१४	१	१०.

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१६	५	कशति समूलकाशं	कषति समूलकाषं
"	८	बध्ननयोः	बन्धनयोः
"	९	कालोपदेशे	कलोपदशे
१६	१६	भयभीषयोः	भयमीषणयोः
१७	१६	काञ्ची	काञ्ची
"	१८	संकोच	संकोचः
१८	१	कुञ्ज	कुञ्च
"	७	१	१०
"	१८	कुडते	कुण्डते
१९	१०	स्मृतै	स्मृतौ
"	१४	लुभ	कुभ
२०	७	कृष्णाति	कुष्णांति
"	१२	वीस्मारेण	विस्मारणे
२१	११	कृञ्ज	कृञ्जते
२३	७	क्रन्दते	क्रन्दते
"	९	आप्रत्यये	अप्रत्यये
२४	१	कृञ्च	कृञ्च
"	"	कौटिल्याल्पी भावयोः	कौटिल्याल्पीभावयोः
"	"	कृञ्चेति	कृञ्चति
"	५	धा धं	द्धा द्धं
"	९	दुग्न्धाद्वत्योः	दुर्गन्धाद्वत्योः

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१३	क्र	कू
"	"	क्रुणाति क्रुणीते	कूनाति कूनीते
२५	२	ना नं	न्ना न्नं
"	,	परिवेदनं	परिदेवने
"	<	ता तं क्लन्ति	न्ता न्तं क्लान्तिः
"	७	कीव	क्लीव
"	१५	कृच्छ्रजीवेन	कृच्छ्रजीवने
"	"	क्षञ्जयाति	क्षञ्जयाति
२६	५	शाक्तौ	शक्तौ
"	१४	क्षि	क्षी
१७	१	माचने	मोचने
"	१७	जमः	जनः
२८	५	क्षुपधं धा धं	क्षुब्धः ष्वा ष्वं
२९	३	खच	खज
"	६	खट्टयवि	खट्टयति
३०	३	दशने	दंशने
"	"	खर्व	खर्व
"	"	खर्वति खर्वः	खर्वति खर्व
"	४	खर्व	खर्व
"	"	खर्वति	खर्वति
३२	१२	गर्व	गर्व

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	"	गर्ज्जति	गर्जति
"	१३	गर्ज्ज	गर्ज
"	"	गर्ज्जयति	गर्जयति
"	१४	गर्द्द	गर्द
"	"	गर्द्दति	गर्दति
"	१५	गर्द्दयति	गर्दयति
"	१५	गर्द्द	गर्द
"	१६	गर्धयति	गर्धयति
"	१७	गर्ब्ब	गर्ब
"	"	गर्ब्ब	गर्बति
"	१८	गर्व	गर्व
"	"	गर्वति	गर्वति
३३	१	गर्व	गर्व
"	१६	शङ्खे	अव्यक्तेशब्दे
३४	२	गुञ्जा	गुञ्जा
"	३	गुष्ठयति	गुष्ठयति
"	९	क्रीडे	क्रीडायां
"	१९	गुर्द्द	गुर्द
"	"	गुर्द्दति	गुर्दति
३५	१	गुर्द्द	गुर्द
"	"	निकेतने	पूर्वनिकेतने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	॥	गुर्दयति	गुर्दयति
॥	७	गूर्द	गूर्द
॥	७	गूर्दते (ङ) गूर्दयति	गूर्दति (वा) गूर्दयति
॥	१६	गतिचालयोः	गतिचलनयोः
१६	१	अन्वेच्छायां	अन्विच्छायां
१७	९	घग्घ	घव
॥	॥	घग्घति	घघति
॥	११	घटयति	घाटयति
॥	१३	घट्टः	घट्ट
॥	१७	घर्ब	घर्ब
॥	॥	घर्बति	घर्बति
१८	१३	शद्धे	अविशद्धे
॥	१८	घूर्गति क्षीवः	घूर्णते क्षीवः
१९	१२	व्यसने	व्ययने
॥	॥	चक्रयति	चक्रयति
४०	९	१	१०
॥	॥	चनति	चनति (वा) चान- यति
॥	१३	चपति (वा) चपयति	चम्पति (वा) चम्प- यति
४१	४	आसंशये	संशये

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१	चर्चते	चर्चति
"	"	चर्च	चर्च
"	"	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणभर्त्सनयोः
"	"	चर्चति	चर्चति
४१	७	चर्च	चर्च
"	"	चर्चयते चर्चा	चर्चयते चर्चा
"	८	चर्च	चर्च
"	"	चर्चति	चर्चति
"	९	चर्च	चर्च
"	९	चर्चति (वा) चर्चय- ति चर्चणं	चर्चति (वा) चर्चयति चर्चणं
४२	९	चययति	चययति (वा) चप- यति
"	१३	संवेदने	संचेतने
"	१७	हावकृतौ	भावकृतौ
४३	१	आमर्षणे	आमर्षणे
"	८	व्यसने	न्ययने
"	११	चाटयति	चोटयति
"	२०	हावकरणे	भावकरणे
४४	९	चुव	चुव
"	७	चुर	चूर

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	११	हावकरणे	भावकरणे
४६	६	हानौ	हासे
"	१०	उर्जने	ऊर्जने
"	१६	११	१०
४७	७	चर्च्च	चर्च
"	"	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
"	९	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणतर्जनयोः
४७	९	जर्ज	जर्ज
४७	"	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणमर्त्सनयोः
"	"	जर्जति	जर्जति
४८	३	जंसयति	जंसयति जंसति वा
४९	४	परितर्कणे	परितर्कणे
"	७	जूर्व	जूर्व
"	"	जूर्वति	जूर्वति
"	११	न्यक्कारे	न्यक्कारे
"	१४	जीर्ण	जीर्णः
"	१६	जीर्णः	जीर्णः
"	१७	जरति (वा) जरयति	जरति (वा) जारयति
९१	९	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणमर्त्सनयोः
"	११	शीर्यति	शीर्यति
"	१३	टक्कयति टक्कः विटक्कः	टक्कयति टक्कः विटक्कः

पृष्ठांक.	पञ्चयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
५२	१९	नखति	नङ्गति
५३	९	प्रव्हशद्वे	प्रव्हत्वे शद्वे च
"	१०	णर्द्ध	णर्द
"	१०	नर्द्धः	नर्द
५४	१	श्रुद्धौ	शुद्धौ
"	"	प्रणिक्ते	प्रणिक्ते
"	९	निस्ते	निस्ते
"	१२		स्थौल्यै
५५	६	तगति	तङ्गति
"	७	संकुची	संकोचने
५६	३	तपेत (वा) तापयते	तपति (वा) तापयति
"	११	तर्ज्जयते	तर्जयते
"	१३	तर्ब्ब	तर्ब
"	"	तर्ब्बति	तर्बति
५७	४	जिघांसायां	गतौ
"	५	जिघांसायां	गतौ
"	६	स्कन्दनेच	आस्कन्दने च
"	<	क्षमाय च	क्षमायां च
"	१६	वार्ता	वार्ता
५८	२	समाप्तो	कर्मसमाप्तौ
"	४	गतिवृध्रिवृत्तिहिंसापूर्तेषु	गतिवृद्धिहिंसापूर्तेषु

पृष्ठांक.	पञ्चयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	१९	स्तृतौ	आवरणे
१९	४	तर्दने	तर्दने
॥	७	तुपति	तुम्पति
॥	११	भोजने	भोजनेन
६०	१०	चरणे	त्वरणे
॥	१०	तूर्यते	तूर्यते
११	१	तर्पति (त) तर्पयति	तर्पति (त) तर्पयति
॥	१०		६
॥	१०	तृहति	तृंहति
६२	१०	ग्रेहनिषेधे द्युतौ	ग्रहनिषेधे द्युतौ
६३	१	त्वक्षति	त्वक्षति
॥	३	गतिकम्पयोः	गतिकम्पयोः
॥	१५	दध	दध
॥	॥	दध्नाति	दध्नाति
॥	१६	दण्डनीपातने	दण्डनिपातने
१४	१२	दश	दंश
॥	१३	दश	दंश
॥	१४		१
॥	१७	दंसयते गात्रं	दंसयते दंसति वा गात्रं
१५	६	आर्जवे	आर्जवे
॥	६	वर्द्धकि	वर्द्धकिः

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६६	१३	ब्रेतादेशे च	ब्रतादेशे च
६७	१२	सहज्ञाय	सयज्ञाय
"	१	उपतपे	उपतापे
"	१०	आदाने	आदरे
"	"	१-१	१-१०
६८	१	दृफ	दृंफ
"	"	दृफति	दृम्फति
६९	१	निद्राया	निद्रायां
"	४	द्राघ	द्राघ
"	"	द्राघते	द्राघते
"	१३	द्राहः	द्रोहः
"	१६	दृ	दृ
"	"	द्रायति. रात्रौ लोकः	द्रायति रात्रौ लोकः
७०	१	द्वेषति (वा) दृषते	द्वेषति (वा) द्वेषते
"	६	२	३
"	"	श्रुद्धौ च	शुद्धौ च
७१	१	५	१.
"	५	अधारे	आधारे
७१	१२	हिंसायां	हिंसायां
७२	१	कपेन	कम्पने
"	४	केसरपुष्पंजातं	केसरपुष्पजातं

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	११	कुंकुमे जनः	कुंकुमेन जनः
७३	४ ^३	धर्षयते	धर्षयते
॥	८	कपर्दिनं	कपर्दिनं
॥	१६	उत्क्षेमे	उत्क्षेपे
॥	१७	ध्वणति	ध्वणति
७४	४	धाड	धाड
॥	७	गतिस्थैर्ययोः	गतिस्थैर्ययोः
॥	१९	धनुर्धन्वी	धनुर्धन्वी
७६	३	याञ्चोपतापैश्वर्यासीःषु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु
॥	९	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु
॥	९	सचने	सेचने
॥	१३	न	न
॥	१४		न
॥	२०	पतं गोगगने	पतंगो गगने
८०	८	भाषट्कार्ये	भाषार्थे
॥	१४	क्लीशि	क्लेशे
८१	८	शिभुः	शिशुः
८२	८	श्रीप्स	मीप्सः
८३	७	पूषयति	पूषयति
८७	१	फक्कति	फक्कति
८८	२	वधते	बधते

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८८	१०	बर्ब	बर्ब
"	"	बर्बति	बर्बति
"	"	वधौ दीप्तौ च	वधे दीप्तौ च
"	१४	दानवधनिरूपेषु	दानवधनिरूपणेषु
९०	११	ब्रूस	ब्रूस
"	१७	भज्ज	भज्ज
९२	८	दधिभांड	धधिमाण्डं
"	१२	भयः	भयं
९५	११	मञ्ज	मञ्ज
"	"	मञ्जति	मञ्जति
९८	१६	मार्ज	मार्जे
"	"	मार्जयति मार्जारः	मार्जयति मार्जारः
९९	११	मेघार्हिसयोः	मघार्हिसयोः
१००	१७	आक्षेपप्रमर्दनयोः	आक्षेपप्रमर्दनयोः
१०१	१४	कंटेकन वार्टी	कष्टकैवार्टी
१०३	३	मृदनाति	मृदनाति
१०५	७	देवपूजासंगतिकरः णदा- नेषु	देवपूजासंगतिकरण- दानेषु
"	१६	यच्छति पापात्साधुः	यच्छति पापात्साधुः
१०६	३	याज्ञायां	याज्ञायां
"	१२	युच्छति	युच्छति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	२०.	युध्यत	युध्यते
१०७	१	यूषपते	यूषते
१०८	९	पाशंडी	पाषंडी
"	१४	राभश्य	राभस्ये
१०९	१२	रंहयति	रंहति
"	१६	राद्यतेयुध्वायवीरः	राद्यते युद्धाय वीरः
"	१४	संसिद्धौ	वृद्धौ
११०	९	रिक्तेरोगी	रिक्ते रोगी
११०	१०	कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसा-	कत्थनयुद्धनिन्दाहिं-
		दानेषु	सादानेषु
१११	७	द्युतौ	द्युतौ
"	१७	गत्यालस्यास्तेयखोटे	गत्यालस्यस्तेयोखोटे
११२	३	गाप्यः (यथा)	गोप्यः (अथवा)
"	५	रुणद्धि	रुणद्धि
"	१२	रोहति मृत्तिकाया घटः	रोहति मृत्तिकाया घटः
११३	५	प्लवे गतौ च	प्लवगतौ
"	१५		गतौ
"	१६		गतौ
"	१८	स्वादापने	आस्वादने
११४	८	भर्त्सने	भर्जने
"	९	भर्त्सने	भर्जने

पृष्ठांक.	पञ्च्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११६	१	श्लेषणविलासयोः	श्लेषणविलासयोः
"	"	लषति	लसति
"	<	भर्गे च	भर्जने
"	९	भर्गे च	भर्जने
"	९	लांजते	लांजति
"	१६	१	१०
११७	१३	लुट्	लुट्
"	"	लुट्यानि	लुट्यति
११८	२	लुट्	लुष्ट
"	२	लुटति (वा) लुट्याति	लुष्टति (वा) लुष्टयति
"	१०	लण्डयति	लुण्डयति
११९	१०	स्वलनेच	स्वलने च
"	११	पूर्वभावे स्वने च	पूर्वभावे स्वने च
१२२	<	इप्सायां	ईप्सायां
१२३	२	वद्ध	वर्ध
"	"	पूर्तिछेदोः	पूर्तिछेदनयोः
"	"	वद्धयति	वर्धयति
१२४	१४	मुखाप्तिगतिसवोसु	मुखाप्तिगतिसेवासु
१२५	३	वाञ्छति	वाञ्छति
"	११	विञ्छ	विच्छ
"	११	विञ्छति	विच्छायति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१३	विछ	विच्छ
"	१२	विछयति	विच्छयति
"	१३	विवेक्ति	वेवेक्ति
१२६	१२	विप्र	विल
"	१२	विवेप्रयति	वेलयति
१२७	७	वीरयति	वीरयते
१२८	६	वृणुते	वृणुते
१०८	८	संभक्तो	वरणे
१३०	२	व्यचति	विचति
"	१५	संस्कृतौ गतौ त्यागेच	मार्गसंस्कारगत्योः त्या गे च
"	"	ब्रि	ब्री
१३१	७	ब्रूनाति	ब्रूनाति
"	१४	शर्धति	शधति
१३२	४	संस्कारगत्योः	असंस्कारगत्योः
१३३	२	सबुः	शंबुः
१३५	५	शिखति	शिंखति
१३६	१७	शुश्वः	शुद्धः
१३७	५	शुभ	शुंभ
"	१०	सस्या नविनांबु वाहं	सस्यानि विनांबुवाहं
१३८	९	जलेन	जलेन

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	१५	श्मील	स्मील
॥	॥	श्मीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामद्यटाज्जलं	श्रुणोति
१४२	६	ष्वग	षग
॥	१०	सेचते	सचते
१४३	३	सघ्नोति	सघ्नोति
॥	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४५	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
॥	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
॥	९	क्षेपे	प्रेरणे
॥	१०	क्षणने	क्षरणे
॥	१३	पूक्ष्य (वा) शूप्य	पूक्ष्य (वा) पूष्य
॥	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
॥	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
॥	१०	ष्टल	ष्ठल
॥	१६	आर्द्रीभावे	आर्द्रीभावे
॥	१८	आर्द्रीभावं	आर्द्रीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः	स्तौति (वा) स्तुतेवः
॥	२	प्रसदे	प्रसादे
॥	७	ष्टेव	ष्ठेव

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	७	ष्टेवति	ष्टेवति
॥	१२	स्थसति	स्थस्यति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
॥	१९	धर्मण	धर्मेण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
॥	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
॥	१६	सर्ज	सर्ज
॥	॥	अर्जने	अर्जने
॥	॥	सर्जति	सर्जति
॥	१७	सर्व	सर्व
॥	॥	सर्वति	सर्वति
१९१	९	ऐश्वर्य दीप्तयोः	ऐश्वर्यदीप्तयोः
॥	७	सूक्ष	सूक्ष
॥	॥	सूक्षति	सूक्षेति
॥	१०	सूत्रणे	सूत्रेण
१९२	६	आपवे उद्धतै	आपवे उद्धतौ
॥	९	बाणैर्जुनः	बाणैर्जुनः
॥	११	स्कुन्दते शाखा मृगोवृ-	स्कुन्दते शाखामृगो वृ
॥		क्षादृक्षान्तरं	क्षादृक्षान्तरं
॥	१२	विदारे	विदारणे
॥	१३	चथच लयोः	संचलने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१५३	३	स्तृणुतेया ससा देहं	स्तृणुते या ससंदेहं
"	४	आछादने	आच्छादने
"	१४	संचयं—स्थाने	संचये स्थाने च
"	५	स्तृणानि	स्तृणाति
१५४	१०	स्फूर्ती	स्फूर्ती
"	११	स्फूर्ती	स्फूर्ती
१५५	२	विकशने	विकसने
"	३	विसरणे	विशरणे
"	४	विसरणे	विशरणे
"	८	विकशने	विकसने
"	१०	स्फुटयति	स्फुटति
"	१३	स्फूर्ज	स्फूर्ज
१५६	६	स्पन्द	स्यन्द
१५६	६	स्पन्दत	स्यन्दते
"	७		१
"	"	ध्वनने	शब्दे
"	८	स्यभ	स्यभ
१५७	५	स्त्रेकते	स्त्रेकते
"	११	पयोयतिः	पयो यतिः
"	१७	केशं कुंकुमेने नारी	केशान् कुंकुमेन नारी
१५८	१	आतके	आतंके

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	७	त्विष्वि	त्विषि
"	८	हठ	हठ
"	"	हठतिराजा	हठति राजा
"	१०		
१९९	३	चोर भयान्नरः	चोरभयान्नरः
"	५	हावकरणे	भावकरणे
"	१०	दानादनयोः	दानादानयोः
"	१२	सर्वप्रलयाग्निः	सर्व प्रलयाग्निः
"	११	वर्णच	वरेण च
१६०	३	हृश्यति	हृष्यति

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY,

Jangamwadi Math, VARANASI,

Acc. No. ~~2497~~ ... 2752

